CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

12.2

जिनमूर्ति-प्रशस्ति लेख

36772

कमल कुमार जैन

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर
छतरपुर (म० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या.................. प्राप्ति-संख्या.....................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम जिनमूर्ति प्रशस्ति लेख

लेखक कमल कुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust eGangotri

पुस्तकालय श्री गणेश वर्णी दि. जैन
संस्थान - सादर भेंट
फूलचन्द्र शास्त्री
६/९/८३

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनमूर्ति-प्रशस्ति लेख

प्रस्तावना

सिद्धान्ताचार्य श्रीमान् पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री

वाराणसी

संकलयिता एवं सम्पादक

कमलकुमार जैन, एम. ए. शास्त्री

द्रोणगिरि, छतरपुर (म० प्र०)

प्रकाशक

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर, छतरपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनमूर्ति प्रशस्ति लेख

© प्रकाशक

व्यवस्थापक
श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर (म० प्र०)

प्रथमावृत्ति : १००० प्रतियाँ
वी० नि० सं० २५०८ सन् १९८२

मूल्य : ४.५०

मुद्रक
तारा प्रिंटिंग वर्क्स, वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

छतरपुर नगर में जिनालय एवं उनमें स्थापित जिनविम्ब समवसरण पर्याप्त संख्या में हैं। इन जिनालयों में वि. सं. १०२५ से १९९६ तक की प्रतिष्ठित मूर्तियां हैं। मूर्तियों की पादपीठ पर अंकित लेख महत्त्वपूर्ण है। इन प्रशस्ति लेखों को श्री प० कमल कुमार जी जैन एम. ए. शास्त्री ने जो स्थानीय समाजके मंत्री हैं तथा इस प्रकार के लेखों के संकलन में रुचि रखते हैं, आज से लगभग १० वर्ष पूर्व संकलित किया था। ये मूर्ति प्रशस्ति लेख प्रकाशन की प्रतीक्षा में थे। एक बार मुझसे भी इन मूर्ति प्रशस्ति लेखों के प्रकाशन की बात इसलिए की गई, क्योंकि इसमें श्री दिगम्बर जैन वड़ा मन्दिर की मूर्ति प्रशस्तियाँ अधिक हैं तथा आर्थिक दृष्टि से भी मन्दिर की स्थिति अच्छी है। मन्दिर व्यवस्थापक के नाते इस कार्य को उपयोगी, महत्त्वपूर्ण, मन्दिर की गतिविधियों के अनुकूल एवं मन्दिर से ही सम्वन्धित कार्य समझकर तथा पंचायती मन्दिर होने के नाते इसके प्रकाशन का सर्व प्रथम उत्तरदायित्व होने के कारण मैंने प्रकाशन की बात सोची, क्योंकि मन्दिरों का जीर्णोद्धार निर्माण जितना महत्त्वपूर्ण कार्य है उससे जैन धर्म संस्कृति और इतिहास को सुरक्षित रखनेवाले साहित्य के प्रकाशन का कार्य कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। यही कारण है कि श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र महावीर जी प्रतिवर्ष जैन साहित्य इतिहास के प्रकाशन में लाखों रुपया व्यय करता है। जिसका अन्य तीर्थ क्षेत्रों को अनुकरण करना चाहिए। वास्तव में हमारा धर्म तो इस प्रकार के साहित्य सृजन से ही सुरक्षित रह सकेगा। इस उद्देश्य से मैंने इस प्रकाशन को श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर से प्रकाशित करने की स्वीकृति दी। प्रकाशन के विषय में जब श्री पं० कमलकुमार जी के साथ अन्य विद्वानों से विशेषत: जैन सिद्धान्त के मनीषी विद्वान् मानवीय पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्तशास्त्री वाराणसी से मेरी चर्चा हुई तो उन्होंने कहा "ये तो अपनी संस्कृति और इतिहास की धरोहर है, इससे धर्म का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष गौरव बढ़ेगा। इसके प्रकाशन का निर्णय आपका प्रशसनीय कार्य है। मेरे विचार से तो दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्रों, मन्दिरों के संरक्षण के लिए और वर्तमान समय में जब कि दिगम्बरों श्वेताम्बरों के तीर्थ क्षेत्रों और मन्दिरों को लेकर झगड़े उठ रहे हैं ऐसी परिस्थिति में तो अपने इन मूर्ति लेखों में प्रमाण के आधार पर ही अपने तीर्थ क्षेत्रों, मन्दिरों को सुरक्षित बचाया जा सकता है। इससे सभी दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्रों और मन्दिरों के मूर्ति लेख तो शीघ्र प्रकाशित किये ही जाने चाहिए। छतरपुर के जिनालयों के मूर्ति प्रशस्ति लेख प्रकाशित करने का आपका निर्णय बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसके लिए श्री पं० कमल कुमार जी तो बधाई के पात्र हैं ही, आप भी बधाई के पात्र इसलिए हैं कि इस उपयोगी कार्य को हर कोई व्यक्ति न तो समझ सकता है और न कर ही सकता हैं। मन्दिरों व अपने द्रव्य को ईंट, चूना, सीमेन्ट में लगाना तो सभी जानते हैं, परन्तु इसके साथ ही जैन साहित्य के प्रकाशन और संरक्षण में भी जिसकी रुचि हो वही वास्तविक रूप से सही मायने में मन्दिर का व्यवस्थापक हो सकता है।" पूज्य पं० जी की उक्त प्रेरणा से ही जिन मूर्ति प्रशस्ति लेख का प्रकाशन श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर से कर रहा हूँ।

छतरपुर के जिनालयों में हस्तलिखित शास्त्रों का भण्डार है। इस उपयोगी प्रकाशन के पश्चात् समाज का सहयोग मिलने पर सूची प्रकाशित करने का विचार है।

आशा है कि इस महत्वपूर्ण प्रकाशन से अन्य स्थानों की समाज को प्रेरणा मिलेगी और पं० जी की भावना के अनुकूल अपने अपने मन्दिरों के मूर्ति प्रशस्ति लेखों को प्रकाश में लाने का प्रयास होगा। मैं इस प्रकाशन के लिए श्री पं० कमलकुमार जी का तो आभारी हूँ ही, माननीय पं० जी का भी बहुत आभारी हूँ जिनकी प्रेरणा से इस उपयोगी कार्य को करने लायक मैं बन पाया। प्रकाशन में सहयोग के लिए अपने सहयोगी श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर व्यवस्था समिति के सभी सदस्यों का भी मैं आभारी हूँ।

ज्ञानचन्द्र जैन
व्यवस्थापक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहां क्या है

नाम	पृष्ठ
१. प्रस्तावना	१-४५
२. अपनी बात	१-६
३. जैन इतिहास संस्कृति के स्रोत मूर्ति लेख	७-१२
४. छतरपुर के जिनालय	१३-२५
५. प्रशस्ति लेख	२६-७८
i. श्री दिगम्बर जैन बड़ामन्दिर	२६-४७
ii. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी)	४८-५९
iii. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जोधाबाई)	५९-६२
iv. श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर	६३-६६
v. श्री दिगम्बर जैन पार्श्व नाथ मन्दिर	६६-६७
vi. श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र डेरापहाड़ी	६७-६७
vii. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर यंत्र	६८-७५
viii. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) यंत्र	७५-७६
ix. श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जोघावाई) यंत्र	७६-७७
x. श्री दिगवम्र जैन नया मन्दिर	७७-७८

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

इतिहास, पुरातत्त्व और साहित्य ये तीन किसी भी संस्कृति के चिरकालीन जीवन के जानने के और उसकी भविष्य की दृष्टि से सुरक्षा करने के उपायभूत साधन हैं। जिस संकृति के अनुयायी अतीत में इनके निर्माण के साथ उनकी सम्हाल करते रहे हैं और वर्तमान में भविष्य की दृष्टि से उनकी सार सम्हाल करते रहते हैं, वह संस्कृति गंगा नदी के प्रवाह के समान चिरकाल तक प्रवाहित होती रहती है। अन्यथा वह नामशेष हो जाती है।

ये तीनों उसके अभिन्न अंग हैं। इनमें से किसी एक के लुप्त होने पर शेष दो का महत्त्व अपने आप गिर जाता है। यहाँ अन्य संस्कृतियों की वात तो छोड़िये, जैन संस्कृति के समग्र जीवन पर दृष्टिपात करने पर आसानी से यह तथ्य समझा जा सकता है।

साधारणतः विश्व की समग्र संस्कृतियों को मूल में दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—एक परावलम्बनप्रधान संस्कृति और दूसरी व्यक्ति स्वातन्त्र्य की प्राण प्रतिष्ठापक स्वावलम्बनप्रधान संस्कृति। जैन संस्कृति, जो कि श्रवण संस्कृति का प्रमुख रूप से प्रतिनिधित्व करती है, इस दूसरी संस्कृति का ही मूल रूप है।

१. संस्कृति का प्रधान लक्ष्य—

पुराणों पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कर्मभूमि के प्रारम्भ काल में ही आदि ब्रह्मा तीर्थंकर ऋषभदेव ने जीवाजीवादि के भेदों को जान कर अपने काल में इसकी सर्वप्रथम प्राणप्रतिष्ठा की थी। इसके वाद और भी क्रम से अजितनाथ आदि २३ तीर्थंकर हुए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं जो आत्मसंशोधन का प्रधान साधन जानकर उसे प्रतिष्ठित करते आये हैं। जहाँ तक पुराणों से पता लगता है, अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर के काल तक तो वह अपने मूलरूप में ही प्रवाहित होती रही हैं। किन्तु उनके मुक्तिलाभ करने के बाद उसमें जो क्रमिक ह्रास होना प्रारम्भ हुआ उसका कहाँ अन्त होगा यह कहना बहुत ही कठिन है। फिर भी प्राचीन साहित्य पर दृष्टिपात करने से इतना तो निश्चित रूप से ही कहा जा सकता है कि सर्वप्रथम इसके अनुयायी ही इसकी विकृति के मुख्य साधन बने हैं।

यह तो हम पहले ही संकेत कर आये हैं कि जिसे हम जैन संस्कृति के नाम से जानते हैं वह अपने स्वावलम्बन प्रधान दर्शन के कारण व्यक्ति स्वातन्त्र्य की प्राणप्रतिष्ठा करनेवाली संस्कृति है। उसके अनुसार लोक में जड़ और चेतन जितने भी द्रव्य या पदार्थ हैं वे स्वयं ही आप कर्ता बनकर अपने पर्याय से पर्यायान्तररूप जीवन में प्रवाहित होते रहते हैं। यह उनका स्वाभाविक जीवन है। जो उनमें से जीवों और पुद्‌लों में विकृति दिखाई देती है उसका मूल कारण परमार्थ से उन पदार्थों की परावलम्बन प्रधान वृत्ति ही है। इसलिये जीवकी इस परावलम्बन प्रधान वृत्ति का उच्छेद करना ही इस संस्कृति का प्रधान लक्ष्य है। प्रत्येक काल में इसी अर्थ में इसकी सफलता मानी गई है।

यहाँ इतना विशेष ज्ञातव्य है कि लोक में जितने भी पदार्थ हैं उनमें से जीव और पुद्‌गल ये दो ही ऐसे दो जाति के पदार्थ हैं जो स्वयं अनादि से परावलम्बन प्रधान वृत्ति को प्राप्त हुए हैं और होते रहते हैं। उनमें से पुद्‌गलों का तो ऐसा स्वभाव ही है कि स्वयं ही अपने स्निग्ध-रूक्ष गुण की हीनाधिकता के कारण दूसरे पुद्‌गलों के साथ संयुक्त और वियुक्त होते रहते हैं। किन्तु जीवों की स्थिति इनसे सर्वथा भिन्न है। उनका त्रिकाली मूल स्वभाव न तो बन्धका ही कारण है और न मुक्ति का ही कारण है। जैसे पुद्‌गलों की हीनाधिकरूप स्निग्ध-रूक्ष गुण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाली स्वभाव पर्याय भी बन्धका कारण बनती है और उसी जाति की विभाव पर्याय भी उसका कारण बनती है। वह स्थिति जीवों की नहीं है। आगे प्रयोजनीय जानकर इसे ही विशेष रूप से स्पष्ट किया जाता है। यथा—

२. जीवों के भेद और उनके कारण—

जीव दो प्रकार के हैं—संसारी और मुक्त। जो अनादि से स्वयं परावलम्बनरूप वृत्ति को स्वीकार कर चारों गतियों में परिभ्रमण करते हुए संसार की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं वे संसारी जीव हैं और जो बुद्धि पूर्वक परावलम्बन प्रधान वृत्ति से क्रमशः छुटकारा पाकर अपने व्यक्ति स्वातन्त्र्य की प्राण प्रतिष्ठा करने में सफल हुए हैं वे मुक्त जीव हैं। इससे हम जानते हैं कि स्वयं स्वीकार की गई परावलम्बन-रूप वृत्ति के कारण इस जीव के अपने जीवन में अज्ञान और राग-द्वेष का संचार होता है तथा वही अपना विभाव परिणाम स्वरूपातिरिक्त परपदार्थों से आत्मा को युक्त करता है, परपदार्थ नहीं। इसलिये अपने में व्यक्ति स्वातन्त्र्य की प्राणप्रतिष्ठा करने के लिये जहाँ अज्ञान (मिथ्यात्त्व) और राग-द्वेष से मुक्त होना प्रधान कर्तव्य है वहाँ उनके उपजीवी (निमित्तभूत) परपदार्थों का क्रमशः हापन करते हुए शरीरा-तिरिक्त बुद्धि पूर्वक स्वीकार किये गये उन सबका त्याग करना भी आवश्यक है। तात्पर्य यह है कि जैसे वस्त्रादि पदार्थों का बुद्धि-पूर्वक त्याग किया जा सकता है वैसे बुद्धिपूर्वक शरीर का त्याग करना सम्भव नहीं है। अतः आत्मसाधना का इच्छुक पुरुष शरीर में ममत्वरूप मूर्च्छा का त्याग करता है और वस्त्र आदि पर पदार्थों को बुद्धि पूर्वक त्यागता है। जब तक इनका एकदेश त्याग होता है तब तक उसे गृहस्थ कहते हैं और जब वह उनसे पूरी तरह विरत होकर और स्वावलम्बन के प्रतीक स्वरूप श्रमण दीक्षा को स्वीकार कर आत्म-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधना को ही अपना प्रधान कर्त्तव्य बना लेता है तब उसे श्रमण नाम से अभिहित किया जाता है। यह जैन धर्म का मूल रूप है।

३. श्रमणों के दो भागों में विभक्त होने का कारण

किन्तु श्रमण भगवान् महावीर के मुक्ति लाभ करने के वाद श्रुतकेवली भद्रवाहु के काल में मगध में अकाल के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि यशलोभी श्रावकों की प्रेरणा पाकर श्रमण संघ निर्ग्रन्थ और सग्रन्थ के भेद से दो भागों में विभक्त हो गया। निर्ग्रन्थ संघ तो मूलरूप में यथावत् बना रहा, उसमें आचार की दृष्टि से यथा सम्भव किसी प्रकार की विकृति नहीं आई। किन्तु वर्तमान में श्वेताम्वर नाम से अभिहित किये जानेवाले दूसरे संघ में न केवल धीरे-धीरे पूर्णरूप से वस्त्र को ही स्वीकार कर लिया, अपि तु आहार आदि की सुविधा के लिये पात्र, ओघा और आत्मरक्षा की दृष्टि से लाठी रखना भी प्रारम्भ कर दिया।

४. आगमों के संकलन में भेद का कारण

कुछ काल तक तो यही स्थिति बनी रही। किन्तु उत्तर काल में आगम परिपाटी क्रम को ध्यान में रखकर गुरु पर्व क्रम से वाचना द्वारा नदी श्रोत के समान प्रवाहित होनेवाले गुरुपरम्परा से प्राप्त आगम को समर्थ आचार्यों द्वारा पुस्तकारूढ़ होता हुआ देखकर श्वेताम्वर संघ में एक प्रकार की खलवली मच गई। अतः उस आम्नाय के पोशक आचार्यों ने तीर्थंकर महावीर के लगभग एक हजार वर्ष वाद अंगों के पुराने नामों का लाभ उठाकर ११ अंगों का संकलन कर लिया और उनमें अपनी आम्नाय के अनुसार आचार-विचारों में परिवर्तन कर उन्हें पुराने नामों से लिपिवद्ध कर दिया।

५. पुरातत्त्व आदि का बुद्धि पूर्वक श्वेताम्बरीकरण

यह वस्तु स्थिति है। इसके वाद पुरातत्त्व, साहित्य और इतिहास में जो विकृति प्रारम्भ हुई वह इस काल में भी बराबर चालू है। हमने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्वेताम्बर आम्नाय के मन्दिरों में ऐसे जिनविम्बों को देखा है जिनके पाद पीठ पर मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय अंकित है पर उनका श्वेताम्बरीकरण करके उनमें कृत्रिम चक्षु जड़ दिये गये हैं। जो दिगम्बर आम्नायके ग्रन्थ है उन्हें श्वेताम्बर घोषित किया जा रहा है। उदाहरणार्थ कसायपाहुड को ही लें। यह मूलतः दिगम्बर परम्परा सम्मत ग्रन्थ है। उसमें लिपिवद्ध प्रमेय भी दिगम्बर परम्परा सम्मत है और उसकी भाषा भी सौरसेनी प्राकृत है। दूसरी जिस प्राकृत भाषा में श्वेताम्बर साहित्य की रचना हुई है वह न तो इसकी भाषा ही है और न ही उसकी प्रतिपादनशैली भी वह है। फिर भी बुद्धिपूर्वक ऐसे साहित्य का निर्माण कराया जा रहा है जिससे उत्तर काल में उसको विवाद का विषय वनाया जा सके।

६. दिगम्बर, तीर्थ, साहित्य व पुरातत्त्व

दिगम्बर परम्परा के समग्र तीर्थस्थान पूरे भारत वर्ष में फैले हुए हैं। उनका दिगम्बरपना कैसे नामशेष हो जाय इस दिशा में भी श्वेताम्बर समाज का योजनावद्ध प्रयत्न चालू है। उदाहरण स्वरूप अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ क्षेत्र और कुम्भोज बाहुवली क्षेत्र लिये जा सकते हैं। वहाँ के मन्दिरों के मूर्तिलेखों और शिलापट्ट लेखों पर दृष्टिपात करने से तथा प्राचीन दिगम्बर मूर्तियों को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये मूलतः दिगम्बर क्षेत्र हैं, फिर भी श्वेताम्बरों के द्वारा इन क्षेत्रों का श्वेताम्बरीकरण करने के लिये लाखों रुपया पानी की तरह वहाया जा रहा है। केवल इन दो क्षेत्रों पर ही यह अतिक्रमण चालू हो यह बात नहीं है। और भी सम्मेदाचल आदि ऐसे क्षेत्र हैं जो इस समाज द्वारा कोपभाजन वने हुए हैं।

इस प्रकार जो विकृति दिगम्बर साहित्य और पुरातत्त्व में की जा रही है, इतिहास का भी वही हाल है। बुद्धिपूर्वक ऐसा प्रयत्न चालू है कि दिगम्बर परम्परा का षट्खण्डागम, समयसार आदि जितना भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राचीन साहित्य है उसे भी श्वेताम्बर साहित्य की अपेक्षा अर्वाचीन सिद्ध किया जाय। कहीं भाषा का नाम लेकर और कहीं दूसरे तर्कों का आश्रय लेकर उस समाज के द्वारा यह प्रयत्न चालू है। इस प्रकार हम देखते हैं कि धीरे-धीरे मूल परम्परा का लोप करने के लिये उसका न केवल पुरातत्त्व वदला जा रहा है, अपि तु उसके साहित्य और इतिहास पर भी प्रहार चालू है। फिर भी हम सो रहे हैं। हमें पुराने की फिकर नहीं, नये निर्माण में लगे हुए हैं।

७. दिगम्बर परम्परा की वर्तमान स्थिति

यद्यपि दिगम्बर समाज धर्म के नाम पर विपुल द्रव्य व्यय करता है, पर उसका ठीक दिशा में उपयोग नहीं हो पा रहा है। जो मुनि या आचार्य हैं उन्हें अपनी प्रतिष्ठा की चिन्ता है। वे यत्र-तत्र नये मन्दिरों का तो निर्माण करा रहे हैं, उनमें अपनी कल्पित अनेक उपाधियों को लगा कर प्रशस्तिलेखों के साथ नये जिन विम्बों को भी स्थापित करा रहे हैं। पर अपने पुराने वैभव की उन्हें चिन्ता नहीं। और जो पण्डित जन हैं वे पराश्रित हैं, वर्तमान समाज का जीवन ही उनकी आवाज है, आगम उनका स्वयं का कोई जीवन नहीं। कतिपय ऐसे विद्वान् अवश्य हैं जिनकी आवाज सुनी जा सकती है, पर मुनि-आचार्यों के समान उनके सामने भी आत्मप्रतिष्ठा और स्वयं की कीर्ति मुख्य है। आत्मप्रतिष्ठा और आत्मकीर्ति ये ऐसे रोग हैं जो दिगम्बर परम्परा को घुन की तरह खोखला कर रहे हैं।

८. जातिवाद

जातिवाद एक बुराई है। हमारा धर्म और तत्त्वज्ञान मुनि और श्रावक किसी को भी इसके परवश होनेकी आज्ञा नहीं देता। यद्यपि देश-काल परिस्थितिवश सामाजिक दृष्टि से मध्य काल में हमने उसे स्वीकार भले ही कर लिया था, फिर भी हमारे पूर्वजों ने धर्मक्षेत्र पर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसकी अशुभ छाया नहीं पड़ने दी थी। पर आज ऐसा कोई धर्म-स्थान, धर्मगुरु और पण्डित नहीं है जिसे राहु की तरह इसने न ग्रस लिया हो।

९. दिशाहीन दृष्टि बदलना जरूरी है

यद्यपि दिगम्बर परम्परा की वर्तमान काल में ऐसी शोचनीय स्थिति वनी हुई अवश्य है। फिर भी हम निराशावादी नहीं हैं। संगठित प्रयत्न करने पर इस स्थिति से त्राण पायो जा सकता है। उसके लिये हमें वर्तमान समय में दिशाहीन दृष्टि को बदल कर उन साधनों का उपयोग करना होगा जिनका सहारा लेने से सत्य स्थिति के प्ररूपक प्रमाणों को विद्वज्जन और आम जनता तक पहुँचा कर कपोल कल्पित असत्य को परास्त किया जा सकता है। वस्तुतः देखा जाय तो हम इस मामले में अपने निकट के दूसरे समाज की अपेक्षा वहुत ही पीछे रह गये हैं। न तो हमारा समग्र इतिहास ही प्रकाश में आया है और न साहित्य ही प्रकाशमें आया है। कुछ प्रयत्न अवश्य हुआ है, पर वह नहीं के बराबर है। असंख्य जिन मन्दिरों में जो शिलालेख जिन प्रतिमालेख यन्त्रलेख और वहाँ स्थित ग्रन्थागारों में हस्तलिखित शास्त्रों के अन्त में पाये जाने वाले प्रशस्ति लेख और पुरातन साहित्य किसी प्रकार जो भी अभी शेष बच गये हैं, जिनके माध्यम से दिगम्बर परम्परा के मध्यकालीन समग्र इतिहास आदि पर प्रकाश पड़ना सम्भव है, उनका संकलन होकर उन्हें प्रकाशित करने कराने की बड़ी आवश्यकता है। इससे जैन समाज में प्रचलित जातियों के इतिहास पर तो प्रकाश पड़ेगा ही। साथ ही उस काल में होनेवाले आचार्यों, मुनियों, आर्यिकाओं, क्षुल्लकों, भट्टारकों, पण्डितों और गृहस्थों के इतिहास पर भी प्रकाश पड़ेगा। इतना ही नहीं, किन्तु इससे इस परम्परा के साहित्य और पुरातत्व की सार-संम्हाल कर उसे प्रकाश में लाने में भी बड़ी सहायता मिलेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अतएव इस समय इस परम्परा के साहित्य के सुरुचिपूर्ण प्रकाशन और उसके पुरातत्त्व की सुरक्षा और प्रकाशन की जितनी अधिक आवश्यकता है, समग्र भारतवर्ष के जिन मन्दिरों आदि में पाये जानेवाले मूर्तिलेखों, यन्त्रलेखों, शिलालेखों और प्रशस्तिलेखों के प्रकाशन की भी उतनी ही अधिक आवश्यकता है। इन लेखों के प्रकाशित न होने से और विवाद के समय इन्हें प्रमाण के रूप में उपस्थित न कर सकने से जो भयावह स्थिति उत्पन्न होती रहती है उसे पूरी तरह से शब्दों द्वारा व्यक्त करना एक प्रकार से कठिन ही है। इसके अतिरिक्त समाज को धन-जन की हानि का सामना अलग से करना पड़ता है।

१०. कतिपय उदाहरण

हमारे पास ऐसे कई प्रमाण हैं जिनसे यह आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि विवक्षित क्षेत्र, वहाँ का पुरातत्त्व और इतिहास पूरी तरह से हमारे पक्ष में होने पर भी हमें विरोधी समाज के आघातों का सामना करना पड़ रहा है। उदाहरणार्थ धुलेव ग्राम में स्थित श्री ऋषभदेव केशरिया जी (मेवाड़) के जिनमन्दिर को ही लिया जा सकता है। उस मन्दिर के खेला मण्डप और आजू-वाजू की दीवालों में चिने हुए जितने भी शिलालेख मिलते हैं उनसे यह आसानी से सिद्ध किया जा सकता है कि यह मूलत: दिगम्बर मन्दिर होते हुए भी हमें दूसरों के सामने घुटने टेकने के लिये लाचार होना पड़ा, साथ ही इसके लिये हमें जो धन-जन की हानि का सामना करना पड़ा वह अलग से।

यह दिगम्बर मन्दिर है इसकी पुष्टि में वहाँ जो शिलालेख पाये जाते हैं उनमें से कतिपय लेखों के दिगम्बदत्व के पोषक अंश को यहाँ दिया जा रहा है। यथा—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१) खेला मण्डप में मुख्य मन्दिर के द्वार के बाहर बाईं ओर ऊपर दीवाल में लगे हुए शिलालेख का कुछ अंश—

............संवत् १४३१ वर्षे वैशाख सुदी अक्षयतिथौ बुध दिना गुरावद्येहा वापी कूप प्र..........सरि सरोवरालंकृति खडवाला-पत्तने। राज श्री विजय राज्य पालयंति सति उदयराज सेल प............श्रीमज्जिनेन्द्राय धनतत्पर पंचूलीवागड प्रति............ काण्ठासंघे भट्टारक श्रीधर्मकीर्तिगुरोपदेशेना............।

(२) खेला मण्डप की उत्तर दिशा में दाईं ओर लगा हुआ शिलालेख—

............संवत् १५८२ वर्षे। वइसाख सुदी ५ वा० सोमे भट्टारिक श्रीजसकीर्तिराज............श्रीकाष्ठासंघे।

(३) वहाँ स्थित शिलानिर्मित विशालकाय हाथी पर अंकित लेख—

सं० १७११ वर्षे वैसाख सुदी ३ सोमे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री भट्टारक श्री............श्री गुरुपदेशात् उदयपुर.... ....घाराज्ञातीय........क्षेत्र।

सूचना—इन तीन लेखों के अतिरिक्त वहाँ देवकुलिकाओं के प्रतिमा लेखों, भित्ति में चिने हुए बहुत से लेखों और प्रतिमा लेखों को यहाँ नहीं दिया गया है।

इस प्रकार उक्त लेखों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि मूलतः इस मन्दिर का निर्माण दिगम्बर परम्परा के श्रावकों ने ही करा कर इसे तीर्थ क्षेत्र का रूप प्रदान किया था। वहाँ चिरकाल से स्थित भट्टारक पट्ट से भी इस तथ्य का समर्थन होता है। इतना सब कुछ होते हुए भी हम उसे पूरी तरह से नहीं बचा सके और विपरीत मान्यतावाली जैन समाज का उसे कोप भाजन बनने दिया गया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह एक क्षेत्र का उदाहरण है। दूसरा क्षेत्र कुम्भोज वाहुवली (कोल्हापुर) है जिस पर इस समाज की कुदृष्टि की छाया पड़ना प्रारम्भ हो गया है। पर उस क्षेत्र की जनता और वाहुवली विद्यापीठ के प्रबन्धक सावधान होने से अभी तो वह बचा हुआ है। यद्यपि उस क्षेत्र पर दूसरी समाज ने पैर तो जमा लिये हैं। उस समाज के द्वारा कुछ दूसरों से मिलकर ऐसा भी प्रयत्न चल रहा है जिससे सम्भवतः भविष्य में वाहुवली विद्यापीठ के कार्यकर्ताओं और समाज को इस क्षेत्र की रक्षा के लिये अनेक कठिनाइयों से गुजरना पड़े।

कहते हैं कि कई शताब्दियों के पूर्व यहाँ एक वाहुवली नामक दिगम्बर मुद्राधारी मुनि हो गये हैं। उनके निमित्त से ही इस क्षेत्र को मूर्तरूप मिला था। क्षेत्र पर वाहुवली की विशालकाय एक नग्न खण्डित मूर्ति भी पाई जाती है। सम्भव है कि उनके निमित्त से ही इसका निर्माण हुआ हो और इसलिये भी इस क्षेत्र का नाम वाहुवली पड़ा हो। यहाँ कई पुराने दिगम्बर मन्दिर हैं। उनके सामने पुराना एक मानस्तम्भ भी है। एक विशालकाय वावड़ी है। पूरा क्षेत्र एक पहाड़ी पर अवस्थित है। (पहाड़ी के परिसर में जो दिगम्बर धर्मायतनों का नया निर्माण हुआ है उसकी यहाँ हम चर्चा नहीं कर रहे हैं।) क्षेत्र पर स्थित दिगम्बर जिनालयों का दर्शन करने के लिये कोल्हापुर निवासी राज्यमान्य स्व० श्री पं० कल्लप्पा भरमप्पा निटवे के द्वारा सीढ़ियों से क्षेत्र को अलंकृत कर दिया गया है और एक धर्मशाला भी बनवा दी गई है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि यह पूरा क्षेत्र दिगम्बर आम्नायका है। जो वहाँ जिनमूर्तियों और मानस्तम्भ पर अंकित लेख हैं वे इसके साक्षी हैं। उनमें से हम यहाँ ३-४ लेखों का उपयोगी अंश दे रहे हैं—

(१) चन्द्रप्रभजिन स० पा० पद्मासन १६ अंगुल।

संवत् १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ मूलसंघे भट्टारकजी श्री······· ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) पार्श्वनाथ जिन, स० पा० पद्मासन १४ अं० ।

संवत् १५४८ वर्षे वैसाख सुदी ३ श्री मूलसंघ भट्टारक जी श्री जिनचन्द''''''''''''जीवराज पापड़ीवाल''''पणमति सहर मुडासा ।

(३) एक मन्दिर में मटमैले पाषाण से निर्मित एक ऐसा शिलापट्ट भी है जिसके बीच में एक नग्न दिगम्बर खड्गासन मुद्रा में निर्मित जिनमूर्ति है। आजू-बाजू १३ जिन मूर्तियाँ और हैं। एक मूर्ति नष्ट हो गई है। अतः वह स्थान खाली है। दोनों ओर बैठे हुए यक्ष-यक्षिणी हैं। लेख नहीं।

(४) भ० महावीर खड्गासन नग्नमूर्ति यक्ष-यक्षिणी सहित कृ० पा० १९ अं०। लेख नहीं।

(५) मानस्तम्भ पाषाणनिर्मित। इसकी तीसरी कटनी पर जो लेख है उसका सं० '१८'१० कुशेबावाजी' इतना अंश पढ़ा जा सका।

इन दो क्षेत्रों के अतिरिक्त अकोला मण्डलान्तर्गत वासिम से कुछ दूरी पर एक क्षेत्र और है जो ब्रटिश शासन काल से श्वेताम्बर समाज का कोपभाजन बना हुआ है। नाम अन्तरीक्ष पार्श्वनाथ है। क्षेत्र के इस नाम से और वहाँ स्थित तीर्थंकर पार्श्वनाथ के जिन बिम्ब को देखने से ही यह स्पष्ट हो जाता है कि यह दिगम्बर तीर्थ है। केवली होने पर जिनदेव अन्तरीक्ष विहार करते हैं तथा समवसरण में भी वे अन्तरीक्ष ही रहते हैं यह दिगम्बर आम्नाय सम्मत मान्यता है, जब कि श्वेताम्बर आम्नाय इस तथ्य को स्वीकार नहीं करता। फिर भी श्वेताम्बर समाज इसे अपने अधीन करके इसका श्वेताम्बरीकरण करना चाहता है।

मूल मूर्ति तो दिगम्बर है ही, इसके सिवाय वहाँ अन्य जितना भी पुरातत्त्व अवस्थित है वह भी पूरो तरह से दिगम्बर आम्नाय के अनुरूप है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुख्य मन्दिर गाँव के अन्दर है। इसके अतिरिक्त गाँव के बाहर जो पवली नामका जिनमन्दिर निर्मित है। वहाँ का पुरातत्त्व भी पूरी तरह से दिगम्बर आम्नाय के अनुरूप है। इन दोनो जिनमन्दिरों में ऐसा एक भी प्रमाण उपलब्ध नहीं होता जिससे यह कहा जाय कि कभी इस पर अंशत: भी श्वेताम्बर समाज का अधिकार रहा है।

यह इस क्षेत्रों का दिगम्बर परम्परा का पोषक थोड़ा सा पुराना पुरातत्त्व है। इससे मालूम पड़ता है कि इस प्रदेश के निवासियों ने उक्त महाराज का निमित्त पाकर शताब्दियों पूर्व इस दिगम्बर आम्नायके क्षेत्र का निर्माण कर लिया था। यद्यपि श्वेताम्बर इस प्रदेश के मूल निवासी नहीं हैं। व्यापार आदि के निमित्त से सौ-पचास वर्ष पूर्व इस क्षेत्र के सन्निकट सांगली आदि व्यापारिक नगरों में आ वसे हैं। उनकी ओर से किये गये अनुरोध पर इस प्रदेश के मूल निवासी दिगम्बर जैनों ने जैन धर्म को माननेवाले समझ कर क्षेत्र की पहाड़ी पर एक मन्दिर वना लेने की स्वीकृति दी थी। इसी के फल स्वरूप पहाड़ी पर उस समाज का एक नया मन्दिर अवश्य है। पर आज वह समाज पूरे क्षेत्र को ही अपने आधीन करके अपना वना लेना चाहता है।

यह प्रदेश उस समाज का मूल निवासस्थान भी नहीं। व्यापारादि के निमित्त से उस समाज के कुछ घर अकोला आदि व्यापरिक स्थानों में आकर वसे जिससे वे धीरे धीरे इस क्षेत्र के दर्शन आदि को आने लगे। अत: जिस चतुराई से काम लेकर उस समाज ने इस क्षेत्र को अपने अधीन करने का उपक्रम किया वह किसी से छिपा नहीं है।

अव तो एक चन्द्रशेखर नाम के श्वेताम्बर मुनि ने ही अपने पूरे परिवार के साथ यहाँ डेरा डाल रखा है। तथा क्षेत्र को पूरी तरह से अपने कब्जे में करने के लिये जो भी उचित अनुचित उपाय वनते हैं उन सवका सहारा लेकर वे इस का पूरीतरह से श्वेताम्बरीकरण कर देना चाहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११. स्वागत योग्य प्रयत्न

इस प्रकार हम देखते हैं कि हमारा पुरातत्त्व, इतिहास और साहित्य पूरी तरह से प्रकाशित न होने के कारण और उसका व्यापक प्रचार न होने के कारण हमें पद-पद पर कठिनाइयों का सामना तो करना ही पड़ रहा है। साथ ही छल-बल के द्वारा उसके बदल दिये जाने के कारण या नामशेष कर दिये जाने के कारण जिस शोचनीय स्थिति का दिगम्बर परम्परा को सामना करना पड़ेगा, लगता है कि वह पूरे दिगम्बर परम्परा को ही ले डूबे गी। यह हमारी कोरी कल्पना नहीं है, किन्तु हमारी असावधानी के फलस्वरूप जो स्थिति उत्पन्न होना सम्भव है उसका थोड़े में यह आभास मात्र है। इस स्थिति से उबरने के लिये इस दिशा में थोड़े बहुत जहाँ जो प्रयत्न हो रहे हैं वे स्वागत योग्य हैं।

१२. एक लघु प्रयत्न

ऐसा ही एक लघु प्रयत्न द्रोणगिरि निवासी श्री पण्डित कमल कुमार जी का है। ये हमारे सहाध्यायी उदारचेता, सरलहृदय और त्यागमय जीवन के अभ्यासी श्री पं० गोरेलाल जी शास्त्री के सुपुत्र हैं। पं० जी स्वयं द्रोणगिरि के निवासी होने से इन्होंने उसी ग्राम को ही अपना कार्य क्षेत्र बना लिया है। वहाँ एक संस्कृत पाठशाला है जो सम्भवतः इन्हीं के सत्प्रयत्नों का सुफल है। प्रधान अध्यापक के रूप में प्रारम्भ से ही ये उक्त पाठशाला में सेवारत रहे हैं और अब वहाँ एक ब्रह्मचर्याश्रम की स्थापना हो जाने से गृहवास का त्याग कर ये उसमें रह कर त्यागमय जीवन व्यतीत करते हुए अपनी मनुष्य पर्याय को सफल बना रहे हैं।

श्री पं० कमलकुमार जी की शिक्षा-दीक्षा इन्हीं की देख-रेख में सम्पन्न होने से स्वभाव से ही ये भी अपने पूज्य पिता के समान धर्म

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और समाज के प्रति पूरे समर्पित भाव से उनकी सेवा करते रहते हैं। यह वात इसी से समझी जा सकती है कि ये छतरपुर स्थित हायर सेकेंडरी विद्यालय में अध्यापक होते हुए भी अध्यापन के अतिरिक्त जो भी समय निकाल पाते हैं उसका सदुपयोग धर्म और समाज के उपयोगी विविध कार्यों को प्रगति देने में करते रहते हैं। ये अच्छे लेखक भी हैं। वस्तुतः पू० क्षु० चिदानन्द स्मृति ग्रन्थ का पूरा संकलन, सम्पादन और प्रकाशन आदि समग्र कार्य इन्होंने ही किया है। वैसे इनकी सहज रुचि का विपय पुरातत्त्व है। अभी तक ये (१) जिन मन्दिर छतरपुर, (२) निर्वाण क्षेत्र द्रोणगिरि और (३) निर्वाण क्षेत्र रेशंदीगिरि के मूर्ति लेखों और प्रशस्तिलेखों का संकलन कर चुके हैं। आस-पास के गाँवों और सन्निकट के ऐतिहासिक स्थलों पर जो भी पुरातत्त्व उपलब्ध होता है उसे लिपिवद्ध करने की दिशा में भी इनका प्रयत्न चालू है। ये जो भी इस तरह का कार्य करते हैं उसे निस्पृह भाव से ही सम्पन्न करते हैं। तत्काल इनके द्वारा संकलित और सम्पादित छतरपुर स्थित जिन मन्दिरों के मूर्ति लेख और यन्त्र लेख हमारे सामने हैं। इनका प्रकाशन वड़ा मन्दिर छतरपुर की प्रवन्ध समिति की ओर से हो रहा है। हमें प्रसन्नता है कि इस मन्दिर की प्रवन्ध समिति और उसके व्यवस्थापक श्री सिंघई ज्ञानचन्द जी महाशय का ऐसे उपयोगी कार्य की ओर ध्यान गया है। अन्य नगरों और क्षेत्रों की समाज इसका अनुकरण करेगी ऐसी आशा है।

१३. मूर्ति व यन्त्र लेख

छतरपुर एक पुराना नगर है। कहते हैं कि इसे वुंदेलखण्ड के गौरवस्वरूप, वीर योद्धा और महान् राजनीतिज्ञ महाराजा छत्रसाल ने वसाया था। इसलिये इसे छत्रपुर (ले० १०१) भी कहते हैं। छतरपुर यह नाम (ले० ८९) इसी का अपभ्रंश रूप है। इन मूर्तिलेखों में वि० सं० १२७२ का एक लेख ऐसा भी पाया जाता है जिसमें 'छत्रेवासी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पहल' (लेखांक ५) अंकित है। खजुराहा के भगवान् पार्श्वनाथ प्रभृति जैन मन्दिरों का निर्माण पहल वंश के द्वारा ही हुआ है। किन्तु इन दोनों स्थानों के मूर्तिलेखों के संवतों में बड़ा अन्तर है। हो सकता है कि इस वंश में ऐसे पुण्य पुरुष होते रहे हैं जो अपनी गाढ़ी कमाई का सदुपयोग उस काल के अनुसार प्राय: धर्मायतनों आदि के निर्माण और उनका संरक्षण करने में ही करते रहते थे।

यहाँ के नगर और डेरा पहाड़ी के जिन मन्दिरों की कुल संख्या लगभग ८-९ है। तथा इनमें विराजमान कुल जिनविम्वों की संख्या ३२० और यन्त्रों की संख्या अज्ञान है।

'चौधरी' नाम से प्रसिद्ध यहाँ के एक जिन मन्दिर में एक जिन विम्व ऐसा भी विराजमान है जिस पर मात्र वि० सं० १०२५ अंकित है। यह जिनविम्ब धातु निर्मित है। इसकी ऊँचाई तीन अंगुल से कुछ अधिक है और चौड़ाई सवा अंगुल है।

महाराजा छत्रसाल ने जिस भूमि पर छत्रपुर नगर को बसाया था, यह सम्भव है कि वहाँ उसके पहले कोई गाँव अवश्य रहा होगा। सम्भव है कि इस जिनविम्ब का सम्बन्ध उसी गाँव से रहा हो तथा यह भी सम्भव है कि यह जिनविम्व अन्यत्र से लाकर यहाँ विराजमान किया गया हो। जो कुछ भी हो, इतना सुनिश्चित है कि इस मूर्ति-लेख के साथ समग्र मूर्तिलेखों पर दृष्टिपात करने से इतना सुनिश्चित हो जाता है कि इस नगर और उसके आस-पास के क्षेत्र में प्राचीन काल से ही जैन धर्म के उपासक समाज का अस्तित्व बना चला आ रहा है। इसलिये इस नगर के जीवन काल को ध्यान में रखकर मूर्ति लेखों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यहाँ के जिन मन्दिरों में जो जिन विम्व विराजमान हैं उनमें से १७ वीं शताब्दी से पूर्व तकके कुछ जिनविम्व सम्भवत: आस-पास के क्षेत्र से लाकर सुरक्षा और पूजा-उपासना की दृष्टि से यहाँ के जिन मन्दिरों में विराजमान किये गये हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उदाहरणार्थं डेरा पहाड़ी के एक जिन मन्दिर में एक जिनविम्व वि० सं० ११४९ का और दूसरा जिनविम्व विना सम्वत् का ये दो जिन-विम्व विराजमान हैं। वे दोनों जिनबिम्ब कहते हैं कि उर्द मऊ से लाकर यहाँ विराजमान किये गये हैं। तथा चौधरी नाम से प्रसिद्ध जिन मन्दिर में वि० सं० १२०२ का जो जिनविम्ब विराजमान है वह जगत्सागर स्थान से लाकर यहाँ विराजमान किया गया है। ये दोनों ऐतिहासिक स्थान हैं। जगत्सागर में तो दूसरे समाज के भी ५-६ मन्दिर बने हुए हैं। इससे पता लगता है कि यह स्थान पूर्व काल में सभी धर्मों के अनु-यायियों का संगम स्थान बना हुआ था। यहाँ पाये जानेवाले जिन-बिम्वों पर अंकित मूर्तिलेख, आम्नाय, त्यागी-मुनि, भट्टारक सम्प्रदाय और इस क्षेत्र में पाई जानेवाली जातियों की दृष्टि से भी अध्ययन करने योग्य हैं। यहाँ सर्व प्रथम आम्नाय की दृष्टि से विचार किया जाता है।

१४. आम्नाय

दिगम्बर परम्परा में दो आम्नाय मुख्य हैं—एक मूलसंघ और दूसरा काष्ठासंघ। शेष जितने भी भेद-प्रभेद पाये जाते हैं वे सब इन दो संघों में गर्भित हो जाते हैं। उनमें से मूलसंघ यह अपने नाम के अनुसार पुराना है। इससे जिन शासन के मूल आत्मा को हृदयंगम करने में बड़ी सहायता मिलती है। काष्ठासंघ, मध्यकाल में जब लौकिक-आचार से प्रभावित दिगम्बर साधुओं ने समाज में अपना स्थान बना लिया था, उस समय की देन है। यहाँ के जिन मन्दिरों में जितने जिनबिम्व विराजमान हैं उनको तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है—

(१) वे जिनविम्व जिन पर किसी भी आम्नाय का उल्लेख नहीं पाया जाता।

(२) वे जिनविम्ब जिन पर मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नायकाउल्लेख है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) तथा वे जिनविम्ब और चरणचिन्ह जिन पर काष्ठासंघ आम्नाय का उल्लेख है।

प्राय: ये तीन प्रकार के सभी लेख इन तीन भागों में विभक्त हैं। उनमें से जिन दो या तीन लेखों में काष्ठासंघ आम्नाय अंकित है उनमें से वि० सं० १५४२ के जिस लेख में स्पष्ट रूप से गोपाचल (ग्वालियर दुर्ग) अंकित है उसकी प्रतिष्ठा गगंगोत्री सा० महराजा नामक किसी अग्रवाल गृहस्थ ने कराई थी। प्रस्तुत पुस्तक में उसका क्रमांक २१ है।

दूसरा लेख वि० सं० १४७३ का है। सम्भवत: यह लेख तीर्थंकर महावीर के जिनविम्ब के वगल में स्थित गुणकीर्तिदेव की पुण्यस्मृति में उनके शिष्य भ० यश:कीर्तिदेव द्वारा स्थापित उनके चरणचिन्ह पट्ट पर अंकित किया गया है। इस जिनमूर्ति और चरणचिन्ह पट्ट की स्थापना भी गोपाचल दुर्ग में हुई है और वहीं से किसी सद्‌गृहस्थ द्वारा यहाँ लाया गया है। इसका क्रमांक है।

इतने विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि इस सम्भाग में काष्ठासंघ आम्नाय का प्रलचन तो कभी रहा ही नहीं। अत: यहाँ इस वात का विचार करना है कि इस सम्भाग में प्रारम्भ से किस आम्नाय का प्रचलन रहा आया है। इस वात का निर्णय करने के लिये हमें इस सम्भाग में पहले और उत्तर काल में किस आम्नाय को प्रश्रय दिया गया है इस पर दृष्टिपात करना होगा। इसके लिये प्रस्तुत पुस्तक में संगृहीत समस्त प्रतिमा लेखों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि इस सम्भाग में प्रारम्भ से ही एकमात्र मूलसंघ आम्नाय का ही प्रचलन रहा है। प्रमाणस्वरूप इस पुस्तक में जितने भी प्रतिमा लेख आदि संगृहित हैं उनमें से जिन प्रतिमालेखों में आम्नाय का उल्लेख है उन सब पर उक्त दो या तीन प्रतिमालेखों को छोड़कर वहुतों पर मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय अंकित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अब सवाल यह है कि ऐसे जितने भी प्रतिमा लेख हैं उनमें से सबसे प्रथम लेख पर मात्र वि० सं० १२७२ ही अंकित है। उससे पहले भी यदि इस सम्भाग में मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय प्रचलित रहा है तो उसका अंकन वि० सं० १२७२ से पहले के प्रतिमा लेखों में क्यों नहीं किया जाता रहा है? सवाल मार्मिक है, किन्तु इसका समाधान यह है कि इस काल में मूर्तिलेखों में आम्नाय के अंकन की परम्परा दो कारणों से प्रचलित हुई जान पड़ती है। प्रथम श्वेताम्बर आम्नाय का वारण करने के अभिप्राय से और दूसरे दिगम्बर परम्परा में ही शिथिलाचार के पोषक काष्ठासंघ की स्थापना हो जाने पर उसका वारण करने के अभिप्राय से। ये दो कारण मुख्य हैं जिनके कारण उत्तर काल में जिनमूर्ति की प्रतिष्ठा के समय किस आम्नाय में यह मूर्ति प्रतिष्ठित हुई है यह अंकन करना आवश्यक समझा जाने लगा।

जिस सम्भाग में इन आम्नायों के कारण श्रावकों में द्विविधा प्रतीत हुई उस सम्भाग में तो आम्नाय का अंकन इससे भी पहले किया जाने लगा। किन्तु जिस सम्भाग में ऐसी द्विविधा की स्थिति बाद में दृष्टिगोचर हुई वहाँ इस आम्नाय के अंकन का प्रचलन बाद में प्रारम्भ हुआ। यही स्थिति इस सम्भाग की भी रही है। यहाँ न तो कभी श्वेताम्बर आम्नाय का प्रचलन रहा है और न काष्ठासंघ का ही। यही कारण है कि इस सम्भाग के जिनमन्दिरों में काष्ठासंघ आम्नाय में प्रतिष्ठित हुई जो कतिपय जिनमूर्तियाँ पाई भी जाती हैं वे व्यापारादि के निमित्त से अन्य प्रदेशों से आये हुए श्रावकों द्वारा यहाँ के जिन मन्दिरों में विराजमान कराई गई ही पायी जाती हैं। मूलत: इस सम्भाग के श्रावकों द्वारा उनकी प्रतिष्ठा नहीं हुई हैं यह पूर्व में उल्लिखित दो लेखों से ही सुनिश्चित है और न ही यहाँ के सम्भाग के किसी प्रतिष्ठा समारोह में उनकी प्रतिष्ठा ही हुई है। इस सम्भाग में बसनेवाले श्रावकों में सदा से ही मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय की प्रवृत्ति चली आ रही है इससे यह स्पष्ट हो जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. मूलसंघ

छतरपुर के इस मूर्तिलेख संग्रह में अधिकतर लेख मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय-सम्बन्धी हैं। उनमें से वहुतों पर तो आम्नाय का स्पष्ट उल्लेख है और कुछ पर नहीं है। उसके दो कारण रहे हैं—प्रथम तो जो जिन-विम्ब छोटे रहे हैं उन पर प्रायः मात्र संवत् और तिथि का उल्लेख करना ही सम्भव हो सका, इसलिये तो उन मूर्तियों पर आम्नाय आदि का उल्लेख करना सम्भव न हो सका। दूसरे प्रतिष्ठाचार्यों के दुर्लक्ष्य करने के कारण भी वहुत सी मूर्तियों पर आम्नाय आदि का उल्लेख न हो सका। इतना अवश्य है कि जो जिनविम्ब ११वीं १२ वीं शताब्दि में प्रतिष्ठित कराये गये हैं उन पर आम्नाय आदि का उल्लेख न होने का कारण कभी भी इस सम्भाग के श्रावकों में काष्ठासंघ परिपाटी का प्रचलित न होना ही मुख्य है।

श्वेताम्वर परम्परा का उद्गम श्रुतकेवली भद्रवाहु के काल में हुआ था, इसलिये इसके पूर्व जो आम्नाय प्रचलित थी उसे ही उत्तर काल में 'मूलसंघ' इस नाम से अभिहित किया जाने लगा। मूर्तिलेख आदि में इस नाम का उल्लेख कब से होने लगा यह तत्काल निश्चय पूर्वक तो नहीं कहा जा सकता। परन्तु हमारे पास जो मूर्तिलेख आदि का संग्रह है उसमें एक ऐसा भी मूर्ति-लेख है जिससे यह निश्चय पूर्वक कहा जा सकता है कि ७ वीं शताब्दि के पूर्व ही मूर्तिलेखों आदि में 'मूलसंघ' पद का उल्लेख किया जाने लगा था। पूरा लेख इस प्रकार है—

वि० 'संवत् ६१० वर्षे माघसुदी ११ मूलसंघे पौरपाटान्वये पाटन (ल) पुर संघही........।' (साढौरा (गुना) मध्यप्रदेश)

(१) प्रस्तुत मूर्तिलेख संग्रह में 'मूलसंघ के' वाद अनियम से तीन विशेषण लगे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। किसी में 'वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंदकुंदाचार्यान्वये' ये तीनों विशेषण लगे हुए हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) प्रस्तुत लेख संग्रह में वि० सं० १२७२ के सर्वप्रथम (लेख ४ से ६) तक के ३ लेख ऐसे हैं जिनमें मात्र सरस्वतीगच्छ का उल्लेख है। इससे पता लगता है कि १४ वीं शताब्दि के पूर्व भी[1] मूलसंघ के विशेषण के रूप में सरस्वतीगच्छ का उल्लेख होने लगा था।

हमारे लेख संग्रह में चन्द्रप्रभ छोटा मन्दिर सिरोंज का एक ऐसा भी प्रतिमालेख है जिसमें मूलसंघ के विशेषणरूप से 'सरस्वतीगच्छ बलात्कार-गण' इन दोनों विशेषणों का उल्लेख दृष्टिगोचर होता है। पूरा लेख इस प्रकार है—

'वि० संवत् १००७ मासोत्तमसासे फाल्गुणमासे शुक्लपक्षे तिथौ चतुर्थ्यां बुधवासरे श्रीमूलसंघ सरस्वतीगच्छ बलात्कारगण ठाकुर-सीदास प्रतिष्ठितं।'

बूढी चंदेरी (गुना) स्थित १२ शताब्दि का एक ऐसा लेख भी हमारे संग्रह में है जिसमें मात्र कुंदकुंदान्वय नंदिसंघ का उल्लेख दृष्टिगोचर होता है। लेख का वह अंश इस प्रकार है—

'श्रीकुंदकुंदान्वय नंदिसंघे जातो मुनिः श्रीशुभकीर्तिसूरिः।'

ये कतिपय उल्लेख हैं जिनके आधार से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ में मूलसंघ के विशेषण के रूप में उक्त विशेषणों का उल्लेख करना ऐच्छिक रहा है। जैसे-जैसे नई परिस्थितियाँ उत्पन्न होती गईं वैसे-वैसे इन विशेषणों का प्रयोग विशेष रूप से बढ़ता गया।

---

१. भट्टारक सम्प्रदाय पृ० ४४ में प्रो० वी० पी० जोहरापुरकर ने यह संकेत किया है कि 'चौदहवीं सदी से मूलसंघ के साथ सरस्वतीगच्छ और उसके पर्यायवाची भारती, वागेश्वरी, शारदा आदि नाम जुड़े हैं' वह उक्त प्रतिमा लेख को दृष्टिपथ में लेने से ठीक प्रतीत नहीं होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नीतिसार के उल्लेख से भी ज्ञात होता है कि सब संघों का आदि संघ मूलसंघ ही है।[1] बाद में एक अंगधारी अर्हद्बलिने देश, काल, परिस्थिति का विचार कर मूलसंघ के अन्तर्गत सिंह, नन्दि, सेन और देवसंघ की स्थापना की।

१६. काष्ठासंघ

नीतिसार के उल्लेख से यह भी ज्ञात होता है कि उत्तरकाल में मूलसंघ से ही काष्ठासंघ निकला है। अन्यत्र इस संघ की उत्पत्ति लोहाचार्य के निमित्त से कही गई है। किन्तु मूलसंघ नन्दि आम्नाय की प्राकृत पट्टावलि में एक अंगधारी मुनिवरों में लोहाचार्य का नाम नहीं है। त्रिलोक प्रज्ञप्ति और धवला में उल्लिखित पट्टावलियों के साथ काष्ठासंघ की पट्टावलियोंमें एक अंगधारी मुनियों में लोहार्य का नाम अवश्य है। दर्शनसार के अनुसार तो आचार्य विनयसेन के शिष्य कुमारसेन ने वि० सं० ७५३ में इस संघ की स्थापना की थी। यह संघ चार भागों में बटा हुआ है—माथुरगच्छ, वागडगच्छ, लाटवागडगच्छ तथा नन्दोतटगच्छ।[2]

१७. शुद्धाम्नाय

प्रस्तुत मूर्तिलेख संग्रह में वि० सं० १९३२ का एक ऐसा भी लेख संग्रहीत है जिसमें 'शुद्धाम्नाये' पद उल्लिखित है। मूर्ति खड्गासन चन्द्रप्रभकी है। ऊँचाई ३०-३१ अंगुल है और चौड़ाई ५ अंगुल है।

यह उस काल का लेख है जब बुंदेलखण्ड में भट्टारक परम्परा का पूरी तरह से उच्चाटन हो चुका था। प्रतिभा लेखों के देखने से विदित होता है कि सर्वप्रथम चंदेरी और सिरोंज के भट्टारकपट्ट रिक्त होने पर श्रावकों ने अटेर भट्टारकपट्ट के भट्टारकों की देख-रेख में पंच

---

१. तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग ४, पृ० ३५८।
२. भट्टारक सं० पृ० २१०।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कल्याणक प्रतिष्ठाओं का आयोजन प्रारम्भ किया था। वि० सं० १८३५ और वि० सं० १८३९ के दो लेख हमारे सामने हैं। जिनमें से प्रथम प्रतिमा लेख में भट्टारक महेन्द्र कीर्तिदेव अंकित है और दूसरे प्रतिमा लेख में भट्टारक जिनेन्द्रभूषण अंकित है। उनमें से जिनेन्द्र भूषण तो नियम से अटेर शाखा के भट्टारक हैं यह स्पष्ट है।[1] सम्भवतः महेन्द्रभूषण भी अटेर शाखा के ही भट्टारक हैं।

शुद्धाम्नाय की पुष्टि करनेवाला वि० सं० १७३४ का ऐसा ही एक लेख पालीताना के दि० जैन मन्दिर में स्थापित जिन बिम्ब पर अंकित है। पूरा लेख इस प्रकार है—

वि० सं० १७३४ वर्षे मूलसंघे सरस्वतीगच्छे बलात्कारगणे श्री कुंदकुंदाचार्याम्नाये भट्टारक सकलकीर्ति तत्पट्टे श्री पद्मनन्दी तत्पट्टे भ० श्री देवेन्द्रकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति शुद्धाम्नाये बागडदेश शीतपाड़ानगरे हूंमडज्ञातीय लघुशाखायां कमलेश्वरगोत्रे दोशी श्री सूरदास तत् सूरमद'तयोः पुत्र दोशी सांगीता सरजाण एतयोः पुत्री।

शुद्धाम्नाय का पोषक वि० सं० १७३४ का यह दूसरा प्रतिमा लेख है। इस प्रकार इन दोनों लेखों से यह स्पष्ट हो जाता है कि कुन्दकुन्द आम्नाय और शुद्धाम्नाय ये एक ही हैं। यद्यपि १४ वीं १५ वीं शताब्दी से लेकर इस आम्नाय के जितने भी भट्टारक पट्ट रहे हैं उन सबने अपने व्यवहार में शुद्धाम्नाय परम्परा का पूरी तरह से त्याग कर पूजा-पाठ में काष्ठासंघ परम्परा को भले ही अपना लिया था। पर अपनी शुद्धाम्नाय परम्परा से अनभिज्ञ और यशके भूखे श्रावकों और पण्डितों का भी इस स्थितिको उत्पन्न करने में बहुत बड़ा हाथ रहा है। यह हमारी कोरी कल्पना नहीं है। वर्तमान काल में इस आम्नायके श्रावकों द्वारा मुनि आचार आदि में शिथिलाचार को जिस प्रकार बढ़ावा दिया जा रहा है

१. भट्टारक सम्प्रदाय पृ० १३५।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उससे ही इस तथ्य की पुष्टि होती है। यदि विचार कर देखा जाय तो पता लगेगा कि १० वीं ११ वीं शताब्दि से ही इस बुराई ने मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय को राहु की तरह ग्रसना प्रारम्भ कर दिया था। यही कारण है कि समय-समय पर ऐसे सद्‌गृहस्थ होते आये हैं जिन्होंने शिथिलाचारी मुनि और उनके अनुयायी श्रावकों की चिन्ता न कर अपनी पूरी शक्ति इस बुराई के दूर करने में लगाई है। यहाँ हम ऐसे दो उदाहरण उपस्थित करते हैं जिनसे हमारे इस कथन की पुष्टि होती हैं। पहला उदाहरण पचराई (खनियाधाना) क्षेत्र का है, जिसे उपयोगी जानकर यहाँ दिया जा रहा है—

श्री कुन्दकुन्दसंताने देसिके संज्ञके सुभनंदिगुरोः सिष्यः सूरिः श्री लीलचन्द्रकः। हरीव भूत्या हरिराजदेवो वभूव भीमेव ह्रि तस्थ भीमः। सुतस्तदीयो रणपाल नाम एत्तद्धिरान्वये कृतिराजनस्य। परपाटान्वये शुद्धे साधुस्तान्मा महेश्वरः। महेश्वर परेव विख्यात-स्तत्सुतो बोधसंज्ञकः। तत्पुत्रो राजनो ज्ञेयः कीर्तिस्तस्येवमद्भुता। जिनेन्द्रवत्शुभात्यंतं राजते भुवनत्रये॥ तस्मिन्नेवान्वये दिव्ये गोष्ठि-कावपरौ शुभौ। पञ्चमांसे स्थितो ह्येको द्वितीयो दसमासके॥ आद्योऽसिहडो ज्ञेयः समस्तजससां निधिः। भक्तो जिनवरस्याद्यो विख्यातो जिनशासने। मंगलं महा श्रीः। भद्रमस्तु जिनशासनाय॥ संवत् ११२२।

यह वि० सं० ११२२ का लेख है। इस लेख में आचार्य कुन्दकुन्द आम्नायके साथ परपट (परवार) अन्वय को शुद्ध कहा गया है। जिससे इस तथ्य की पुष्टि होती है कि शुद्धाम्नाय का प्रचलन न तो पं० बनारसीदास ने ही किया है और न पण्डितप्रवर टोडरमल जी ही इसके पुरस्कर्ता हैं। यह हजारों वर्ष से चली आई सर्वाधिक प्राचीन परम्परा है। मध्यकाल में भट्टारक परम्परा में काष्टासंघ आम्नाय का प्रवेश हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाने से अवश्य ही इस आम्नाय में भी शिथिलाचार ने किसी हद तक अपना स्थान बना लिया था। किन्तु शुद्धाम्नाय का पूरी तरह से लोप न किया जा सका।

ऐसा ही एक लेख बूढी चंदेरी का है। इसमें कुन्दकुन्दान्वय नन्दि-संघ के उपासक को शुद्धाम्नाय के अनुसार ही यम-नियम के पालन करने में दक्ष कहा गया है। लेख का वह अंश इस प्रकार है—

श्री कुन्दकुन्दान्वयनंदिसंघे जातो मुनिः श्री शुभकीर्तिसूरिः। चरणांबुजापीन्दुमरीचिगौरे विभ्राजितानां तिणोयशोभिः॥ समभवत् शुभनंदी तस्य शिष्यः रामाबुधजननयालोकैकभानुः। यम नियम.......शुद्धं सिद्धांतबली परिगतभवकीर्तिः वीतसंसारचित्तः। बभूव भद्रो वनिजां स नेता कषायदोषप्रसरस्य हंता॥ आदि

हम पहले पचराई के शिलालेख का उल्लेख कर आये हैं। इस लेख से भी उस लेख में वर्णित विषय की पुष्टि होती है। सम्भवतः इन दोनों लेखों में अंकित प्रशस्तियाँ लगभग एक ही काल में अंकित की गई हैं। कारण कि दोनों के गुरु शुभनन्दिसूरि एक ही व्यक्ति जान पड़ते हैं। तथा साथ ही पचराई के शिलालेख के समान इस लेख में भी शुद्धाम्नाय का उल्लेख होने से भद्रनाम के जिस वैश्यों के नेता ने इस प्रशस्ति को मूर्तरूप दिया है वह भी पौरपाटान्वयी (परवार) होना चाहिये।

१८. तेरापंथ के पर्यायवाची नाम

ये कतिपय उल्लेख हैं जिन पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि जिसे वर्तमान में तेरापन्थ और ११ वीं शती में शुद्धाम्नाय कहा गया है, वह कुन्दकुन्दाम्नाय के ही पर्यायवाची नाम हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि है तो यह परम्परा पुरानी। परन्तु उत्तर काल में मूलसंघी कुन्दकुन्दाम्नायी भट्टारकों में काष्ठासंघ के अनुसार पूजा-पाठ प्रमुख क्रियाकाण्ड के रूढ़ हो जाने पर ११ वीं १२ वीं शताब्दि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में सर्वप्रथम कुन्दकुन्द आम्नाय को ही शुद्धाम्नाय कहा गया और बाद में उसे ही वीतराग मार्ग के अनुरूप तेरा अर्थात् हे भगवन् ! आप का पन्थ कहा जाने लगा। और इसप्रकार लोक में जब यह तेरापन्थ नाम से प्रसिद्ध हुआ तो काष्ठासंघ के अनुयायी श्रावक-मुनियों ने 'तेरा' शब्द को संख्यावाची मानकर स्वयं की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिये अपने पन्थ को अवश्य ही वीसपन्थ कहना प्रारम्भ कर दिया। अतः वीसपन्थ में 'वीस' यह पद भी बड़प्पनका ही वाची है। इसलिये इस आधार पर तेरापन्थ में 'तेरा' शब्द को संख्यावाची नहीं कहा जा सकता।

१९. देवसेनसंघ

इस प्रतिमालेख संग्रह में एक प्रतिमालेख (ले० २६७) का ऐसा भी है जिसमें 'देवसेनसंघ' अंकित है। उक्त प्रतिमालेख पर दृष्टिपात करने से यह नहीं मालूम पड़ता कि ये कौन देवसेन हैं जिनके नाम पर देवसेनसंघ प्रचलित हुआ। इस प्रतिमालेख में वि० सं० १२३४ अंकित है। इससे मालूम पडता है कि जिन देवसेन के नाम पर इस लेख में देवसेनसंघ कहा गया है वे इससे पहले के होने चाहिये। इस प्रतिमालेख में किसी भी आम्नाय या जाति का उल्लेख न होने से यह निश्चय करना कठिन है कि इसके अनुयायी पुरानी किस आम्नाय को मानते थे। कदाचित् इस लेख में मूर्ति प्रतिष्ठाकारक की जाति का उल्लेख होता तो भी यह अनुमान करने में आसानी जाती कि देवसेन की आम्नाय क्या रही होगी।

२०. जातिव्यवस्था

मनुस्मृति काल में ब्राह्मण वर्ण का प्रभुत्व स्थापित करने के लिये वर्ण व्यवस्था के नाम पर उन्हें स्थायी रूप देने के लिये जो नियम और उपनियम बने उन्हीं का देश-काल के अनुसार विकसित रूप ये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जातियाँ हैं। इस कारण जाति और वर्ण में विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध प्रतीत होता है। जातियाँ विशेषण हैं और वर्ण विशेष्य। इसी बात को इन शब्दों में दुहराया जा सकता है कि जातियाँ व्याप्य हैं और वर्ण व्यापक। यह भारतवर्ष का पुराना रोग है। जैनधर्म इससे अछूता नहीं रह सका। यह प्रकट सत्य है। इसे ध्यान में रखकर सोमदेव सूरि अपने यशस्तिलकचम्पू में लिखते हैं—

जातयोऽनादयः प्रोक्ताः तत्क्रियाश्च तथाविधाः।
सर्व एव जैनानां प्रमाणं लौकिको विधिः।
यत्र सम्यक्त्वहानिर्न न यत्र व्रतदूषणम्॥

आशय यह है कि वैदिक परम्परा में वर्णाश्रम धर्म को स्थायी रूप देने के लिये जिस जन्मना जाति प्रथा को स्वीकार कर उसे अनादि कहा गया है वह लौकिक मर्यादा को बनाये रखने के लिये जैनों को भी स्वीकार करनी पड़ी। उक्त उल्लेख से स्पष्ट है कि जैन परम्परा में जन्मना जाति व्यवस्था का स्वीकार उसी की देन है। कदाचित् धर्मक्षेत्र में यह किसी भी रूप में अपना अड्डा न बना ले, यद्यपि इस दोष का वारण हमारे महर्षि पुराने काल से करते आ रहे हैं, फिर भी जन्मना जाति में जन्मा व्यक्ति इस दोष से अपने को बचा नहीं सका। इसी से रत्नकरण्डश्रावकाचार और मूलाचार में जाति और कुल का बड़प्पन छोड़नेवाला ही मोक्षमार्ग का पथिक बनने का अधिकारी माना गया है। इतना ही नहीं, किन्तु साधु को अपनी जाति, कुल और वैभव के बड़प्पन का बखान करके आहारादि ग्रहण करने का भी निषेध किया गया है। आशय यह है कि जो श्रमण धर्म को स्वीकार करता है वह चाहे श्रावक हो और चाहे साधु हो उसे मोक्षमार्ग का पथिक बनने के लिये इन सबका अहंकार छोड़ना ही पड़ता है। प्राचीन धर्मग्रन्थों में यद्यपि वर्तमान जातियों का उल्लेख तो दृष्टिगोचर नहीं होता। पर यही स्थिति कुल और वर्ण की नहीं है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुराणग्रन्थों में इनका उल्लेख निरपवाद रूप से दृष्टिगोचर होता है। इसके पीछे क्या हेतु रहा है, तत्काल इस विषय का निर्णय कर करना कठिन है। अस्तु,

यद्यपि प्रस्तुत लेख संग्रह अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। किन्तु इसके पहले भी धर्म कार्यों में जातियों का उल्लेख होने लगा था। फिर भी जो साधु पद अंगीकार करते थे या भट्टारक पद स्वीकार करते थे उन पर यह प्रतिवन्ध अवश्य लागू था। इस कारण वे स्वयं अपनी जाति का वखान नहीं करते थे। मात्र श्रावक इस प्रतिवन्ध से मुक्त हो चुके थे। प्रस्तुत लेख संग्रह में प्रायः जो विविध जातियों का नामोल्लेख दृष्टिगोचर होता है यह उसी का परिणाम है।

२१. पापड़ीवाल

इस दृष्टि मे प्रस्तुत लेख संग्रह में जिन जातियों का नामोल्लेख दृष्टिगोचर होता है उनके नाम हैं—गोलापूर्व, परवार, गोलाराड्, खण्डलवाल और अग्रवाल। इनमें से पापड़ीवाल यह गोत्र मुडासा-निवासी शाह जीवराज के लिये प्रयुक्त हुआ है। शाह जीवराज पापड़ीवाल ने वि० सं० १५४८ और उसके आस-पास के संवतों में हजारों हजार जिनविम्वों की प्रतिष्ठा करा कर भारतवर्ष के कोने-कोने तक भिजाकर उस समय की आवश्यकता को पूरा किया था। पापड़ीवाल कोई स्वतन्त्र जाति नहीं है। यह खण्डेलवाल जाति का एक गोत्र है। शाह वखतराम ने 'वुद्धि विलास में' इस गोत्र का उल्लेख इन शब्दों में किया है—

'जनवाणी भूलना पापड़ीवाल बताये।'

इससे मालूम पड़ता है कि खण्डेलवाल जाति में इस गोत्र के अनुयायी मात्र मूलसंघान्तर्गत कुन्दकुन्दान्वय सरस्वतीगच्छ वलात्कारगण को ही माननेवाले रहे हैं। इनके द्वारा प्रतिष्ठित सब जिनमूर्तियों की प्रतिष्ठा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जयपुर शाखा दिल्ली के भट्टारक जिनचन्द की देख-रेख में हुई थी। प्रस्तुत जिनविम्ब संग्रह में ऐसे लेख दस से अधिक हैं। इनके अतिरिक्त एक जिनविम्व चौधरी जी के जिनमन्दिर में और विराजमान है जिसकी प्रतिष्ठा भ० जिनचन्द की देख-रेख में इन्हीं जीवराज पापड़ीवाल ने कराई थी। किन्तु उसपर वि० सं० १४८० अंकित है। जो वस्तुतः वि० सं० १५४८ ही होना चाहिये।

२२. अग्रवाल

दूसरी प्रमुख जाति अग्रवाल है। इस जाति के यहाँ के मन्दिरों में मात्र दो या तीन जिनविम्ब विराजमान हैं। प्रथम जिनविम्व (क्रमांक २१) की प्रतिष्ठा काष्ठासंघाम्नायान्तर्गत ग्वालियर मण्डल के भट्टारक गुणनदेवकी संरक्षकतामें हुई है। इस जिनविम्व पर वि० सं० १५४२ अंकित है। दूसरे जिनविम्व की प्रतिष्ठा (ले० १०) वि० सं० १३८९ में हुई हैं। उस समय किसका राज्य था, किस भट्टारक की संरक्षकता में इसकी प्रतिष्ठा हुई है तथा प्रतिष्ठाकारक कौन व्यक्ति था यह सब इस जिनविम्ब पर अंकित मूर्तिलेख से कुछ भी पता नहीं चलता।

२३. गोलाराड्

इन दो प्रमुख जातियों के अतिरिक्त तीसरी प्रमुख जाति गोलाराड् है। इस जाति के किसी महानुभाव द्वारा वि० सं० १५२९ में प्रतिष्ठित एक ही जिनविम्व यहाँ के वड़े मन्दिर में विराजमान है। क्रमांक १४ है।

ये तीनों इस प्रदेश की मुख्य जातियाँ नहीं हैं। खण्डेलवाल जाति के परिवार व्यापारादि के निमित्त से पूरे देश में भले ही पाये जाते हैं। फिर भी इस जाति का मुख्य निवासस्थान राजस्थान है। यही स्थिति अग्रवाल जाति की है। वैसे तो व्यापार आदि के निमित्त से इस जाति के कुटुम्ब भी पूरे देश में पाये जाते हैं। फिर भी इस जाति का प्रमुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवास आगरा-दिल्ली ओर उसके आस-पास का प्रदेश ही रहा है। इस जाति के जो कुटुम्ब मारवाड़ में वसते रहे हैं उन्हें मारवाड़ी अग्रवाल कहा जाता है। तीसरी जाति गोलाराड है। इस जाति का बहुभाग भिण्ड भदावर के आस-पास आज भी विपुल मात्रा में पाया जाता है। वहीं से आकर इस जाति के वहुत से कुटुम्ब बुन्देलखण्ड में आकर वस गये हैं। इस दृष्टि से यहाँ वसनेवाली अन्य दो मुख्य जातियों के समान यह भी यहाँ की एक प्रमुख जाति वन गई है।

२५. परवार

उक्त तीन जातियों के अतिरिक्त उल्लेख योग्य एक परवार जाति है। इस जाति का प्राचीन इतिहास गुजरात और उससे लगे हुए मेवाड़ प्रदेश से प्रारम्भ होता है। मूलसंघ कुन्दकुन्दाम्नाय सरस्वती-गच्छ बलात्कारगणको माननेवाली यह सर्वाधिक प्राचीन जाति है। इस आम्नाय के प्राचीन इतिहास के अध्ययन में इस जाति का इतिहास सर्वाधिक सहायक है। यद्यपि गोलाराड् जाति के समान यह जाति भी इस प्रदेश में वसनेवाली मूल जाति नहीं है। पर मध्यकाल से बुन्देलखण्ड ही इह जाति का प्रमुख घर वन गया है। गुजरात में श्वेताम्बर आम्नाय को राज्याश्रय मिल जाने के कारण ही इस जाति ने वहाँ से निकल कर चन्देरी प्रमुख बुन्देलखण्ड को अपना प्रमुख आश्रय स्थान वनाया था।

इस जाति के जो प्राचीन मूर्तिलेख उपलब्ध होते हैं उनमें एक प्रशस्ति लेख ऐसा भी है जिसमें 'अष्टशाखा प्राग्वाटवंश'[1] अंकित है। इससे मालूम पड़ता है कि गुजरात में वसनेवाली प्राग्वाट जाति का यह एक अवान्तर भेद हैं। उत्तरकाल में यह जाति अनेक भेदों में विभक्त हुयी है। उनके नाम हैं—सोरठिया पौरवाल, कपोला पौरवाल, पद्मावती-

१. भट्टारक सम्पदाय लेखांक ४३९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पौरवाल, गूर्जर पौरवाल, जांगड़ा पोरवाल, नेमाड़ी और मलकापुरी पौरवाल, मारवाड़ी पौरवाल पुरवार और परवार।[1]

प्राग्वाट पौरपाट और पौरवाल आदि, पर्यायवाची नाम हैं। परवार जाति का प्राचीन नाम पौरवाल या पुरवार न होकर पौरपाट या पौरपट्ट रहा है। धीरे-धीरे उसे ही वर्तमान में परवार कहा जाने लगा है। यह पौरपाट का अपभ्रंश रूप है। इस जाति के लिये प्राचीन काल में पौरवाल न कह कर पौरपाट या पौरपट्ट क्यों कहा गया है इसका भी एक इतिहास है जिसपर यथा समय प्रकाश डालने का प्रयत्न करेंगे।

प्रतिमालेखों से ज्ञात होता है कि गुजरात से निकल कर इस जाति के अधिकतर कुटुम्व सबसे पहले चन्देरी और इसके आस-पास के प्रदेश में आकर बसे हैं। तो भी वि० सं० १६ वीं १७ वीं शताब्दि के मध्य तक इस जाति का गुजरात से सम्पर्क बना रहा है।[2] इसकी पुष्टि भट्टारक सम्प्रदाय में उल्लिखित प्रशस्तिलेख क्रमांक ४३९ से तो होती ही है, श्री जिनसारण-सरण रचित नाममाला से भी होती है।

जैसा कि हम पहले संकेत कर आये हैं कि सर्वप्रथम इस जाति के कुटुम्बों ने चंदेरी और उसके आस-पास के प्रदेश को ही अपने निवास के लिये चुना था। उसके बाद क्रम से यह जाति बुंदेलखण्ड के अन्य भागों में फैली है। यही कारण है कि प्रस्तुत लेख संग्रह में ऐसा एक भी लेख नहीं उपलब्ध होता जिसे १६ वीं १७ वीं शताब्दि से पूर्व का माना जा सके। इस जाति के जो प्रचुर लेख प्रस्तुत लेख संग्रह में देखे जाते हैं वे सब १७ वीं शताब्दि से लेकर ही पाये जाते हैं। इतना अवश्य है कि वर्तमान में छतरपुर भी इस जाति के निवास का प्रमुख नगर

---

१. प्राग्वाट इतिहास पृ० ४४।

२. भट्टारक सम्प्रदाय लेखांक ४३९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बन गया है। तथा यहाँ जिसने भी जिनमन्दिर हैं उनके निर्माण में भी इस जाति का प्रमुख हाथ रहा है।

शाह वखतराम ने जैन समाज में प्रचलित ८४ जातियों के प्रसंग ले इस जाति का नाम परवार के स्थान पर पुरवार सूचित कर इसके सात अन्तर्भेदों का उल्लेख किया है। यथा—

सात खांप पुरवार कहावै। तिनके तुमको नाम सुनावै ॥६८६॥
अठसक्खा फुनि है चौसक्खा। सेहसरडा फुनि है दोसक्खा ॥
सोरठिया अर गांगड़ जानौ। पद्मावत्या सप्तमां मांनौ[1] ॥६८७॥

इस उल्लेख में 'सेहसरडा' निश्चयतः 'छहसखा' का वाचक होना चाहिये। सोरठिया परवार और पद्मावती परवार वही होने चाहिये जिनका उल्लेख प्राग्वाठ जाति के नौ भेदों में कर आये हैं। तथा 'गांगड़' से मतलव जांडगा पोरवालों से हो तो कोई आश्चर्य नहीं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि परवार और पौरवाड़ मूल में एक ही जाति रहे हैं। उत्तर काल में आचार भेद और प्रदेश भेद के कारण ये अलग-अलग जातियों में विभक्त होते गये। आम्नाय भेद तो इसमें मूल कारण है ही। यहाँ विशेष रूप से इस बात का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि परवार, अग्रवाल, गहोई और चरनागरे इन चारों जातियों के अधिकतर गोत्र आपस में मिलते जुलते हुए पाये जाते हैं। हो सकता है कि प्रारम्भ में इन जातियों के मूल पुरुष एक रहे हों। जो कुछ भी हो, यह गवेषणा का विषय अवश्य है।

प्रस्तुत लेख संग्रह में इस जाति का प्रथम लेख वि० सं० १६९४ का है। प्रतीत होता है कि इसमें उल्लिखित पं० गुनदास से पं० गुणदास लिया गया है। सम्भवतः ये परवार थे (लेखांक ६३)। दूसरा लेख वि० सं० १७१३ का है। इसमें जो यह मुद्रित हुआ है—'पारपदे अष्टसप्तया

---

१. बुद्धिविलास पृ० ८६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिवाकर मूल का सिद्धगोत्रे' सो उसका सही पाठ 'पौरपाटे अष्टसखा दिवाकर कासिल्लगोत्रे' होता है। (लेखांक ६४)

यहाँ श्री जिनतारण तरण समाज द्वारा स्थापित एक चैत्यालय था, जिसमें ५०-६० वर्ष पूर्व उसी समाज के कुछ प्रमुख भाईयों द्वारा जिन-मूर्ति स्थापित हो जाने से उसने जिन गृह का रूप ले लिया है।

यहाँ दो सौ वर्ष पुराना एक ऐसा भी मन्दिर है जिसे स्थानीय लोगों ने क्लब के रूप में परिवर्तित कर लिया है। इसके निर्माता स०सिं० मंजु के सुपुत्र वच्छरमन रहे हैं। इनके द्वारा प्रतिष्ठित अनेक जिनविम्ब यहाँ के बड़े मन्दिर में विराजमान हैं। इस वंश के उत्तरा-धिकारी इस समय जबलपुर समाज के प्रमुख पंच हैं। ये तीन भाई हैं। इनके नाम क्रम से स० सिं० भायजी हर्षचन्द्र जी, सुमेरचन्द्र जी और वंशीलाल जी हैं। इस परिवार द्वारा काफी प्रयत्न करने पर भी उसे वापिस लेकर पुनः जिनमन्दिर का रूप नहीं दिया जा सका है। जैन समाज सवसे छोटी अल्पसंख्यक समाज होने के कारण वर्तमान सरकार में वार-वार गुहार करने पर भी कोई सुनाई नहीं होती है। कहने के लिये तो यह सेक्युलर सरकार है। पर वस्तुस्थिति यह नहीं है। इस (सरकार) पर प्रभुत्व सवसे वड़े उस अल्पसंख्यक समाज का वना हुआ है जो संगठित होकर और अपने अधिकारों के लिये जागरूक है।

इस लेख संग्रह में ऐसे भी अनेक लेख पाये जाते हैं जिनमें इस जाति के लिये परवारवंश कहा गया है (लेखांक ९७-९८ आदि) तथा ऐसे भी अनेक लेख उपलब्ध होते हैं जिनमें इस जाति के लिये परवार-नयते शब्द से संवोधित किया गया है (लेखांक ११३-११४ आदि)।

२२. गोलापूर्व अन्वय

इस प्रदेश में निवास करनेवाली तीसरी मुख्य जाति गोलापूर्व है। लगता है कि बहुत काल से इस जाति का मूल निवास स्थान यही प्रदेश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रहा है। महोवा, छतरपुर, वड़ा मलहरा, द्रोणगिरि, रेशिंदीगिरि, अहारजी, पपोराजी आदि से लगकर जितना भी प्रदेश वर्तमान में उपलब्ध होता है वह चिरकाल से इस जाति का मूल निवास स्थान वना हुआ है। इसकी पुष्टि प्रस्तुत लेख संग्रह से तो होती ही है और भी ऐसे अनेक प्रमाण पाये जाते हैं, जिनसे इस तथ्य का समर्थन होता है। यथा—

(१) प्रस्तुत लेख संग्रह में वि० सं० १२०२ (लेखांक १७०) का ऐसा प्रथम लेख है जिसमें सर्वप्रथम मात्र इस जाति का उल्लेख दृष्टि-गोचर होता है। वैसे इस लेख संग्रह में वि० सं० १०२५ (लेखांक १७८) तक के लेख संगृहीत हैं पर इसमें वि० सं० १२०२ से पूर्व के जितने भी लेख संगृहीत हुए हैं उनमें ऐसा एक भी लेख नहीं है जिसमें किसी भी जाति या नाम को उल्लिखित किया गया हो। इससे यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि इस सम्भाग में बसनेवाली यह प्रथम जैन जाति है। इसके अतिरिक्त इस तथ्य के समर्थन में ऐसे और भी अनेक प्रमाण उपलब्ध होते हैं। विवरण इस प्रकार है—

(२) ललितपुर से लगभग १ मील दूर स्टेशन रोड पर क्षेत्रपाल एक रमणीक क्षेत्र है। इसके परिसर में अति उन्नत कुर्सी पर एक परकोटा में अनेक जिन मन्दिर निर्मित हैं। उनके मध्य में जो जिन मन्दिर निर्मित हुआ है उसमें स्थित मूल नायक जिन बिम्ब इसी जाति के सद्गृहस्थ द्वारा महोवा में प्रतिष्ठित कराया गया है। महोवा से लाकर यह जिनबिम्व कब किस के द्वारा यहाँ के इस जिन मन्दिर में विराजमान किया गया है यह अज्ञात है। इसके पाद पीठ पर अंकित लेख को मैंने स्वयं पढ़ा है उसके अनुसार महोवा स्थित गोलापूर्व जाति के किसी सद्गृहस्थ ने इस जिनबिम्ब की वि० १२ शताब्दि के आस-पास प्रतिष्ठा कराई थी। इसके बाद इसी क्षेत्रपाल में प्रदक्षिणा क्रम से जो दूसरा मन्दिर मिलता है उसकी वेदी पर स्थित जिनबिम्ब भी इस जाति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के किसी सद्गृहस्य द्वारा प्रतिष्ठित करा कर महोवा से लाकर इस मन्दिर में विराजमान किया गया है। इस पर अंकित वि० संवत् भी लगभग वही है।

(३) अहार जी अतिशय क्षेत्र

अहार जी क्षेत्र पर पुरातत्त्व की दृष्टि से जितने भी जिनविम्ब वर्तमान में उपलब्ध होते हैं वे अनेक जातियों के सद्गृहस्थों द्वारा प्रतिष्ठित कराये गये होते हुए भी इस जाति के सद्गृहस्थों द्वारा प्रतिष्ठित जिनबिम्ब सब से अधिक हैं। प्रमाणस्वरूप एक प्रतिमा लेख यहाँ दे रहे हैं जिससे वहुत पूर्व काल से यह जाति इस सम्भाग में बसती आई है यह समझने में आसानी जाती है। यथा—

सम्वत् १२०३ माघ सुदी १३ गोलापूर्वान्वये साहु भावदेव भार्या जसमती पुत्र लक्षीमन प्रणमन्ति नित्यम्।

यहाँ का बहुत सा पुरातत्त्व नष्ट हो गया है। जो बच रहा है उसमें से बहुत सा पुरातत्त्व समाज की अदूरतावश जलमग्न कर दिया गया है। पूरे पुरातत्त्व की गणना में जो शेष बचा है वह एक रुपये में १० पैसे के बराबर भी नहीं है। इस लिये इस पर से यह निश्चय करना कठिन है कि यह क्षेत्र कितना प्राचीन है और इसे मूर्त रूप सर्वप्रथम किस जाति के सद्गृहस्थों ने दिया था। गोलापूर्व जाति के परिवार इस सम्भाग के चिरनिवासी हैं, इस लिये बहुत सम्भव है कि किसी ऐतिहासिक पुरुष की पुण्यस्मृति में इस जाति के सद्गृहस्थ द्वारा ही प्रारम्भ में इसे मूर्तरूप दिया गया होगा। पर यह एक सम्भावना मात्र है। निश्चय पूर्वक तत्काल कुछ भी कह सकना सम्भव नहीं है। यह क्षेत्र यहाँ प्राप्त होनेवाली पुरातत्त्वीय सामग्री को देखते हुये हजार-पन्द्रह सौ वर्ष प्राचीन तो होना ही चाहिये। यहाँ पुरातत्त्वीय जो सामग्री शेष बच गई है उससे जातियों मुनि-आर्यिकाओं, भट्टारकों, पण्डितों और श्रावक-श्राविकाओं के इतिहास को समझने में बड़ी सहायता

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मिलती है। ऐसी बहुत सी जातियों का पता इस क्षेत्र पर प्रतिष्ठित जिनबिम्वों के पादपीठ पर अंकित लेखों से लगता है जिनका वर्तमान में अस्तित्व ही नहीं पाया जाता। इस दृष्टि से इस क्षेत्र पर स्थित मूर्तिलेख बहुत महत्त्वपूर्ण हैं।

(४) पपोरा जी अतिशय क्षेत्र

इस सम्भाग में स्थित एक पपौरा अतिशय क्षेत्र है। यह टीकमगढ़ से कुल ३ मील दूर है। इसे यदि जिनमन्दिरों की नगरी कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। यहाँ सब मिलाकर एक परकोटे में १०५ जिनमन्दिर हैं। यहाँ एक चौवीसी भी है। मध्य में एक मन्दिर है। उसके चारों ओर चारों दिशाओं में छह-छह मन्दिर हैं। इसमें सब मन्दिरों की सम्मिलित परिक्रमा तो है ही, प्रत्येक मन्दिर की भी पृथक्-पृथक् परिक्रमा है। सम्भवतः प्रारम्भ में इसकी रचना को मूर्त रूप इसी जाति के एक सद्गृहस्थ ने दिया था। यह कितनी पुरानी है यह कह सकना कठिन है, क्योंकि पपौरा दर्शन पुस्तक के देखने से मालूम पड़ता है कि इसमें एक मन्दिर की मूर्ति पर वि० सं० १८४० अंकित हैं। जब कि शेष जिनबिम्वों पर १९१६ अंकित किया गया है।

यहाँ दो भूगृह (भोंयरे) भी हैं। जिनमें से एक भूगृह में प्रतिष्ठित एक जिनबिम्ब पर वि० सं० १२०२ आषाढ वदी १० बुधे दिने गोला पूर्वान्विन्ये अंकित है। तथा दूसरे जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा भी इसी दिन हुई थी। मात्र इसका करानेवाला भोपाल निवासी गोलापूर्व सद्-गृहस्थ है।

यहाँ प्राचीन कुछ ऐसे कला के नमूने अवश्य हैं जिनको देखने से ऐसा लगता है कि यह क्षेत्र इससे भी पुराना होना चाहिये। जो कुछ भी हो इस क्षेत्र के निर्माण में गोलापूर्व जाति का प्रारम्भ में प्रमुख योग-दान रहा है यह यहाँ के भूगृह और चौबीसी के अवलोकन से स्पष्ट हो

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जाता है। इतना आवश्य है कि उत्तर काल में इसकी सार सम्हाल में पौरपाट (परवार) जाति का विशेष योगदान रहा है।

यहाँ श्री भ० चन्द्रप्रभ मन्दिर में खड्गासन जिनबिम्ब के नीचे स्वतन्त्र शिला पर वि० सं० १५२४ का एक लेख अंकित है। 'पपौरा बैभव पुस्तक के अवलोकन से मालूम पड़ता है कि यह लेख अत्यधिक घिस जाने से पढ़ा नहीं जा सका। यदि यह पढ़ा जा सकता तो क्षेत्रके इतिहास को समझने में कुछ सहायता मिलती यह सम्भव था।

(५) द्रोणगिरि सिद्ध क्षेत्र

इस सम्भाग में बड़ा मलहरा के पास जो क्षेत्र है उसका नाम द्रोणगिरि है यहाँ से गुरुदत्त आदि मुनि मोक्ष गये हैं, इसलिये इसे सिद्ध क्षेत्र होने का गौरव प्राप्त है। उत्तर काल में यहाँ उनके चरण चिह्न स्थापित कर दिये गये हैं।

यहाँ प्राचीन काल के अवशेष आज भी पाय जाते हैं। जिनपर दृष्टिपात करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रारम्भ से ही सिद्ध-क्षेत्रों में इसकी गणना होती आ रही है। इसके स्पष्ट समझने के लिये आपको मन्दिर संख्या २१, २४ और २८ को दृष्टि में लेना होगा।

श्री जिन मन्दिर २१ में पद्मासन और खड्गासन श्री आदिनाथ जिनकी दो प्राचीन मूर्तियाँ अवस्थित हैं जिनमें कंधे तक जटा लटके हुए हैं तथा जो छत्रत्रय और भामण्डल आदि शोभायुक्त हैं। जिनबिम्बों के दर्शन करने से सहज ही गौरवमय अतीत की झलक मिलती है।

तथा श्री जिन मन्दिर चौवीस में ऐतिहासिक एक कूट है जो सैकड़ों छोटी बड़ी खड्गासन और पद्मासन मूर्तियों से सुशोभित है। इसे न तो सहस्र कूट चैत्यालय की ही संज्ञा दी जा सकती है और न मानस्तम्भ की ही संज्ञा दी जा सकती है। इसमें नीचे के भाग में दो उपासक बैठे हुए हैं तथा उनके बगल में दो इन्द्र या द्वारकी शोभा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बढ़ानेवाले दो सेवक अवस्थित है। इसमें एक ऐसा भी जिनविम्ब प्रतिष्ठित है जिसके पृष्ठ भाग में अशोक वृक्ष अंकित है। सबसे नीचे कमलादि नाना अलंकरणों से युक्त अनेक देवी देवता अंकित हैं। एक देवी के आँचल को स्पर्श करता हुआ एक बालक अवस्थित है। सबके अन्त में हाथ में पुस्तक लिये हुए एक देवी अंकित की गई है, बगल में हंस है। सम्भवतः यह सरस्वती देवी का प्रतीक है।

इसी प्रकार जिन मन्दिर २८ में भी देशी पाषाण निर्मित एक जिनबिम्ब अवंस्थित है। आसन के नीचे बीच में कलश लिये हुए दो हाथी दिखाये गये हैं। नीचे से ऊपर छोटे होते हुए कई चक्र हैं। अन्तिम चक्र पर एक मन्दिर अंकित किया गया है। हाथी की झूंड़ पर भी एक मन्दिर में एक पद्मासन मूर्ति अंकित की गई है। इसके सिवाय इसमें और भी जिनविम्ब उकेरे गये हैं। यह एक मूर्ति के आसन का रूप है इसके सिवाय यहाँ प्राचीन और भी अनेक मूर्तियाँ विराजमान हैं।

सबके अन्त में अलग से एक छायादार स्थान में देशी पाषाण की एक प्राचीन वेदिका निर्मित की गई है। उसमें दक्षिण की ओर तपस्या करते हुए तीन मुनि दर्शाये गये हैं। पश्चिम, उत्तर और पूर्व दिशा में सुकुमाल मुनि का गृहस्थ अवस्था से लेकर पूरा चरित्र अंकित किया गया है। इसी से लगकर एक प्राचीन गुफा भी है। जो अपेक्षाकृत प्राचीन मालूम पड़ती है।

यह इस सिद्धक्षेत्र का पुरातत्त्व है। कब-कब किन सद्गृहस्थों ने इस क्षेत्र को यह रूप प्रदान किया है इस सम्बन्ध में तत्काल कुछ भी नहीं कहा जा सकता है। इससे इतना ही पता लगता है कि सुदूर प्राचीन काल से इसे सिद्धक्षेत्र का स्वरूप मिला हुआ है। जो बन्धु किसी विवक्षित ग्राम आदि के व्यामोह में पड़ कर या इतिहास की टांग खींच कर इसकी ऐतिहासिकता को धूमिल करने का विचार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रखते हैं यह उनकी नासमझी है। उत्तर काल में इसकी सार-सम्हाल करने में इस सम्भाग में बसनेवाली गोलापूर्व जाति का विशेष योगदान रहा है इसमें सन्देह नहीं।

इनके अतिरिक्त यत्रन्तत्र जिनमन्दिरों में और भी अनेक प्राचीन जिनविम्ब अवस्थित हैं। इससे भी विदित होता है कि सुदूर अतीत काल में यह सिद्धक्षेत्र के रूप में माना पूजा जाने लगा था।

यहाँ लगभग ५-७ ऐसे भी जिनबिम्ब विविध जिनालयों में विराजमान हैं जिनकी प्रतिष्ठा भट्टारक जिनचन्द्र के नेतृत्व में मुड़ासा-निबासी जीवराज पापड़ीवाल ने वि० सं० १५४८ और उसके आस-पास के संवतों में कराकर उन जिनविम्बों को देश के कोने-कोने तक भिजाया था। उस काल में भट्टारक जिनचन्द्र दिल्ली-जयपुर शाखा के पट्टपर अधिष्ठित थे।

(६) रेशंदीगिरि

इसी प्रकार सागर से बड़े मलहरा को जो पथ (सड़क) जाता है उसपर अवस्थित बण्डा के पास मुख्य मार्ग से १५-२० किलोमीर हट कर बाजू में जो निर्वाण क्षेत्र है उसका नाम रेशंदीगिरि है। वर्तमान में इसे नैनागिरि भी कहते हैं। 'कहते हैं कि चंदेलवंश के एक राजा के नाम पर ९ वीं शताब्दि से इसे नैनागिरि कहा जाने लगा है। तथ्य क्या है यह हमारे सामते नहीं है। निर्वाण काण्ड में यह गाथा आई है—

पासस्स समवसरणे सहिया वरदत्तादिमुणिवरा पंच।
रेशंदीगिरिसिहरे णिव्वाण गया णमो तेसिं॥

निर्वाण की इस गाथा परसे मालूम पड़ता हैं कि भ० पार्श्वनाथ के समवसरण के साथ वरदत्त आदि पाँच ऋषिराज यहाँ आये थे उनकी यह निर्वाणभूमि होने से इसका नाम रेशंदीगिरि अर्थात् ऋषीद्रगिरि प्रख्यात हुआ। यह पूरा क्षेत्र एक पहाड़ी की समतल भूमि पर अवस्थित है। क्षेश मनोज्ञ और ध्यानके लिये उपयोगी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस क्षेत्र के पास पुरातत्त्व के ऐसे अवशेष आज भी पाये जाते हैं जिन पर दृष्टिपात करने से लगता है कि यहाँ कोई नगर अवश्य रहा होगा। यहाँ जंगल में ५२ गज लम्वी प्राचीन एक वेदिका भी वनी हुई है। तथा नदी के बीच धारा में करीव ४०-५० फीट ऊँची एक शिला भी अवस्थित है जिसे सिद्धशिला कहा जाता है। उस पर लाल रंग के अनेक सुन्दर चित्र भी अंकित हैं। ऐसी जनश्रुति प्रसिद्ध है कि वरदत्त आदि ऋषिराजों ने इसी स्थान से मुक्ति लाभ लिया था।

यहाँ जमीन से खुदाई करने पर एक प्राचीन जिनमन्दिर निकला था। जिसकी क्रम संख्या ११ है। इसमें खड्गासन और पद्मासन देशी-पाषाण निर्मित अनेक प्राचीन मूर्तियाँ अवस्थित हैं। उनपर 'किन तीर्थंकरों की ये मूर्तियाँ हैं' इसे सूचित करनेवाला पादपीठ पर कोई चिह्न नहीं है और न ही कोई लेख भी अंकित है। मात्र उनमें से एक मूर्ति अवश्य ही पार्श्वनाथ की है और एक मूर्ति भ० आदिनाथ की है।

'ऋषीन्द्रगिरि (नैनागिर) दर्शन' पुस्तक से मालूम पड़ता है कि इस मन्दिर का निर्माण वि० सं० ११०९ में हुआ था। मन्दिर की दीवाल में एक शिलालेख जुड़ा हुआ है। उससे इस बात का पता लगता है। स्थापत्य की दृष्टि से यह दर्शनीय है। यहाँ पहाड़ी पर निर्मित कुल मन्दिरों की संख्या ३५ और तलहटी में निर्मित मन्दिरों की संक्या १५ है। यहाँ विशाल स्वाध्याय भवन और अच्छी स्थिति में धर्मशालाऐं हैं। यहाँ पहाड़ी के नीचे तालाब में भी एक मन्दिर बना हुआ है। जिससे इस सिद्ध क्षेत्र की शोभा द्विगुणित बढ़ गई है। उसका निर्माण तालाब पूरा होने के पूर्व हुआ होगा ऐसा प्रतीत होता है। उस काल में यह वहुत बड़ा काम था जिसे गृहस्थों ने उस काल की परिस्थिति को देख कर योग्यतापूर्वक सम्पन्न करने में अपने जीवन का वहुभाग व्यतीत किया होगा।

यहाँ के जिनमन्दिरों में कुछ और भी जिनबिम्ब अवस्थित हैं। उनमें से एक जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा भट्टारक त्रिभुवन कीर्ति के नेतृत्व में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वि० सं० १५३३ में हुई है। एक जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा भट्टारक धर्मकीर्ति के नेतृत्व में वि० सं० १६६५ में हुई है। एक जिनबिम्ब की प्रतिष्ठा भट्टारक पद्मकीर्ति के उत्तराधिकारी भट्टारक सकलकीर्ति के नेतृत्व में वि० सं० १७१८ में हुई है। एक जिनबिम्ब ऐसा भी है जिसकी प्रतिष्ठा भट्टारक सकलकीर्ति के नेतृत्व में वि० सं० १७६५ में प्रतिलिपिकार ने अंकित की है जो विचारणीय है। ये सब भट्टारक चंदेरी परवारपट्ट के पट्टधर थे यह कई ऐतिहासिक प्रमाणों से सुनिश्चित हो गया है।

यहाँ कुछ काल पूर्व कतिपय सद्गृहस्थों ने, इन्द्रदत्त, वरदत्त, गणदत्त और सायरदत्त आदि जिन ५ ऋषियों ने यहाँ से मुक्ति लक्ष्मी को वरण किया था, पादपीठ पर उनके नाम अंकित करा कर मूर्तियाँ स्थापित कराने रूप, यह नई परम्परा चालू कर दी है, वैसे जिस स्थान से जो ऋषिगण मोक्ष प्राप्त करते हैं उस स्थान पर उनके चरणचिह्न अंकित करने की पुरानी परम्परा रही है। श्री सम्मेदाचल और कुण्डलगिरि (कुण्डलपुर) आदि पर स्थित चरणचिह्नों से इसकी पुष्टि होती है। तीर्थङ्करों के अतिरिक्त मोक्ष जानेवाले अन्य ऋषियों के बिम्बों की स्थापना करने की परम्परा १० वीं ११ वीं शताब्दि से अवश्य ही चालू हुई है। अब तो उसकी कोई मर्यादा ही नहीं रही है। जो सामान्य मुनि हैं, भले ही उनका आचार आम्नायके अनुसार इस समय आगमानुसार न भी हो, वे भी अपनी अपने शरीर के अनुरूप तदाकार मूर्तियाँ बनवाकर जिन-मन्दिरों में अलग से स्थापित कराने लगे हैं। इसमें कतिपय वर्तमान विद्वान् और गृहस्थ भी आँख मीचकर उनका सहयोग कर रहे हैं जो विचारनीय है। यह जिन मार्ग की विकृति कहाँ समाप्त होगी, कह नहीं सकते।

इस क्षेत्र को सुदूर अतीत काल में मूर्तरूप किन सद्गृहस्थों ने दिया या यह कह सकना तो कठिन है पर उत्तर काल में यहाँ जिनमन्दिरों आदि के रूप में जितना भी निर्माण हुआ है इसमें परवार और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

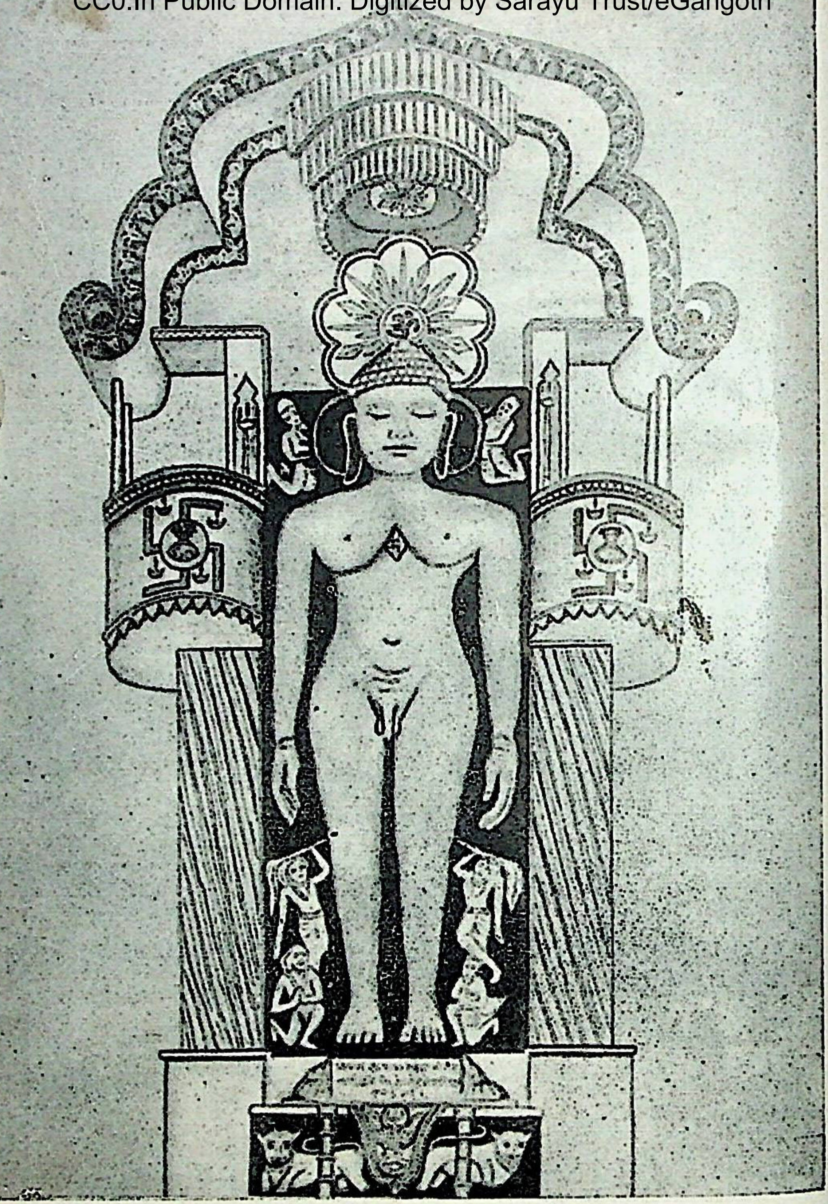

भगवान शान्तिनाथजी (१२ फुट ८ इंच ऊँचा)

(श्री बहोरीबन्द अतिशय क्षेत्र)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोलापूर्व दोनों जातियों का प्रमुख हाथ है यह मूर्तिलेखों पर अंकित प्रशस्तियों आदि से स्पष्ट हो जाता है।

(८) श्री बहोरीबन्द अतिशय क्षेत्र

श्री बहोरीबन्द क्षेत्र कैमूर पहाड़ी का एक भाग है। यह जबलपुर से ६४ कि० मी० और सिहोरा से २४ कि० मी० दूरी पर इसी नाम के ग्राम में अवस्थित है। यहाँ जैन, बौद्ध और वैदिकों के धर्मायतन होने से इसकी परिगणना सभी के तीर्थस्थानों में की जाती है। पुरातत्त्व की दृष्टि से यह पूरा प्रदेश महत्त्वपूर्ण माना जाता है। यहाँ कई पुरातत्त्वीय सामग्री पाई जाती है। उसमें अशोक का शिलालेख मुख्य है। यह रूपनाथ में अवस्थित है। यहाँ पुराने तीन कुण्ड भी हैं।

जैन धर्म के अनुसार बहोरीबन्द को मान्यता मिलने का मुख्य कारण वहाँ अवस्थित भगवान शान्तिनाथ की सतिशय खड्गासन मूर्ति है। इसका विग्रह १३ फुट ८ इंच ऊँचा है। अजैनों में इसकी मान्यता विशेष रही है। जैन वर्तमान में व्यापार प्रधान जाति है। इसलिये इसमें अन्य तीन पुरुषार्थोंमें धर्म और मोक्ष पुरुषार्थ की अपेक्षा अर्थ और काम पुरुषार्थ की मुख्यता देखी जाती है। इसीलिये चोट खाने के बाद यह जब चेतती है तब तब बहुत कुछ खो चुकी होती है। दूसरे दिगम्बर जैनों में किसी का अनुशासन न रहने से भी इसकी यह स्थिति बनती जा रही है। यही स्थिति बहोरीबन्द के विषय में भी हुई है। प्रसन्नता की बात तो इतनी ही है कि अब इसकी सारसम्हालकी ओर समाज का थोड़ा ध्यान गया है। इसके लिये सिहोरा निवासी ब्र० कल्याणदास जी विशेष धन्यसाद के पात्र हैं।

मूर्ति के ३ फुट ८ इंच ऊँचे पादपीट पर ७ पंक्ति का एक लेख अंकित है। उसका मूल पाठ इस प्रकार है—

स्वस्ति श्री वि० सं० १०···फाल्गुन वदी ९ भौमे श्रीमद्गया-गर्णदेवविजयराज्ये राष्ट्रकूटकुलोद्भवमहासामन्ताधिपतिश्रीमद्-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गोल्हणदेवस्य प्रवर्धमानस्य श्रीमद्गोलापूर्वाम्नाये वेल्लप्रभाटिकाय-मुरुकुताम्नाये तर्क-तार्किकछत्रचूडामणिश्रीमन्माधवनन्दिनानुगृहीत-साधुश्रीधर तस्य पुत्रः महाभोजः धर्मध्यानाध्ययनरतः। तेनेदं कारितं रम्यं शान्तिनाथस्य मन्दिरम्। स्वलास्यमसंज्ञकसूत्रधारः श्रेष्ठिनामा। तेन वितानं च महाश्वेतं निर्मितमिति सुन्दरम्। श्रीचन्द्रकराचार्याम्नाये देशीयगणान्वये सयस्तविद्याविनयानन्दित-विहज्जनाः प्रतिष्ठाचार्याः श्रीमन्तः सुभद्राः चिरं जयन्तु[1]।

यह एक ऐतिहासिक लेख है जो उस संभाग के बहोरीबन्द में अवस्थित तीर्थंकर भ० शान्तिनाथ के पादपीठ से लिया गया है। इस सम्भाग में महोवा-छतरपुर से लेकर बहोरीबन्द तकके क्षेत्रमें गोलापूर्व जाति चिरकाल से निवास करती आ रही है। इस लेख में जिन तथ्यों को उद्‌घाटित किया गया है उनका क्रम से निर्देश इस प्रकार है—

(१) जिस काल में इस मूर्ति का निर्माण होकर उसकी प्रतिष्ठा हुई थी उस समय गयाकर्णदेव का राज्य प्रवर्त्त रहा था जिसका संचालन राष्ट्रकूट कुल में उत्पन्न हुए महासामन्तों में प्रमुख श्री गोल्हणदेव कर रहे थे। पादपीठ में अंकित इस लेख से किस संवत् का यह लेख है इसका ठीक निर्णय इसलिये नहीं हो पा रहा है, कारण कि उसमें जो संवत् अंकित है वह चार अंको में रहा है। प्रारम्भ के दो अंक १० तो पढ़े जा सकते हैं, अन्त के दो अंक त्रुटित हो जाने से पढ़े नहीं जा सकते। वह शक सं० १०७० के आस-पास कुछ रहा होगा यह श्री बालचन्दजी जैन भू० पू० क्यूरेटर जवलपुर सम्भागने 'भारत में दिगम्बर जैन तीर्थं' नामक ग्रन्थके अपने लेखमें किवा है। इसलिये उसे वि० सं० १०१० प्रचारित करना ठीक नहीं है।

---

१. यह लेख इन्सिक्रिप्सन्स आफ दी कलुचरि चेदिय पृ० ३३९ जैन शिलालेख भाग ४ पेज १५९ से उद्‌धृत।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) इस विशालकाय महामनोज्ञ मूर्ति और उसके अनुरूप जिन मन्दिर के निर्माता और उसके प्रतिष्ठा कारक धर्मध्यान और अध्ययन में रत श्रेष्ठिवर्य महाभोज हैं। इनके पिता श्रीधर थे। जाति गोलापूर्व है। वेल्लप्रभाटिकायमुरुकृत आम्नाय में एक तर्कतार्किकचूड़ामणि आचार्य महानन्दि हो गये हैं। उनसे अनुग्रीत होकर ही इन्होंने यह भव्यजन हितकारी धार्मिक कार्य सम्पन्न किया था।

(३) जो इसके प्रतिष्ठाचार्य थे वे भी सामान्य पुरुष नहीं थे। वे अपने समस्त लौकिक और पारलौकिक विद्या से सम्पन्न तो थे ही। साथ ही विनय सम्पन्नता उनका भूषण था। जिससे विद्वज्जन उनकी सन्निधि पाकर आनन्द का अनुभव करते थे। उनका नाम सुभद्र था। लेख से मालूम पड़ता है कि प्रतिष्ठाकारक के समान वे भी श्रीमन्त थे। देशीयगण अन्वय में हुए श्रीचन्द्र आचार्य की आम्नाय के वे उपासक थे। यह देशीयगण मूलसंघ कुन्दकुन्द आम्नाय के अन्तर्गत दक्षिण प्रदेश की एक शाखा है। वेल्लप्रभाटिकायमुरु यह नाम इसी लेख में दृष्टिगोचर हुआ है। सम्भवतः यह देशीयगण का ही ग्राम के नाम पर एक गच्छ होना चाहिये। इसमें आया हुआ 'मुरु' शब्द अर्थगर्भ हो सकता है। चन्द्रगुप्त मौर्यवंश के चक्रवर्ती जैन राजा थे। वे मुनिपद में दीक्षित होकर अन्तिम श्रुतकेवली भद्रबाहु के साथ दक्षिण में गये थे। उनके साथ मौर्यवंश के कुछ सद्गृहस्थ भी गये हों और उन्हीं के सन्तानों के नाम पर वहां पर मुरुवंश की स्थापना हुई हो तो कोई आश्चर्य नहीं। यह सम्भावनामात्र है। ऐतिहासिक विद्वानों को इस ओर ध्यान देना चाहिये।

(४) जिस सूत्रधार ने इस विशाल जिनमन्दिर का निर्माण किया था, उक्त लेख से उसका नाम 'स्वलास्य' मालूम पड़ता है। मन्दिर को इस लेख में महाश्वेत सुन्दर वितान कहा गया है। मालूम पड़ता है कि इसका निर्माण सफेद संगमरमर से हुआ हो तो कोई आश्चर्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नहीं। 'वितान' कहने का यह कारण प्रतीत होता है कि इसका मण्डप और ऊपरी भाग अतिविस्तृत रहा होगा।

यह इस लेख का संक्षिप्त विवरण है। यह गोलापूर्व अन्वय द्वारा लगभग महोबा और उसके आस-पास के प्रदेश में पाई जानेवाली जिन-मूर्तियों के पादपीठ पर अंकित लेखों के समय का प्रतीत होता है। इससे इस अन्वय का अस्तित्व इस प्रदेश में आज से कम से कम हजार वर्ष पूर्व तक रहा है यह सिद्ध हो जाता है।

इस अन्वय के सद्गृहस्थ मूल में इसी प्रदेश के निवासी थे या बाहर से आकर उन्होंने इस प्रदेश को अलंकृत किया है, सम्भवतः यह निश्चित करने में इस लेख से कुछ सहायता मिले।

इस प्रतिमा लेख में महासामन्ताधिपति गोल्हणदेव का नाम आया है। बहुत सम्भव है कि उत्तर काल में महासामन्ताधिपति पद का परित्याग कर और मुनि पद अंगीकार करके ये गोल्लाचार्य नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। जैन शिलालेख संग्रह भाग १ लेख क्रमांक ४० में जिन गोल्लाचार्य के विषय में जो यह लिखा है कि 'मूलसंघान्तर्गतनन्दिगण के प्रमुख भेद देशीयगण में एक गोल्लाचार्य हो गये हैं। गृहस्थ अवस्था में ये गोल्लदेश के अधिपति राजा थे। उन्होंने किसी कारण से संसारका परित्याग कर जिन दीक्षा अंगीकार कर ली थी।'' उससे उक्त तथ्यका बहुत अंश में समर्थन होता है। ऐतिहासिक विद्वान् इस पर विचार करें यह आग्रह है।

वैसे सीकर की समाज द्वारा चरित्र धर्मप्रकाश नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है। उसके अन्त में नागौर के ग्रन्थागार से लेकर मूलसंघ नन्दि-आम्नाय की एक पट्टावलि मुद्रित की गई है। उसमें इस पट्ट के आचार्यों में सर्वप्रभम क्रमांक १२ पर गोलापूर्व अन्वय में उत्पन्न हुए गुणनन्दि का नाम आया है। वे वि० सं० ३५३ में पट्टधर आचार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो गये हैं। इसके संकलन का आधार क्या रहा है यह तो अभी प्रकाश में नहीं आया है, पर इससे इतना सुनिश्चित हो जाता है कि इन जातियों का अस्तित्व पुराने काल से चला आ रहा है। उन्हें ८ वीं शताब्दि के बांद की या उसके आसपासकी स्वीकार करना यह कोरी कल्पना मात्र ही है।

दीपावली
ता० १५-११-८२

फूलचन्द्र शास्त्री
वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अपनी बात

मध्य प्रदेश के अंचल में स्थित छतरपुर जिला अपना विशिष्ट स्थान रखता है। विशेषतः पुरातत्त्व एवं कला की दृष्टि से तो निर्विवाद रुप से यह जिला महत्त्वपूर्ण है। मूर्ति एवं स्थापत्य कला का धनी विश्व प्रसिद्ध खजुराहो छतरपुर जिले का ही महत्त्वपूर्ण कला केन्द्र है। इस जिले में पावन भूमि सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, सिद्धक्षेत्र रेशन्दीगिरि (नैनागिरि) ऊर्दमऊ, खजुराहो, अचट्ट, जगतसागर, खटोला, वधा सिमरिया एवं आसपास के स्थानों में कलाकृतियों का अपूर्व संग्रह छिपा पड़ा हुआ है। निश्चित ही ये मूर्तिशिल्प हमारी संस्कृति और इतिहास की अमूल्यनिधि हैं। मूर्ति प्रशस्ति लेखों से तो जातियों का प्रामाणिक इतिहास ही वनता है। छतरपुर जिले के प्रायः उन नगरों में जिनमें जैनसमाज रहती हैं और जैनमन्दिर हैं, उनमें स्थापित जैन मूर्तियों की पाद पीठ पर अंकित प्रशस्ति लेख महत्त्वपूर्ण हैं। ये मूर्ति प्रशस्ति लेख मूर्ति प्रतिष्ठा के समय अंकित किये जाते हैं जिसमें आम्नाय, जातियों वंशों कालक्रम आदि का उल्लेख रहता है और आगे चलकर कुछ वर्षों पश्चात् वे ही लेख इतिहास के आधार वन जाते हैं।

भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष १९७४-७५ में जैन संस्कृति के विकाश तथा यत्रतत्र विखरी हुई पुरातत्त्वीय सामग्री के संरक्षण की योजनायें देशभर में बनायी गई थी। रीवाँ संभाग क्षेत्रीय समिति का मंत्री होने के नाते मैंने भी रीवाँ, पन्ना, सतना, टीकमगढ़, छतरपुर, सीधी और शहडोल जिलों के लिये जो उस समय रीवाँ संभाग में थे, पुरातत्त्व के संकलन, संरक्षण की योजना को अन्तिम रुप दिया जिसमें जैन मूर्तिलेखों, शिलालेखों के संकलन का कार्य भी था। इस योजना के अन्तर्गत कई जिलों में इस तरफ पर्याप्त कार्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्पन्न किया गया। छतरपुर जिला समिति का भी मंत्री होने तथा इस तरफ विशेष रुचि होने के नाते छतरपुर जिले के संकलन का कार्य मैंने किया। सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, सिद्धक्षेत्र रेशन्दीगिरि तथा अधिकांश नगरों में स्वयं जाकर मूर्ति प्रशस्ति लेखों का संकलन किया। संकलित मूर्ति प्रशस्ति लेख निश्चित ही महत्त्वपूर्ण हैं, परन्तु अर्थाभाव तथा समाज द्वारा अपेक्षित, अनुकूल सहयोग प्राप्त न हो सकने के कारण इन्हें उस समय प्रकाशित नहीं कर पाया। इसी बीच मार्च १९८० में रीवाँ विश्वविद्यालय के तत्त्वावधान में श्री डॉ० नन्दलाल जी अध्यक्ष विज्ञान संकाय शासकीय महिला महाविद्यालय रीवाँ के संयोजकत्त्व में जैन विद्या संगोष्ठी का आयोजन किया गया। उसमें छतरपुर जिले के जैनमूर्ति लेख, जो मेरे पास संकलित थे पर श्री डॉ० प्रो० वीरेन्द्र कुमार जी संस्कृत विभाग महाराजा महाविद्यालय छतरपुर ने शोध निवन्ध लिखा और संगोष्ठी में पढ़ा गया। उस संगोष्ठी में इन मूर्ति लेखों के महत्त्व का मूल्यांकन किया गया। संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों ने एक मत से इस प्रकार के प्रशस्ति लेखों के प्रकाशन की आवश्यकता महसूस की। उसी समय से मेरे मन में इस अमूल्यनिधि को प्रकाशित करने का विचार था।

छतरपुर नगर में स्थित ५ विशाल जिनालय, चैत्यालय, डेरा पहाड़ी, जिलाध्यक्ष कार्यालय के समीप स्थित प्राचीन जैनमन्दिर, शिखर टौरिया आदि इस बात के प्रमाण हैं कि लगभग ३०० वर्ष पूर्व छतरपुर नगर में जैन समाज पर्याप्त संख्या में थी तथा समृद्ध और प्रभावशाली रही हैं। यही कारण रहा है कि छतरपुर के जिनालयों में स्थापित समोशरण में मूर्ति प्रशस्तियों से छतरपुर में १४ पंचकल्याणक प्रतिष्ठायें सम्पन्न होने का उल्लेख ,मिलता है। काल के प्रभाव के कारण व्यापार की स्थिति खराब होने लगी होगी और यहाँ के अधिकांश धन सम्पन्न व्यक्ति अन्यत्र जाकर बस गये होंगे। आज भी यहाँ के पूर्व निवासी जबलपुर, अमरावति, सागर, नागपुर आदि बड़े बड़े नगरों में विद्यमान हैं। उस समय जैन समाज की संख्या कम होने के कारण कुछ मन्दिरों

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

से समोशरण उठाकर श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में विराजमान कर दिया। जिलाध्यक्ष कार्यालय के समीप स्थित प्राचीन जैन मन्दिर जिसमें वर्तमान में महाराजा क्लब है उसी परिस्थिति में खाली किया गया होगा। इस मन्दिर की वि० सं० १८३९ में प्रतिष्ठा की गयी थी। क्योंकि इसमें विराजमान विशाल समोशरण की मूर्तियों में वि० सं० १८३९ के प्रशस्ति लेख अंकित हैं। इसी तरह चैत्यालय जिसमें पहले तारणपंथी शास्त्र पूजा करते थे बाद में मूर्ति पूजक हो जाने के कारण वहाँ मूर्ति स्थापित की गई और वाद में चैत्यालय की हालत खराब होने के कारण वहाँ का भी सभी समोशरण वड़ा मन्दिर में स्थापित किया गया। वर्तमान में छतरपुर नगर में ५ विशाल जिनालयों में एवं डेरा पहाड़ी पर समोशरण विराजमान है।

छतरपुर में श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में समोशरण बहुत अधिक हैं क्योंकि यहाँ जिलाध्यक्ष कार्यालय के समीप स्थित प्राचीन जिनालय एवं चैत्यालय का भी समोशरण है। श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर में २२६ जिन प्रतिमायें हैं जिनमें १८७ प्रतिमाओं में प्रशस्ति लेख हैं। श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) में १५२ मूर्तियाँ हैं जिनमें १०१ में प्रशस्ति हैं। श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जोधावाई) में ३८ मूर्तियों में २४ मूर्तियों में प्रशस्ति, नया मन्दिर में ३५ मूर्तियों में २२ मूर्तियों में प्रशस्ति, पार्श्वनाथ मन्दिर हटवारा में १९ मूर्तियों में ८ में प्रशस्तियाँ तथा डेरा पहाड़ी पर ३ जिनालयों में ४ मूर्तियाँ स्थापित हैं सभी में प्रशस्तियाँ हैं। जिनमें २ प्राचीन खण्डित हैं परन्तु ११४९ की प्रशस्ति हैं। छतरपुर के जिनालयों में स्थापित मूर्तियों में ३४७ मूर्तियों में प्रशस्तियाँ हैं जिसमें छोटी पीतल की बहुत सी मूर्तियों में तो मात्र प्रतिष्ठा सम्बत् ही अंकित है। मूर्ति लेखों से पर्याप्त जानकारी प्राप्त होती है।

छतरपुर के जिनालयों में स्थापित जिनबिम्बों के लेखों से महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री प्राप्त होती है। वि० सं० १०२५ से १९९६ तक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

की प्रतिष्ठित मूर्तियाँ यहाँ विराजमान है। सं० १५४२, १५४८, १५४९, १५५२, १५५४ में प्रतिष्ठित अधिकांश मूर्तियाँ दक्षिण भारत में शाह जीवराज पापड़ीवाल द्वारा जिनचन्द्र भट्टारक के निर्देशन में प्रतिष्ठित मूर्तियाँ हैं। ये मुर्तियाँ भारत के प्राय: सभी जिन मन्दिरों में स्थापित हैं इससे यह पता चलता है कि जीवराजपापड़ीवाल ने कई हजार मूर्तियों का निर्माण कराकर उन्हें प्रतिष्ठित कराया है तथा भारत के प्राय: जिन मन्दिरों में विराजमान कराया है। इसके अलावा जो मूर्तियों के लेख हैं उनसे निश्चित ही महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती है।

यहाँ एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि जैन मूर्तिकला का धनी विश्व प्रसिद्ध खजुराहो के विकाश की विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत जैनमूर्ति शिल्प, पुरातत्त्व एवं संस्कृति को प्रकाश में लाने के लिये संग्रहालय, पुस्तकालय की स्थापनाकर शोध संस्थान के रूप में विकसित करने की योजना श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र खजुराहो प्रबन्ध समिति की है। प्रशन्नता की बात है कि साहू जैन ट्रष्ट देहली के सहयोग से साहू शान्ति प्रसाद जैन कला संग्रहालय का निर्माण प्रारंभ हो गया है और वर्द्धमान पुस्तकालय एवं वाचनालय की स्थापना भी की जाचुकी है। मूर्तिलेखों का संकलन और अध्ययन इसी की एक प्रवृत्ति है और भविष्य में यहाँ से महत्त्वपूर्ण शोध सामग्री प्रकाशित की जावेगी।

प्रस्तुत प्रकाशन में छतपुर नगर के जिनालयों की मूर्ति प्रशस्ति लेखों का संकलन है। कालक्रम के अनुसार प्रशस्ति लेखों को रखा गया है। प्रशस्ति लेखों के साथ मूर्ति का आसन वर्ण का भी उल्लेख है। इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन का श्रेय श्री दिगम्बर जैन बड़ामन्दिर छतरपुर के व्यवस्थापक श्री सिंघई ज्ञान चन्द्र जी को है। जिन्होंने उदारतापूर्वक इस प्रकाशन के लिये श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर से प्रकाशित करने की स्वीकृति दी। यहाँ यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि श्री दिगम्बर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर की देखरेख और व्यवस्था का कार्य सिघर्य जी का परिवार ही लगभग ६० वर्ष से करता आ रहा है। इसके पूर्व श्री सि० दौलतराम जी व्यवस्था करते रहे हैं। उनके पश्चात् सिंघई ज्ञान चन्द्र जी यह तो वंश परम्परा के अनुसार व्यवस्था थी। संन् १९७५ में मैंने प्रयास कर जैन समाज छतरपुर का पंजीयन मध्य प्रदेश शासन फर्म्स एवं संस्थायें से कराकर यहाँ के सभी मन्दिरों की व्यवस्था जैन समाज छतरपुर के अन्तर्गत की जाने लगी और प्रति दो वर्ष में चुनाव पद्धति से व्यवस्थापकों का निर्वाचन किया जाने लगा। उस व्यवस्था के अन्तर्गत भी दिगम्बर जैन बड़ामन्दिर के व्यवस्थापक श्री सिघई ज्ञानचन्द जी वर्तमान में भी हैं। मैं उनकी इस साहित्य प्रकाशन की अभिरुचि की प्रशंसा करता हूँ।

मूर्ति लेखों की उपयोगिता तो जैन सिद्धान्त के विद्वान सिद्धान्ताचार्य माननीय पं० फूलचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री वाराणसी की प्रस्तावना से प्रगट होगी। पूज्य पं० जी की ही प्रेरणा से निश्चित ही यह प्रकाशन भी संभव हो सका है। मूल प्रेरणास्त्रोत के साथ ही प्रस्तावना लिख कर पूज्य पं० जी ने इस पुस्तक की उपयोगिता को बढ़ायाहै निस्संदेह इसका सम्पूर्ण श्रेय पं० जी को ही है मैं तो एक निमित्त मात्र हूँ। प्रकाशन के लिये सुझाव एवं मार्ग दर्शन के लिये माननीय डॉ० दरबारी लाल जी कोठिया न्यायाचार्य वाराणसी, डॉ० प्रो० वीरेन्द्रकुमार जी संस्कृत विभाग महाराजा महाविद्यालय छतरपुर का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ।

श्री शील चन्द्र जी एवं श्री ऋषभकुमार जी शास्त्री द्रोणगिरि का जिन्होंने मुझे इस कार्य में सहयोग किया है का आभारी हूँ। तारा प्रिंटिंग वर्क्स वाराणसी के मालिक श्री रमाशंकर जी पाण्डेय का मधुर व्यवहार एवं तत्परता से यह कार्य समय पर सुन्दर ढंग से सम्पन्न हुआ इसके लिये वे स्वयं तथा उनके कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छतरपुर में श्री दिगम्बर जैन बड़ामन्दिर, चौधरी मन्दिर एवं जोधावाई मन्दिर में हस्तलिखित शास्त्रों का भी भण्डार है जिसमें अधिकांश जैन पूजापाठ संग्रह है कुछ शास्त्र भी हस्तलिखित हैं। भविष्य में उनकी सूची प्रकाशित करने का प्रयाश भी है।

प्रस्तुत प्रकाशन में सावधानी रखने पर भी त्रुटियाँ रह जाना असंभव नहीं जिसके लिये मैं क्षमा प्रार्थी हूँ तथा विद्वानों, मनीषियों, शोधार्थियों, इतिहास और संस्कृति के प्रेमी विद्वानों के लिये यह पुस्तिका समालोचनार्थ प्रस्तुत है। आशा है इसे समादर प्राप्त होगा और भावी प्रकाशन के लिये प्रोत्साहन मिलेगा इस आशा के साथ एक बार पुनः सहयोगियों के प्रति आभार मानता हुआ विराम लेता हूँ विज्ञेषु किम्।

श्रुतपंचमी
२७ जून १९८२
वी० नि० सं० २५०८

कमल कुमार जैन
सम्पादक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जैन इतिहास संस्कृति के स्रोत मूर्तिलेख

जैन इतिहास, संस्कृति के इतिहास के निर्माण में मूर्ति प्रशस्ति लेखों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इन मूर्ति लेखों से तत्कालीन सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति का पता चलता है। ये मूर्ति लेख वे लेख हैं जबमूर्तियों में प्राण प्रतिष्ठा की क्रिया द्वारा देवत्त्व की स्थापना की जाती है उस समय मूर्ति प्रशस्ति अंकित की जाती है जिसमें प्रतिष्ठा सम्वत प्रतिष्ठा कारक, आम्नाय का उल्लेख तो रहता ही हैं राज्यवंशो का उल्लेख भी किया जाता है। कालान्तर में यही मूर्ति प्रशस्ति लेख इतिहास के जानने के साधन बनते हैं और इनसे किसी जाति, राजवंश, धर्म का क्रमबद्ध इतिहास बनाया जाता है। मूर्तिपूजा का प्रारंभ मिट्टी, बालू की मूर्तियों के निर्माण से प्रारंभ होती हैं और धीरे-धीरे जैसे-जैसे कला का विकाश होता जाता है वैसे वैसे पाषाण, धातुओं की मूर्तियों का निर्माण होना प्रारंभ होता है। पाषाण और धातुओं की मूर्तियां चूकि स्थायी होती थी अतः पाद-पीठ (आसन) में मूर्ति प्रतिष्ठा कारकों द्वारा लेख अंकित किये जाने लगे। प्रारंभ में जब इतिहास का लिखना प्रारंभ हुआ तो इसी प्रकार के मूर्ति शिलालेखों से महत्त्वपूर्ण जानकारियां हुई और इनके आधारपर इतिहास की रचना करने में इतिहासकारों को महत्त्वपूर्ण योगदान प्राप्त हुआ। भारत वर्ष में प्रायः ये लेख जैन मूर्तियों में ही प्राप्त होते हैं। इन मूर्ति लेखों की बहुत लम्बी परम्परा हैं। छतरपुर जिले में जहां जहां भी जैन मन्दिर हैं उनमें स्थापित मूर्तियों में ये लेख पाये जाते हैं। श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि, रेशन्दीगिरि, श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्रखजुराहो में स्थापित प्रायः मूर्तियों में इस प्रकार की प्रशस्तियां अंकित हैं। मूर्तियों में अंकित ये प्रशस्ति लेख ९ वी. १० वी. शदी से

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तो खूब मिलते हैं इसके पूर्व की मूर्तियों में कम लेख मिलते हैं। इससे यह अनुमान लगता है कि इसके पहले मूर्तियों की प्रतिष्ठा के समय लेख उत्कीर्ण करने की परम्परा नहीं होगी। छतरपुर के जिनालयों में स्थापित मूर्तियों में १० वी शदी से प्रशस्ति लेखों की परम्परा मिलती है।

मूर्ति लेखों के महत्त्व को ध्यान में रखते हुये छतरपुर नगर के ५ जिनालयों में स्थापित विशाल समोशरण की मूर्तियों के प्रशस्ति लेखों के संग्रह के आधार पर निम्न जानकारी प्राप्त होती है :—

आम्नाय

जैन मूर्तियों की प्रतिष्ठायें प्राय: किसी न किसी आम्नाय से होती हैं छतरपुर के जिनालयों तथा छतरपुर जिले के तीर्थंक्षेत्रों (द्रोणगिरि, रेशन्दीगिरि, खजुराहो)' में स्थापित सभी मूर्तियों की प्रतिष्ठायें कुन्द-कुन्दाचार्य के आम्नाय से की गई हैं। इसके साथ ही मूलसंघ, वलात्कार-गण सरस्वति गच्छ का उल्लेख प्राय: मूर्तियों के लेखों हैं। कुछ मूर्ति लेखों में काष्ठासंघ[1] का भी लेख है। काष्ठासंघ के साथ नन्दितट गच्छ, विधागण का भी उल्लेख है। न्यू जनगत गच्छ[2] का उल्लेख भी प्राप्त होता है। कुछ मूर्ति लेखों में देवसेन संघ[3] भी मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये भट्टारकों की आम्नाय से सम्बन्धित है।

जातियों का इतिहास

मूर्तिलेखों से जातियों के इतिहास पर भी प्रकाश पड़ता है। जातियों में वंश, मूर गोत्र आदि का उल्लेख मिलता है। अन्वय के रूप में मूर्ति लेखों में जातियों का ही उल्लेख होता है यथा गोलापूर्वान्वये,

---

१. देखिये मूर्ति लेख १२,२१,२०५।
२. देखिये मूर्ति लेख २८१।
३. देखिये मूर्ति लेख २६६।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परवारान्वये, आग्रोत कान्वये, गोलाराज आदि गोलापूर्वान्वये से गोलापूर्वजाति परवारान्वये से परवार जाति, आग्रोतकान्वये से अग्रवाल गोलाराज से जाति गोलालारे का सम्वन्ध है। छतरपुर के जिनालयों में प्रायः उपरोक्त जातियों द्वारा प्रतिष्ठापित मूर्तियाँ है। वि. सं. ११४९ की डेरा पहाड़ी जैनमन्दिर में स्थापित प्राचीन जैनमूर्ति शान्तिनाथ सुपार्श्वनाथ की गोलापूर्वान्वय की हैं। चौधरी दिगम्बर जैन मन्दिर में स्थापित विशाल भगवान नेमिनाथ श्यामपाषाण को मूर्ति वि. सं. १२०२ की भी गोलापूर्वान्वय की हैं यह मूर्ति छत्तरपुर नगर से ७ किलोमीटर दूर जगत सागर तालाव के किनारे निर्मित जैनमन्दिर से लायीगई थी इससे यह पता चलता है कि पूर्व में यहाँ जैन समाज रही होगी वर्तमान में यहाँ कोई भी नहीं है। यहाँ प्रायः मूर्तिलेखों में अधिकतर परवारान्वय की मूर्तियाँ हैं इन मूर्तिलेखों में कई पीढ़ियों का उल्लेख भी मिलता है।

महिलाओं की स्थिति

मूर्ति प्रशस्ति लेखों में पुरुषों के साथ महिलाओं का भी नाम मिलता है इससे यह पता चलता है कि महिलायें धार्मिक प्रवृत्ति की तो पहले से ही रहीं हैं उन्हे धार्मिक कार्यों में समानदर्जा भी प्राप्त था, और मूर्ति स्थापना जैसे महत्त्वपूर्ण कार्य उनके द्वारा सम्पन्न होते थे।

राजवंशों का उल्लेख

मूर्ति प्रतिष्ठा के समय प्रायः जिस राजा का राज्य होता था उसके लिखने की भी परम्परा थी इससे तत्कालीन राजवंशों के इतिहास उनकी धार्मिक सद्भावना का पता चलता है। इन मूर्तिलेखों में पाहल राजवंश, हमीरदेव, माड्र्यसिह, छत्रसाल आदि राजाओं का उल्लेख है।

भट्टारकों की परम्परा

छतरपुर के जिनालयों में स्थापित मूर्तियों के लेखों में भट्टारकों का नाम बहुत आया है। भट्टारकों का कार्य मूर्ति प्रतिष्ठायें शास्त्रों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रचना करना आदि प्रमुख कार्य रहे हैं। वि० सं० १२०३ से १८३९ तक की प्रतिष्ठाओं में भट्टारकों के उल्लेख हैं और इसके आधारपर भट्टारकों की परम्परा का निर्धारण किया जा सकता है। मूर्तिलेखों में भट्टारकों की कई शिष्य परम्परा का उल्लेख हैं इसके साथ ही क्षुल्लिकाओं आर्यिकाओं का भी उल्लेख मूर्तिलेखों में हैं मूर्ति प्रशस्ति-लेखों में देवसेनसंघ, काष्ठासंघ गच्छ में सरस्वती गच्छ नन्दीतटगच्छ, न्यू जनगतगच्छ, तथा गणों में बलात्कारगण भट्टारकों की आम्नाप से सम्बन्धित है।

धार्मिक जागरूकता एवं सम्पन्नता

विशाल समोशरण इसबात के द्योतक हैं किपूर्व में धार्मिक जागरण था और समाजसम्पन्न थी। छतरपुर नगर में ही अकेले विभिन्न समयों में १४ वार पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं का उल्लेख मिलता हैं। ये प्रतिष्ठायें वि० सं० १८१८, १८३९, १८९९, १९००, १९०७, १९१४, १९१७, १९२८, १९३२, १९३७, १९३९, १९४३, १९७९, १९८०, में सम्पन्न हुई हैं। एक प्रतिष्ठा में कितना अधिक द्रव्य लगता हैं यह हम सभी जानते हैं फिर जहां १४-१४ प्रतिष्ठायें हो उसकी सम्पन्नता और वहां की धार्मिक भावना का कहनाही क्या है। निश्चितही वि० सं० १८१८ से वि० सं० १९८० तक का समय छतरपर नगर में जैन धर्म की प्रभावना और जैन समाज की सम्पन्नता का समय रहा है।

प्रतिष्ठाओं का समय

प्राय: जिन बिम्ब प्रतिष्ठाओं जैसे विशाल धार्मिक आयोजन शुभ मुहूर्त में ही होते हैं और प्राय: ये शुभ मुहूर्त माघ, फाल्गुन, वैशाख में ही होते हैं परन्तु यहां प्राप्त मूर्ति लेखों से यह बात निर्मूल हो गयी कि इन धार्मिक आयोज़नों के लिये भी मूहूर्त की प्रतीक्षा होती है धार्मिक आयोजन चूंकि शुभ आयोजन ही हैं अत: जब सम्पन्न हो तभी शुभ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूहुर्त है इसी से यहां की मूर्तियों के लेखों में आषाढ़, जेष्ठ, अगहन माह में प्रतिष्ठायें सम्पन्न हुई हैं इसका उल्लेख मिलता है।

विशेष दृष्टव्य

छतरपुर के जिनालयों में स्थापित मूर्तियों के लेखो से जहां महत्वपूर्ण ऐतिहासिक सामग्री उपलब्ध होती हैं वहां कुछ ऐसे भी उल्लेख मिलते हैं जिनका कहीं लेख नहीं है इसमें उसके सम्बन्ध में जाननेकी जिज्ञासा होना स्वाभाविक है।

कलशवर्ष

चौधरी दिगम्बर जैन मन्दिर में वि० सं० ११४७ की प्रतिष्ठित मूर्तिया "सं० ११४७ कलशवर्ष एकसर ३ वायाराज.........अंकित है। सं० ११४७ कलशवर्ष से क्या मतलव है यह समझ में नहीं आया। अधिक संभव है कि प्रतिष्ठा के समय मन्दिरका कलशारोहण हुआ है। और उसवर्षको कलशवर्ष के रूप में उल्लेख किया हो अथवा वि० सं० ११४७ में कलश नामसे कोई राजा का राज्य रहा हो लेकिन कलशराजा का वि० सं० ११४७ में कहीं नाम मिलता नहीं है अतः इस कलशवर्ष के उल्लेख से मुझे तो प्रथम तर्कही युक्तिसंगत मालूम होता हैं। वास्तविकता की जानकारी हेतु प्रयाशरत हूं। इतिहासकारकों को यदि इस तारतम्य में कलशवर्ष का औचित्य प्राप्त हो तो उसकी जानकारी मिलनी चाहिये।

प्राकृतचक्रवर्ती माणिक्यनन्दी

नया मन्दिर मूर्ति प्रशस्ति लेख में प्राकृतचक्रवर्ती माणिक्यनन्दी का उल्लेख है। यह प्राकृत चक्रवर्ती किस माणिक्य नन्दी का विशेषण है इसके सम्बन्ध में जानकारी होनी चाहिये क्योंकि परीक्षामुख के लेखक माणिक्य नन्दी के साथ इस प्रकार का विशेषण देखने में नहीं आया यह मूर्तिप्रशति लेख वि० सं० १२०२ का है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिकाली पण्डित

नयामन्दिर की ही उपरोक्त प्रशति में "गुनावाला पण्डित त्रिकाली पण्डित का भी उल्लेख हैं संभवतयः तीनों कालों का ज्ञाता होने के कारण त्रिकाली पण्डित उपाधि हो इस सम्बन्ध में भी देखना चाहिये।

निश्चितही मूर्ति प्रशस्ति लेख इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री हैं और इससे जैन इतिहास, संस्कृति का पता तो चलता ही है भारतीय इतिहास के निर्माण में महत्त्वपूर्ण स्थान है। इतिहास के विद्वान, शोध छात्रों के लिये यह महत्त्वपूर्ण सामग्री हैं जिसका समादर होगा इस आशा के साथ।

श्रुतपंचमी
२७ जून १९८२

कमलकुमार जैन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छतरपुर के जिनालय

कमल कुमार जैन

छतरपुर नगर जिसकी स्थापना महाराजा छत्रसाल ने की थी, बुन्देलखण्ड में अपना विशेष महत्त्व रखता है। इस नगर में सभी सम्प्रदाओं के लोगों का निवास है। जैन हिन्दू मन्दिरों के साथ ही मुस्लिम सम्प्रदाय की मस्जिदें, सिक्खों के उपासना गृह गुरु द्वारा, इशाई धर्मावलम्बियों की उपासना के लिये गिरजाधर आदि हैं। नगर के मध्य में ५ जिनालय, पन्ना नाके के समीप सुन्दर पहाड़ी पर श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र डेरा पहाड़ी जहाँ ३ विशाल जिनालय, नगर पालिका परिषद के समीप जिलाध्यक्ष कार्यालय के पास एक विशाल जिनालय तथा चैत्यालय आदि तो इस बात के प्रमाण हैं कि पहले समय में यहाँ जैन सम्प्रदाय के लोग पर्याप्त मात्रा में निवास करते थे और वे प्रायः सम्पन्न थे तभी तो इतने विशाल धर्मायतनों का निर्माण हुआ है। संक्षिप्त रुप से नगर के सभी जिनालयों का परिचय निम्न प्रकार है—

१. श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर

नगर के मध्य वजरिया मार्ग में स्थित बड़ा मन्दिर के नाम से प्रसिद्ध जिनालयों में विशाल जिनालय है। इसे पंचायती जिनालय के नाम से जानते हैं। इस जिनालय में ५ वेदियाँ हैं तथा ३ शिखर हैं। वेदियों का निर्माण विभिन्न व्यक्तियों ने कराया है। मन्दिर का प्रवेश द्वार पश्चिम मुख हैं वेदियों के कारण मन्दिर चतुर्मुखी हैं इस जिनालय में वेदी निर्माण इस क्रम से हुआ है कि दर्शनार्थी बायीं तरफ से दर्शन प्रारंभ कर विना पुनरावृत्ति के पूर्ण वन्दना करता है। इस जिनालय का वेदीक्रम इस प्रकार है :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदी क्रमांक १

जिनालय में प्रवेश करते ही बायी तरफ से इस वेदी का प्रारंभ होता है। इस वेदी पर विशाल समोशरण स्थापित हैं। पाषाण की ७ विशाल एवं २१ छोटी, धातु की ९१ तथा १ मेरु और प्राचीन पाषाण की ९ कुल १३० जिन विम्बों का समोशरण इस वेदी पर स्थापित है। वेदी उत्तर पश्चिम मुख है। श्री भरोसे लाल सुरेन्द्र कुमार जैन नद गाँव निवासी ने अपने न्यायोपात्त द्रव्य से इस वेदी को टाईल्स से सुसज्जित किया है। जिन बिम्बों की सुरक्षा हेतु चेनल गेट लगे हुये हैं।

वेदी क्रमांक २, पार्श्वनाथ स्वामी

इस वेदी पर मूल नायक भगवान पार्श्वनाथ की श्यामपाषाण सातिशय विशाल मूर्ति के स्थापित होने के कारण पार्श्वनाथ स्वामी की वेदी कहलाती है। इस वेदी के निर्माण में बड़कुल वंश का योगदान रहा है। पाषाण की ३ विशाल, १३ छोटी एवं धातु की १८ तथा प्राचीन देशी पाषाण की ६ मेरु १ इस प्रकार ३६ जिन विम्बों का समोशरण इस वेदी पर स्थापित है। वेदी पश्चिम मुख हैं। जिन विम्बों की सुरक्षा हेतु वेदी पर चेनल गेट लगे हुये हैं।

वेदी क्रमांक ३

जिनालय की तृतीय वेदी का निर्माण सिंघई घराने वालों द्वारा कराया गया है। पाषाण की ३ विशाल एवं धातु की ८ कुल ११ जिन बिम्बों का समोशरण इस वेदी पर स्थापित है वेदी पूर्व मुख है।

४. वेदी क्रमांक ४, महावीर स्वामी

महावीर स्वामी की मूल नायक प्रतिमा होने के कारण इस वेदी को महावीर स्वामी की वेदी कहते हैं। वेदी का निर्माण वोवद, दमरु सिंघई ने कराया है। यह दक्षिण पश्चिम मुख है। पाषाण की बड़ी ६,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छोटी १२ धातु की ३५, प्राचीन देशी पाषाण की ३ मेरु दो कुल ५६ मूर्तियों का समोशरण इस वेदी पर विराजमान हैं। वेदी दोनों तरफ से काँच से बन्द हो जाती है।

वेदी क्रमांक ५, आदिनाथ स्वामी

जिनालय की यह अन्तिम वेदी है। इस वेदी का निर्माण रानीपुर वालों ने कराया है। वेदी पर श्यामपाषाण आदिनाथ स्वामी की मूर्ति वि० सं० १९७८ की प्रतिष्ठित स्थापित है इसके अलावा धातु की ४ कुल ५ जिन बिम्बों का समोशरण वेदी पर स्थापित है।

इस जिनालय में स्वाध्याय के लिये एक दहलान है। जिसमें जैन कथाओं पर आधारित कथा चित्र आईल पेन्ट से बने हुये हैं। ये चित्र कला की दृष्टि से तो महत्त्वपूर्ण हैं ही पुरातत्त्व की वस्तु भी हैं। इस मन्दिर की व्यवस्था, जीर्णोद्वार, निर्माण आदि की व्यवस्था हेतु मुख्य बाजार में दुकानें हैं जिनके किराये से मन्दिर की व्यवस्था होती है। मन्दिर में हस्तलिखित शास्त्र भण्डार भी पर्याप्त मात्रा में है। पूर्व में इस मन्दिर की व्यवस्था का दायित्व श्री सिं० दौलतराम जी पर था उनके स्वर्गवास के बाद श्री सिं० ज्ञानचन्द्र जी ने कार्य सँभाला। वर्तमान में जैन समाज छतरपुर पंजीकृत संस्था होने के कारण प्रति दो वर्ष में व्यवस्थापक का चुनाव समाज करती है वर्तमान में समाज द्वारा निर्वाचित व्यवस्थापक श्री सिं० ज्ञानचन्द्र जी हैं। इस मन्दिर को सार्वजनिक न्यास के रुप में रजिस्टर्ड कराने की कार्यवाही चालू है।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी जी)

नगर के मध्य में मेनरोड पर कोतवाली के समीप स्थित यह जिनालय यहाँ के सभी जिनालयों से प्राचीन जिनालय है मन्दिर शिखर बन्द है इसकी शिखर जैसे जैसे ऊपर गये हैं पतले होते गये हैं देखने में दर्शनीय है। मन्दिर में ६ वेदियाँ हैं। दर्शन का क्रम इस प्रकार हैं—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदी क्रमांक १, पार्श्वनाथ स्वामी

मन्दिर में प्रवेश करते ही स्वच्छ जल से पाद-प्रक्षालन करते हुये जैसे ही वायी तरफ से सर्वप्रथम पार्श्वनाथ स्वामी की वेदी जिस पर वि० सं० १९३७ की प्रतिष्ठित पार्श्वनाथ स्वामी की मूर्ति मूल नायक के रुप में स्थापित है, से वन्दना प्रारंभ होती हैं। वेदी पर पाषाण की १३, धातु की ७ देशी पाषाण की १४ कुल ३४ जिनबिम्वों का समोशरण स्थापित है।

वेदी क्रमांक २

इस वेदी पर दीवाल में कल्पवृक्ष का निर्माण मन्दिर के पूर्व व्यवस्थापक चौ० माणिकचन्द्र जी की सूझवूझ का परिणाम है। वेदी पर पाषाण की ५ और प्राचीन पाषाण की २ कुल ७ जिन बिम्वों का समोशरण स्थापित है।

वेदीक्रमांक ३ नेमीनाथ स्वामी

जिनालय की यह प्रमुख वेदी है। ५६ इन्च विशाल सातिशय श्यामपाषाण पद्मासन भगवान नेमीनाथ की मूर्ति स्थापित होने के कारण यह वेदी प्रभावक हैं इसके साथही वेदी पर पाषाण की १६ धातु की ७३ कुल ८९ जिन बिम्बों का समोशरण स्थापित है। वेदी भगवान नेमीनाथ स्वामी की विशालमूर्ति के अनुरूप नहीं हैं। जिसपर विचार करना चाहिये।

वेदीक्रमांक ४ महाबीर स्वामी

भगवान महावीर स्वामी के मूलनायक होने के कारण इसवेदी को महाबीर स्वामी के नाम से पुकारते हैं। इसवेदी का निर्माण देवेन्द्र नगर वर्तमान सतना निवासी श्री हजारीलाल भागचन्द्र जैन ने कराया था। वेदी का जीर्णोद्धार श्री बाबूलाल अरुणकुमार जमोरया महाबीर प्रेश वालों ने कराया। वेदी पर धातु की ४ पाषाण की ३ कुल ७ जिन बिम्बों का समोशरण स्थापित है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्रीभगवान नेमीनाथजी (ऊ० ५६, चौ० ५२ इंच)
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) छतरपुर (म० प्र०)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वेदीक्रमांक ५ आदिनाथ स्वामी

इसवेदी का निर्माण मिठैनी बाई नामक महिला ने अपने न्याय से उपार्जित द्रव्य से कराया मूल नायक धातु की आदिनाथ स्वामी की मूर्ति स्थापित है। इस मन्दिर के वर्तमान व्यवस्थापक श्री चौ० ज्ञानचन्द्र रतनचन्द्र जी की मातेश्वरी श्रीमति लाड़लीबाई ने अपने द्रव्य से इसवेदी का जीर्णोद्धार एवं कांच से सुसज्जित कराया है। उल्लेखनीय है कि इसवेदी का निर्माण, जीर्णोद्धार एवं सजावट में महिलाओं का ही योगदान रहा है।

वेदीक्रमांक ६ पार्श्वनाथ स्वामी

इस जिनालय की वन्दना प्रथम वेदी पार्श्वनाथ से प्रारम्भ होती है और अन्तिम वेदी पार्श्वनाथ स्वामी की वन्दना के साथ समाप्त होती है। वेदी का निर्माण बुद्धदलाल ने कराया था। वेदी पर पाषाण की ९ धातु की ५ कुल १४ जिनविम्वों का समोशरण स्थापित है। इसी मन्दिर में आईल पेन्ट से जैन कथाओं पर आधारित सुन्दर चित्र बने हुये हैं।

मन्दिर में स्वाध्याय कक्ष के लिये दहलान है समीप में ही सम्मेद शिखर की अधूरी रचना पड़ी हैं। मन्दिर में हस्त लिखित ग्रंथों का भण्डार है। मन्दिर की पूजन व्यवस्था जीर्णोद्धार निर्माण आदि के लिये अचल सम्पत्ति हैं तिमंजिला भवन मन्दिर के पास ही स्थित है जिसमें नीचेके भाग में दुकानें और दोमंजिल में छतरपुर जिला केन्द्रीय,सहकारी बैंक है जिसके किराये से मन्दिर की व्यवस्था आदि का कार्य चलता है। इस मन्दिर की बहुत समय तक श्री चौ० मणिक चन्द्र जी व्यवस्था करते रहे हैं उन्होंने अपने कार्यकाल में दुकानें भवन आदि बनवाकर मन्दिर के लिये स्थायी अचल सम्पत्ति तैयार कर दी हैं मन्दिर के विकाश में इनका बहुत बड़ा योगदान रहा है। वर्तमान में समाज द्वारा निर्वाचित श्री चौ० ज्ञान चन्द्र रतन चन्द्र जी इस मन्दिर के व्यवस्थापक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हैं जिन्होंने अपने अल्पकाल में ही मन्दिर के सौन्दर्यंकरण में महत्वपूर्ण कार्य किया है और रुचिके साथ मन्दिरकी व्यवस्था कर रहे हैं।

यहाँ एक वात विशेष उल्लेखनीय हैं वह यह कि इस मन्दिर को आमतौर पर चौधरी मन्दिर के नाम से जाना जाता है यह संभवतय: इसलिये है कि इस मन्दिर के निर्माण में जिनके नामके साथ चौधरी उपाधि लगी है व्यक्तियों का योगदान रहा है तथा प्रारम्भ से ही येही लोग इस मन्दिरकी व्यवस्था भी करते आरहे हैं। परन्तु यहबात विचारणीय है कि जिनालय का इस प्रकारका नामकरण कहां तक उचित है। भगवान के जिनालय तो भगवान के नाम से ही प्रसिद्ध होना चाहिये और इसके लिये इस जिनालय में भगवान नेमीनाथ की विशाल पद्मासन प्राचीन वि० सं० १२०२ की मूर्ति स्थापित है अच्छा हो कि उस मूर्ति के नाम पर इस मन्दिर का नामकरण श्री दिगम्बर जैन नेमीनाथ मन्दिर हो। समाजको इस बातपर बिचार करना चाहिये और मन्दिरों की पहिचान तीर्थंकरों के नाम से ही होनी चाहिये।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जोधाबाई)

कोतवाली के पास श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) के सामने यह मन्दिर है इस मन्दिर के निर्माण में श्रीमति जोधाबाई ने अपनी न्याय से अर्जित सम्पत्तिका उपयोग किया है इसीसे इस मन्दिर को जोधाबाई के नाम से जनसाधारण जानता है। मन्दिर पूर्व मुख है तीन वेदिया एक क्रम में हैं। मन्दिर का जीर्णोद्धार हो जाने एवं टाईल लग जाने तथा विशाल दरवाजे होने के कारण मन्दिर की सुन्दरता बढ़ गई है। वेदियों का क्रम निम्न है—

वेदीक्रमांक १ चन्द्रप्रभु

मन्दिर में प्रवेश करते ही बाईं तरफ से वेदी के क्रम में यह प्रथम वेदी है जिसमें चन्द्रप्रभु स्वामी की श्वेत पाषाण जिन विम्ब मूलनायक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्थापित है प्रशास्ति निम्न है "सम्वत् १९०७ अघेणमासे शुभे शुक्ल पक्षे ५ भृगुवासरे प्रतिष्ठित छत्रपुर नगरे श्री मूलसंघे वलात्कारगण सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते .... ।"

वेदीपर पाषाण की १ धातु की ४ कुल ५ जिनविम्वों का समोशाण स्थापित है।

वेदीक्रमांक २ अजितनाथ स्वामी

द्वितीय वेदी इस जिनालय की मुख्य वेदी है। मूलनायक अजितनाथ स्वामीकी श्वेत पाषाण पद्मासन मूर्ति स्थापित है प्रशस्ति इस प्रकार है–

"संवत् १२७२ वर्षे माघसुदी ५ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्रशह वलोवसद् चन्दवर सहा गमरणर्थं श्री श्री श्री राजाराव हमीरदेव वसत्।

इस वेदी पर पाषाण की ९ पीतल की २४ देशी प्राचीन पाषाण की ५ इस प्रकार ३८ मूर्तियों का समोशरण है।

वेदी क्रमांक ३ मेरु

तीसरी वेदी मेरु वेदी है जिसमें पाषाण का मेरु एवं धातु की एक मूर्ति स्थापित है।

मन्दिर के जीर्णोद्धार, पूजन व्यवस्था हेतु ५ दुकानें हैं जिनके किराये से मन्दिर का कार्य चलता है। मन्दिर के व्यवस्थापक श्री पं० पन्नालाल जी है इन्हीं की ससुरालवालों के वंशजों का यह जिनालय है। इस मन्दिर में हस्तलिखित शास्त्रों का संग्रह है। इस जिनालय का नाम भी अजितनाथ जिनालय उपयुक्त होगा।

श्री दिगम्बर जैन नयामन्दिर

वजरिया मार्ग में वड़ा मन्दिर से लगा हुआ यह मन्दिर सबसे बाद में बना होने के कारण नया मन्दिर कहलाता हैं। इस मन्दिर के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निर्माता जवाहरलाल जी के पिता श्री मोतीलाल जी है। श्री जवाहर लाल जी सुप्रसिद्ध विद्वान थे। जिन्होंने पंचकल्याणक विधान, मुक्तागिरि, सम्मेद शिखर आदि पूजाओं की तथा अन्य अनेक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक पदों की रचना की है इनके द्वारा रचित पदों एवं ढारों का संकलनकर श्री सुरेन्द्र कुमार जी ने सम्पादित कर पदावलि के नाम से प्रकाशित किया है। इनका पंचकल्याणक विधान अभी भी अप्रकाशित रचना है।

मन्दिर में तीन वेदियां हैं मन्दिर का जीर्णोद्धार हो जाने के कारण सुन्दर हो गया हैं वेदीक्रम निम्न प्रकार है—

वेदी क्रमांक १ आदिनाथ स्वामी

इस मन्दिर की यह मुख्य वेदी है इसमें आदिनाथ स्वामी की मूर्ति मूलनायक के रूप में स्थापित है प्रशस्ति इस प्रकार है। "संवत् १८८३ चैत सुदी १२ गुरौ को श्री ऋषभनाथ जी की प्रतिमा प्रतिष्ठापितम् श्री बजाज मोतीराम हीरालाल मानिकलाल। इसके अलावा १८९६, १८९९ की मन्दिर निर्माताओं द्वारा प्रतिष्ठित मूर्तियां स्थापित है। इस वेदी पर पाषाण की ७ धातु की २० कुल २७ का समोशरण विराजमान है।

वेदीक्रमांक २

मुख्यवेदी से लगी हुई यह वेदी है इसमें पाषाण की ५ एवं धातु की दो मूर्तियाँ विराजमान हैं।

वेदीक्रमांक ३ मेरु जिनालय

इस मन्दिर की अंतिम वेदी मेरु जिनालय है इसमें पाषाणकी दो तथा धातु की एक कुल ३ मूर्तियां हैं।

इस मन्दिर में स्थापित प्रायः मूर्तियां मन्दिर निर्माताओं की ही है। मन्दिर की पूजन व्यवस्था हेतु बजरिया में दो दुकानें एवं मन्दिर से लगी ३ दुकानें हैं। वर्तमान में मन्दिर व्यवस्थापक श्री लालचन्द्र जी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

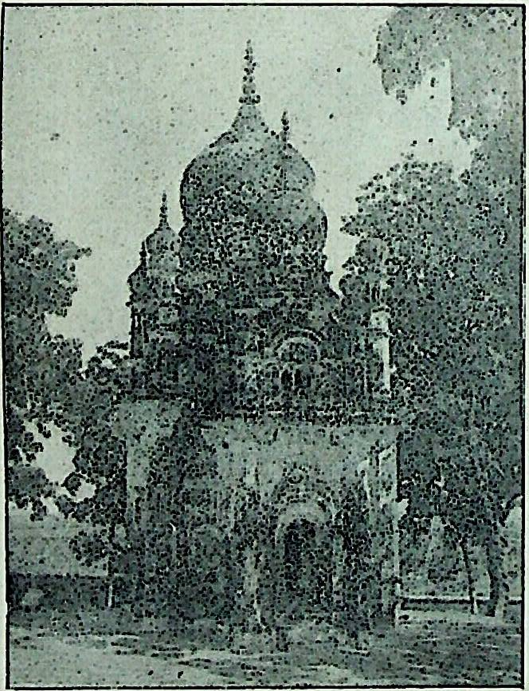

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर डेरा पहाड़ी, छतरपुर

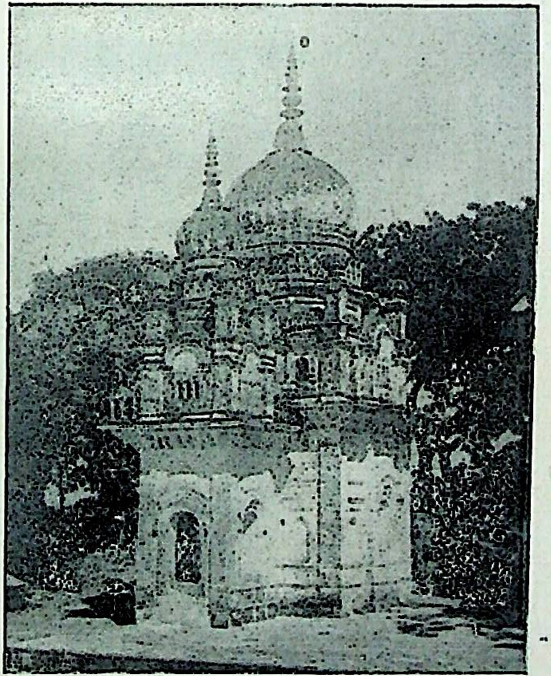

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर डेरा पहाड़ी, छतरपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

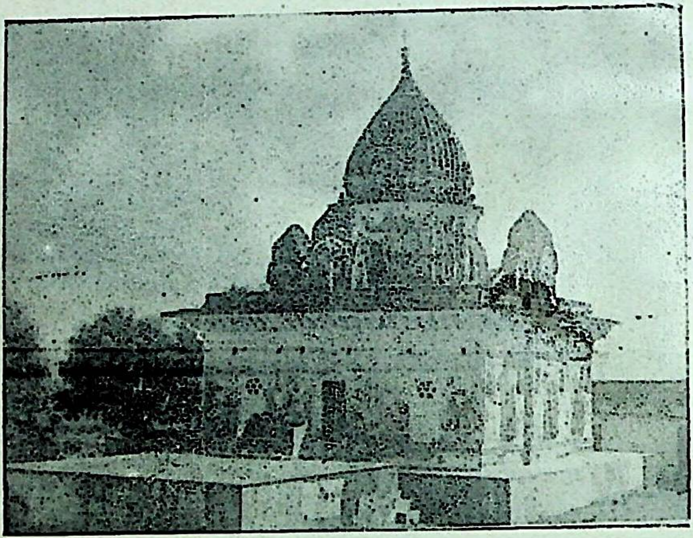

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर डेरा पहाड़ी, छतरपुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पार्श्वनाथ जिनालय

हटवारा मुहल्ले में मुख्य मार्ग पर यह जिनालय स्थित है। मन्दिर का निर्माण श्री चौधरी हीरालाल जी ने कराया था। प्रारंभ में इनके पूर्वज श्री अमरसींग जी अपने घर में ही मन्दिर को रखे हुये थे। वि० सं० १९१५,१६ में चौधरी हीरालाल जी ने शिखरबन्द मन्दिर का निर्माण कराया। चौधरी हीरालाल जी का उस समय स्टेट में आदर था। मन्दिर में एक ही वेदी तथा कम समोशरण होने के कारण दर्शन का भाव लगता है। मन्दिर निर्माण के वाद प्रतिष्ठा की गई प्रतिष्ठित मूर्ति की प्रशस्ति इस प्रकार है—

सं० १९१७ वृषे माघमासे श्री शुक्लपक्षे ५ वासरे को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये परवार नयते ममलामूरी चौधरी पल्टूराम जी हीरालाल जी नमत्।

इस मन्दिर में पाषाण की ५ और धातु की ३ मूर्तियाँ है। मन्दिर की व्यवस्था श्रीमती मेनाबाई करती है। समाज द्वारा श्री चौधरी बसन्तलाल जी व्यवस्थापक हैं। मन्दिर से सम्बन्धित एक दुकान है।

श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र डेरा पहाडी

पन्नानाका जिलाध्यक्ष निवास के सामने एक छोटी-सी पहाड़ी पर यह तीर्थ क्षेत्र स्थित हैं। जहाँ ३ भव्य जिनालय बारादरी एवं विशाल प्रांगण चहर दीवारी से घिरा हुआ है। बहुत समय पहले यहाँ भागवलि और बालकिशुन नाम के विद्वान् रहते थे जिनका उस समय बहुत आदर होता था। महाराजा छत्रसाल के दरबार में इनकी बहुत अधिक प्रतिष्ठा थी। इनके सम्बन्ध में कहा जाता है कि इनकी पालकी बिना कहारों के चलती थी तथा एक वार सूखा पड़ने पर जब नगरवासियों ने इनसे पानी बरसाने की विनय की तो उन्होंने मंत्र विद्या के आधार पर भारी वर्षा की। इन्हें मंत्र विद्या सिद्ध थी इन विद्वानों के अनेकों चमत्कार प्रसिद्ध हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गाँधीचौंक में स्थित छत्रसाल चबूतरे की नींव भागवलि पाण्डे के समम में पड़ी थीं छत्रसाल ने अपने जीवनकाल में यह नींव डलवायी थी इसमें उनके समय से भागवलि पाण्डे का समय निर्धारित करते हैं तो निश्चित ही डेरा पहाड़ी के जिनालयों का निर्माण ३०० वर्ष से भी पहले का सुनिश्चित है।

पं० भागवलि और बालकिशुन इन दोनों विद्वानों को भट्टारकों की गद्दी से सम्बन्धित मानते हैं परन्तु आश्चर्य यह है कि छतरपुर के समीप भट्टारकों की गद्दियाँ सोनागिरि और ग्वालियर में रही हैं परन्तु इन दोनों गद्दियों से इनका कोई प्रमाण प्राप्त नहीं होता। छतरपुर के जिनालयों में जो हस्तलिखित शास्त्र हैं उसमें कुछ शास्त्रों में भागवलि के लिये लिखा गया यह उल्लेख मिलता है इनके द्वारा बनवाये हुये जिनालय कुन्डल पुर में है।

डेरा पहाड़ी के कम्पाउन्ड पर बहुत समय से शासन से चल रहे विवाद की समाप्ति समाज द्वारा पृथकशाला भवन बनाकर की गई है भविष्य में तीर्थंक्षेत्र का विकाश योजना बद्ध तरीके से किया जा रहा है यहाँ जैन छात्रावास, योगाश्रम एवं जैन कर्मचारियों के लिये आवास कालोनी के निर्माण की योजना है। सौन्दर्यकरण के लिये वृक्षारोपण किया जायेगा। विकाश एवं संरक्षण की दृष्टि से इस को श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी) से सम्बन्धित किया गया है। डेरा पहाड़ी कम्पाउन्ड को प्राप्त करने के लिये शालाभवन का जो पृथक से निर्माण कराया गया है उसमें इसी मन्दिर का द्रव्य लगा है। इस में चौधरी ज्ञानचन्द्र रतनचन्द्र का उल्लेखनीय कार्य रहा है।

चैत्यालय

छतरपुर नगर में जहाँ मूर्ति पूजक समाज की संख्या पर्याप्त थी वहाँ शास्त्र पूजा करनेवाली समाज भी पर्याप्त मात्रा में रही होगी। तारण स्वामी को माननेवाली समाज की उपासना के लिये नगर के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्य में एक चैत्यालय है जिसमें विशाल प्रांगण चहरदीवारी से युक्त है। लगभग ५० वर्ष पूर्व यहाँ स्थित तारण समाज मूर्ति पूजक बनी और उसने चैत्यालय में शास्त्रों के साथ मूर्तियों की प्रतिष्ठा की। कालान्तर में चैत्यालय जीर्णशीर्ण अवस्था में होने के कारण वहाँ से मूर्तियाँ, शास्त्र तथा अन्य सामग्री बड़ा मन्दिर में स्थापित कर दी और चैत्यालय बहुत समय तक खाली पड़ा रहा।

भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव वर्ष १९७४-७५ में जब धर्मशाला में महावीर शिशु मन्दिर को संचालित किया गया उस समय पृथक भवन निर्माण की चर्चा हुई और श्री सुरेन्द्र कुमार जी जिनके पास चैत्यालय की चावियाँ थी ने समाज को इस उपयोग के लिये दे दिया। जिसके निर्माण के लिये विधिवत नक्शा वनवा कर नगरपालिका की स्वीकृति से भवन बनवाने का कार्य प्रारंभ हुआ। कुछ शासकीय समस्यायें आने पर नया निर्माण कार्य बन्द कर चैत्यालय के पुराने भवन का जीर्णोद्वार कराया और उसे महावीर शिशु मन्दिर को किराये पर दे दिया गया। वर्तमान में चैत्यालय इसी उपयोग में आ रहा है। इस चैत्यालय की व्यवस्था श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर से की जाती है। भवन निर्माण में इसी मन्दिर ने द्रव्य लगाया है।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जिलाध्यक्ष कार्यालय के समीप)

लगभग २५० वर्ष पूर्व निर्मित यह जिनालय जिलाध्यक्ष कार्यालय के समीप स्थित है। उस समय जैन समाज की संख्या अधिक होगी इससे इतने विशाल मन्दिरों का निर्माण हुआ है। यह मन्दिर अक्षरु वक्षरु का मन्दिर कहलाता है क्योंकि इसका निर्माण अक्षरु वक्षरु नामक श्रावकों ने कराया था। इस मन्दिर में पाषाण की ३ विशाल तथा धातु की मूर्तियाँ स्थापित थी इस मन्दिर में स्थापित मूर्तियों के लेख निम्न प्रकार हैं "संवत् १८३९ वैशाखमासे शुक्लपक्षे १३ गुरौ श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे वलात्कार गणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाय भट्टारक श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परवार वंशोद्भव भारुमूर भारिल्लगोत्रे मंजुदास तत्भार्या खरगो तस्यात्मज सिघई वच्छरमति तस्यपत्नि रामकुंवरि तस्यपुत्र सन्तोषराय अतुल लल्लू पूरणमल्ल पौत्रमनराख नित्यं प्रणमेत् छत्रपुरमध्ये" इसी प्रकार की प्रशति सभी मूर्तियों में हैं।

कालान्तर में जब यहाँ व्यापार की स्थिति खराब होने लगी तब समाज यहाँ से व्यापार हेतु जबलपुर अमरावति सागर आदि जाकर बसने लगी तब समाज की स्थिति न्यून होने के कारण पूजा व्यवस्था की दृष्टि से यहाँ कि मूर्तियाँ बड़ा मन्दिर में स्थापित कर दी और मन्दिर खाली पड़ा रहा।

यह दुर्भाग्य की बात है कि इस जैन धर्मायतन पर कुछ व्यक्तियों ने अनधिकृत रुप से क्लव बनाकर कब्जा कर लिया है और उसमें अनैतिक कार्य होने लगे हैं। इस मन्दिर निर्माताओं के पूर्वज श्री सि० हरिश्चन्द्र सुम्मेरचन्द्र जी लक्ष्मी भण्डार जबलपुर वाले हैं। समाज एवं इनके संयुक्त प्रयाश में उस मन्दिर को अपने आधीन करने की कार्यवाही चल रही है। धर्मनिरपेक्ष भारत में यह एक अशोभनीय ही हैं जहाँ धार्मिक उपासनागृहों का उपयोग क्लव के रुप में किया जा रहा है। भारत की धर्मप्राण जनता के लिये यह सोचनीय है कि उनके उपासनागृहों का क्या इस प्रकार उपयोग किया जाना उचित है? जैन समाज के लिये तो यह कलंक की बात है ही छतरपुर की जनता जो धर्म के प्रति थोड़ी भी आस्था रखती है उसके लिये भी कलंक की बात हैं इस उपासनागृह से क्लव हटाकर जैन समाज को धार्मिक उपासना हेतु यह जैन मन्दिर तुरन्त मिलना चाहिये।

महावीर कीर्ति स्तंभ

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर के पास ही मेलाग्राउन्ड में नगरपालिका के सामने भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव वर्ष १९७४-७५ की पावन स्मृति में राज्यस्तरीय शासकीय समिति के निर्देशानुसार जिलास्तरीय

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समिति द्वारा आल इण्डिया दिगम्बर भगवान महावीर २५०० वाँ निर्वाण महोत्सव समिति देहली द्वारा तैयार डिजाइन पर निर्मित कराया गया है जिसमें भगवान महावीर के उपदेश जीवनी अंकित हैं इसके रखरखाव का उत्तरदायित्त्व जिला समिति के निर्णयानुसार नगरपालिका का है।

शिखर टौरिया

विजावर नाके के पास स्थित छोटी-सी पहाड़ी पर एक प्राचीन जैन मन्दिर हैं वर्तमान में वह खण्डहर अवस्था में स्थित हैं इसको शिखर टोरिया के नाम से जाना जाता है। जैन समाज को इस प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार कर उसे सुरक्षित करना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रशस्ति लेख

श्री दिगम्बर जैन बड़ा मन्दिर छतरपुर

१. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ७.५" चौ० ४.५"।
प्रशास्ति—सं० ११८० फागुन सुदी १५ शुक्र।

२. श्री नेमीनाथ—श्यामपाषाण पद्मासन ऊ० ३९" चौ० ३५"।
प्रशस्ति—गोलापूर्वान्वय साधुरासलद्भार्या लटकन तत्सुतौ सांतन आल्हणौ अरिष्टनेमिजिन प्रणमत: श्रेयसे सदा। संवत् १२०५ माघसुदी ५ रवौ।

३. श्रीतीर्थंकर—देशी पाषाण पद्मासन ऊ० ९" चौ० ७"।
प्रशस्ति—संवत् १२०९ सकलकीर्ति मर्हिका पंचप्रतिष्ठित।

४. श्री ऋषभनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३६" चौ० २८"।
प्रशस्ति—सं० १२७२ वर्षे माघसुदी ५ श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छ भट्टारक श्री धर्मचन्द्र जी सहनिका वीसलचन्द्र भारीनाथ सातासारग उरणथता श्री राजराव हमीरदेव।

५. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ४०" चौ० २७"।
प्रशस्ति—सं० १२७२ वर्षे माघसुदी ५ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र जी छत्रेवासी श्री पाहलराजवंस तासदागरु पार्श्वनाथ श्रीराज।

६. श्री नेमी नाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३४" चौ० २९"।
प्रशस्ति—सं० १२७२ वर्षे माघसुदी ५ श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शाह वीसलचन्द्र विसाताहरणकरण शुभार श्रीरजा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. श्री पार्श्वनाथ—पीतल पद्मासन ऊ० ४.५" चौ० ३.२५" ।
प्रशस्ति—सं० १२४८ ।

८. श्री चौवीस तीर्थंकर—ऊ० ३.२५" चौ० २.२५" ।
प्रशस्ति—सं० १२८३ ।

९. श्री चन्द्र प्रभु—मूगावर्ण पाषाण पद्मासन ऊ० ८.५" चौ० ९.५" ।
प्रशस्ति—सं० १३१० ।

१०. श्री महाबीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० ६.५" चौ० ४.५" ।
प्रशस्ति—सं० १३८९ वैशाखसुदी १३ गुरौ अग्रोतकान्वये.... ।

११. श्री नेमीनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १४२० वर्षे वैशाख सुदी २ श्री मूलसंघ भट्टारक जिनचन्द्र देव सानुनाद राज सपरिवार जज सयुक्त मातम शर्मम श्री निज शसधर मुखारं ।

१२. श्री महावीर—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० ४"
प्रशस्ति—सं० १४७३ जेष्ठसुदी १५ बुध दिने श्री काष्ठासंघे भट्टारक श्री सहस्त्रकीर्तिदेवा तत्पट्टे श्री गुणकीर्तिदेवा तद् शिष्य यशकीर्तिदेवा आर्या जेतक्षणी आर्या संजम श्री निजकर्म क्षयार्थं प्रतिष्ठतिम ।

१३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·७५"
प्रशस्ति—सं० १५२३ .... ।

१४. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·२५" चौ० ३"
प्रशस्ति—सं० १५२९ वैशाख सुदी २ गोलराज ।

१५. श्री तीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० १·२५" चौ० ·७५"
प्रशस्ति—सं० १५२९ वैशाख सुदी ३ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० २·२५"
प्रशस्ति—सं० १५२९ वर्षे वैशाख सुदी ३ ।

१७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ५' चौ० २·५"
प्रशस्ति—सं० १५३० वैशाख सुदी ११ शुक्रे ···· ···· ।

१८. श्री त्रिमूर्ति—(शान्ति कुन्थु अरह) धातु कायोत्सर्ग ऊ० ३·५" चौ० २·२५"
प्रशस्ति—सं० १५३५ ।

१९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १·५" चौ० १·२५"
प्रशस्ति—सं० १५४२ अषाढ़ सुदी ६ ।

२०. श्री ऋषभनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ११" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १५४२ वर्षे माघसुदी ११ शोभा श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री भट्टारक पद्मनन्दि तस्य····श्री जिनचन्द्र····श्री सिघई····अष्टप्रातिहार्य-सहितं प्रतिष्ठितं ।

२१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ५·५"
प्रशस्ति—सं० १५४२ वर्षे फागुन सुदी ५ गुरौ श्री गोपाचल दुर्गे महाराधिराज श्री माडच सिंह राजा श्री काष्ठासंघे भट्टारक श्री गुणनदेवः तदाम्नायेवाग्रोतकान्वये गर्गगोत्रे सामह राजा तत्भार्या कोल्हीपुत्र-४ साहणि···· ···· ।

२२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १.५" चौ० १.२५
प्रशस्ति—सं० १५४२ असाढ़ सुदो ६ ।

२३. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० ८.५"
प्रशास्ति—सं० १५४३ वर्षे वेशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यंप्रणमते । सह सुरा सा श्री ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६." चौ० १० ५"
प्रशस्ति—सं० १५४३ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र जीवराज पापड़ीवाल वस प्रणमत सुरम सरमन श्री रजा जिस संघ····।

२५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन उ० २.५" चौ० १.७५"
प्रशस्ति—सं० १५४४।

२६. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १५४५ वर्षे वैशाख सुदी ३ शुभ जिनराज मानन्द वा जिनचन्द्र जीवराज।

२७. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३.१३" चौ० ९.५"
प्रशस्ति—सं० १५४६ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल।

२८. श्री पद्मप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२.५" चौ० ९"
प्रशस्ति—सं० १५४७ वर्षे वैशाख सुदी ३ मूलसंघे भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषण····।

२९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० १.५"
प्रशस्ति—सं० १५४७।

३०. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ४०" चौ० २८"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वैशाख सुदी ३ भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल मुरायाशे संघ रजाजी।

३१. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १७" चौ० १३"
प्रशस्ति—सम्वत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमते शर्म श्री रासी जाससंघ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३२. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १२"

प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ भट्टारक श्री जिन चन्द्र देव.......।

३३. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३.२५" चौ० १०"

प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघ भट्टारक श्री जिन चन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल वीतरागाय........ प्रणमत।

३४. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० १०"

प्रशस्ति—स० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र जीवराज पापड़ीवाल।

३५. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०"

प्रशस्ति—उपरोक्त।

३६. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५.५" चौ० ११.५"

प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक जिनचन्द्रदेव तस्य जीवराज शिष्य दीबीजनत प्रणमत शुभं भवतु नित्यं प्रणमत।

३७. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११.५ चौ० २.५"

प्रशस्ति—संवत् १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघ भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव.......।

३८. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ३.२५" चौ० २.२५"

प्रशस्ति—भट्टारक जिनचन्द्र १५४८।

३९. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ७" चौ० ५"

प्रशस्ति—सं० १५ ; ९.......।

४०. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३.५" चौ० ८.५"

प्रशस्ति—सं० १५४९ वर्षे वैशाख सुदी ५ मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल नयसु रामासुर मम श्री रस्तु। तिसमध्ये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४.२५" चौ० ३"
प्रशस्ति—सं० १५४९ वरषे।

४२. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन पंचमूर्ति ऊ० ६" चौ० ५"
प्रशस्ति—सं० १५५१ वैशाख वदी ४ गुरौ मूलसंघे श्री त्रिभुवन कीर्ति दिवस जैतनी पुत्र कोलसा नित्यं प्रणमति।

४३. श्री महाबीर—धातु पद्मासन ऊ० ३.५" चौ० ३"
प्रशस्ति—सं० १५५२........।

४४. श्री महाबीर—धातु पद्मासन ऊ० ४" चौ० २.७५"
प्रशस्ति—सं० १५५९......।

४५. श्री मेरु जिनालय—धातु ऊ० ५.७५" चौ० १.७५" चारों ओर मूर्तियों
प्रशस्ति—सं० १५६०........।

४६. श्री मल्लिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १५९३ फागुन सुदी ३ प्रतिष्ठित......।

४७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १५९६।

४८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६००........।

४९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १" चौ० .५"
प्रशस्ति—सं० १६१२........।

५०. श्री तीर्थंकर........धातु पद्मासन ऊ० २.७५ चौ० १.७५
प्रशस्ति—सं० १६२४........।

५१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ०.२.५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६२६ वैशाख सुदी ९ प्रतिष्ठितन्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५२. श्री नेमीनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ. १७" चौ० १३"
प्रशस्ति—सं० १६६४ जन भट्टारक जीवराज जी श्री वृजलाल (प्रशस्ति में श्री आदिनाथ)।

५३. श्री पार्श्वनाथ—पीतल पद्मासन ऊ० ३.५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६९९ श्री मूलसंघे जलालत की मध्ये धर्म के उपदेशात् श्रो भैयालाल ।

५४. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० १.५" चौ० १.५"
प्रशस्ति—सं० १६६९ वैशाख सकलकीर्ति कर्म के क्षयात् ।

५५. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १.५"
प्रशस्ति—सं० १६६९.........।

५६. श्री सुपार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० १.७५"
प्रशस्ति—सं० १६६९.........।

५७. श्री सुपार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६७१ वैशाख.........।

५८. श्री तीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६७१ वैशाख सुदी ५ ।

५९. श्री तीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं० १६७१.........।

६०. श्री महाबीर चौवीसी—धातु ऊ० १७" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १६८८ फागुन सुदी ८ श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री शील भूषण देव तत्पट्टे शिष्य जगत भूषण देवः तत्पट्टे भट्टारक श्री जगद् भूषण देंवा तदाम्नाये परवारे भिला गोत्रे साहस भोषण साने जासोव्रत तयो पुत्र द्वौ जेष्ठ ललित राम कनिष्ठा सहोदर वल्ले तत् आत्मज सहोदर जेष्ठ युवारथ एका पुत्र तस्यो पुत्र द्वौ जेष्ठ जगत पूरन नरोत्तम् द्वे मध्ये बले सि० नित्यं प्रणमति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० २"
प्रशस्ति—सं १६९० ।

६२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० १.५"
प्रशस्ति—सं० १६९०........।

६३. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १२.५" चौ० ९"
प्रशस्ति—सं० १६९४ वर्षे वैशाख सुदी ६ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री पद्मकीर्ति पगुनदास नित्य...सा० रासो मध्ये प्रतिष्ठापितं विम्ब प्रतिष्ठितम् पा० राधमति वा भगत प्रणमति नित्यम् ।

६४. श्री अभिनन्दन नाथ चौवीसी—धातु ऊ० ११.२५" चौ० ८" ।
प्रशस्ति—सं० १७१३ वर्षे माघ सुदी १० रवौ भट्टारक पद्मकीर्ति भट्टारक सकलकीर्तित्योपदेशात् पारपदे अष्टसत्वया दिवाकर मूसका सिद्धगोत्रे सं० अहमनु भा० दयापुत्र जे० सं० हरिदास भान सुभाद्र० हीरा नित्यम् गुणले च० सं० मानिक लाल पं० सं० दयाल सं० चरन ते भा० जमुना पुत्र ननु भार्या सरजा पुत्र २ आसाजीत परदौन दुमा मो० क्रिसुना० पुत्र सं० परसीता पार्वती पुत्र खेम करण सरग सोने प्रणमति भगनाबाई माथे नमे ।

६५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १.७५" चौ० १.५ ।
प्रशस्ति—सं० १७१३ ।

६६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १.५" ।
प्रशस्ति—सं० १७१८ ।

६७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ७.२५" चौ० ४" ।
प्रशस्ति—सं० १७१८ वर्षे फागुनसुदी १ शनौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री सकलकीर्तित्युपदेशात् ब्रह्मक्षेत्र करणो नित्य प्रणमत ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३.५" चौ० २.५" ।
प्रशस्ति—सं० १७१८ वर्षे फागुनसुदी १ भट्टारक सकलकीर्ति उपदेशात् सप्रतिष्ठितम् ।

६९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १.२५" चौ० ·७५" ।
प्रशस्ति—सं० १७२६ ।

७०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० १.५" ।
प्रशस्ति—सं० १७३५.... .... ।

७१. मेरु जिनालय—धातु पद्मासन २० जिनविम्ब ऊ० १३·५" चौकोर १६" ।
प्रशस्ति—सं० १७४४ वर्षे वैशाखसुदी १२ गुरौ मूलसंघे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति देवोपदेशात् तस्य नाम्नि भानुकीर्ति नित्यं प्रणमति शुभदत्र हीरानन्द मोहनदास वेगपरान गोपालदास ।

७२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ८·५ चौ० ६.७५" ।
प्रशस्ति—सं० १७४४.... .... ।

७३. श्री पुष्पदत्त—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १३.५" चौ० १०.५" ।
प्रशस्ति—सं० १७४७ वैशाखसुदी ३............ ।

७४. श्री मुनिसुव्रतनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १३·५" चौ० १०·५" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

७५. श्री पद्मप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० ११" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

७६. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० ११" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७७. श्री चन्द्रप्रभु—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० ११"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

७८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६" चौ० ४"।
प्रशस्ति—सं० १७४८।

७९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.७५" चौ० २.५५"।
प्रशस्ति—सं० १७५५।

८०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.७५" चौ० २.५"।
प्रशस्ति—सं० १७७१।

८१. श्री चतुर्मुखी जिन बिम्ब—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० १"।
प्रशस्ति—सं० १७७२ वर्षे वैशाखसुदी ३ प्रति प्राणप्रतिष्ठा लोद महोचित समतछेति।

८२. श्री-चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० २.५" चौ० २·२५"
प्रशस्ति—सं० १७९१।

८३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १·२५" चौ० १"।
प्रशस्ति—सं० १८१४।

८४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० २·५"।
प्रशस्ति—सं० १८१४ माघसुदी १३।

८५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० ·७५" सं० १८१४।

८६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० २" सं० १८१४।

८७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० २·५" सं० १८१८ माहोवदी २।

८८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ५·५" चौ० ३" स० १८२१ चैतसुदी ८।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८९. श्री महाबीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० १७" चौ० ११"।
प्रशस्ति—सं० १८२८ वर्षे फाल्गुनमासे शुभे शुक्लपक्षे २ सोमवासरे को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते विलाडिल्यमूरे गोत्र साडिल्य मोनीलाल तस्य आत्मज रामरतन नन्नूलाल हीरालाल हजारीलाल गजाधर तस्य आत्मज दुलीचन्द्र जसवेल जीवनम् मंगलं ददातु कल्याण मस्तु।

९०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १·२५" सं० १८२९।

९१. श्री चन्द्र प्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ३·२५" चौ० २·५"।
प्रशस्ति—सं० १८३० माघसुदी १३ गुरौ भट्टारक जिनवर जी नित्यं प्रणमत।

९२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·५" सं० १८३०।

९३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·५" सं० १८३२।

९४. श्री मेरु जिनालय—धातु व्यास १६" ऊ० ३९" १६ पद्मासन मूर्तियां।
प्रशस्ति—भट्टारक महेन्द्र कीर्ति सं० १८३५ मासोत्तममासे फाल्गुनमासे ११ गुरौ परवार माहोज गोधूमूर गोइल्य गोत्र नायक उद्योत·· ···· ···· ····।

९५. श्री पार्श्वनाथ—पद्मासन धातु ऊ० २·२५ चौ० १·५" सं० १८३५।

९६. श्री चन्द्र प्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० २·५"।
प्रशस्ति—सं० १८३९ भट्टारक जिनेन्द्र भूषण वच्छामति वैशाख मासे शुक्लपक्षे १३ गुरौ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

९७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन पंच मूर्ति ऊ० ७" चौ० ४·५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे बलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक जिनेन्द्रभूषण परवारवंश मंजु नित्यं प्रणमति वैशाखमासे १३ सं० १८३९।

९८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ८·५" चौ० ४·५"।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषण परवार वंशे मंजु तत्पुत्र वच्छरमन नित्यग्रे सन्तोषराय वलल्ले रामले जिन विराजितं···· मन्दिरस्य प्रतिष्ठाकृत वैशाख मासे शुक्लपक्षे १३ तिथौ सं० १८३९।

९९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन पंचमूर्ति ऊ० ७" चौ० ४·५"।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परवारवंशे मंजु तत्र वंदत प्रणमत सं० १८३९ वैशाखसुदी १३ गुरौ।

१००. श्री ऋषभदेव—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३९" चौं० ३१"।
प्रशस्ति—सं० १८३९ वैशाखमासे शुक्ल पक्षे १३ गुरौ श्री मूलसंघं सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परवार वंशोद्भव भारुमूर भारिल्ल गोत्रे मंजुदासातद्भार्या खरगो तस्यात्मज सिंघई वच्छरमन तस्य पत्नि रामकुंवरि तस्य पुत्र सन्तोपराय अतुल लल्लू पूरण मल्ल पौत्र मनराख नित्यं प्रणमेत छत्रपुर मध्ये।

१०१. श्री ऋषभदेव—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३१" चौ० २४"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्रभूषणोपदेशात् परवार वंशोद्भवे मंजुदासाद्भार्या खरगो तस्य आत्मज सिंघई वच्छरमन तत्पुत्र सन्तोषराय द्वितीय पुत्र लल्लू तृतीय पूरनमल्ल पौत्र मनराख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नित्यं प्रणमेत छत्रपुर मध्ये सं० १८३९ वैशाख मासे शुक्ल पक्षे १३ गुरौ।

१०२. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३." चौ० २४"
प्रशस्ति—सं० १८३९ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परवार वंशोद्भव श्री भारुमूर भारिल्ल गोत्रे मंजुदासतद्भार्या खरगो तस्यात्मज सिंघई वच्छरमन तस्य पत्नि श्री राम कुंवर तस्य आत्मज सन्तोषराय द्वितीय लल्लू तृतीय पूरन मल्ल पौत्र मनराख नित्यं प्रणमेत छत्रपुरमध्ये वैशाख सुदी १३ गुरौ।

१०३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० १.५"
सं० १८४३।

१०४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.७५" चौ० १.७५"
सं० १८४८।

१०५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० १.२५"
सं० १८७२।

१०६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १.७५" चौ० १.२५"
सं० १८७२।

१०७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४.२५" चौ० २.५"
सं० १८७५।

१०८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४.५" चौ० २ २५"
सं० १८७५।

१०९. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० ११"
प्रशस्ति—सं० १८८९ मासोमासे चैत्रमासे शुक्ल पक्षे तिथौ ५ शुक्रवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये ममलामूरी वासस्यगोत्रे ......।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

११०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पदमासन ऊ० २" चौ० १.५"
सं० १८८९।

१११. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २.२५" चौ० १"
सं० १८९२....।

११२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० ८.५"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे को प्रतिष्ठतम्।

११३. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ४०" चौ० ३१"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुनमासे शुक्ल पक्षे ३ गुरु वासरे को प्रतिष्ठितम् परवार नयते डेरिया मूरी वड़कुर हरक जिजी के माथे।

११४. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३१" चौ० २४"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुनमासे शुक्ल पक्षे ३ गुरु वासरे को प्रतिष्ठितम् परिवार नयते डेरियामूरी वासल्यगोत्रे बड़कुर गोत्र विलाल तत्पुत्र सुखसींग।

११५. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०.५"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघमासे शुभे शुक्ल पक्षे २ तिथौ....।

११६. श्री चन्द्रप्रभु—मूगा पाषाण पद्मासन ऊ० १८" चौ० १३.५"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुन मासे शुभे शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे को प्रतिष्ठित परवार नयते मूरी वासल्य गोत्रे दुलारे के माथे गजहय राम।

११७. श्री अरहनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २९" चौ० २२"।
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुन मासे शुभे शुक्ल पक्षे ३ गुरुवासरे को प्रतिष्ठित श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्यम्नाये परवार नयते डेरिया मूरी वासल्य गोत्रे बड़कुर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नन्ने तत्पुत्र बड़कुर दंगली तत लघुनाती लीलाधर जी प्रणमत। श्री रस्तु।

११८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ११" चौ० ७.२५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ फाल्गुन मासे शुभे शुक्ल पक्षे ८ सोमवासरे को प्रतिष्ठितं मूल संघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते वासल्य गोत्रे डेरिया मूरी श्री बड़कुल लोटनशाह तत्पुत्र बड़कुर सुखसींग जी प्रतिष्ठितं प्रणम्यत्।

११९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ९.५" चौ० ५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये वासल्य गोत्रे डेरिया मूरी बड़कुर सुखसींग प्रतिष्ठितम् सं० १८९३ फाल्गुन मासे शुभ शुक्ल पक्ष ८ सोमवार।

१२०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १३" चौ० ७.७५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघ मासे शुभे शुक्ल पक्षे ८ सोमवासरे को लिखामिदं श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते वासल्यगोत्रे डेरिया मूरि प्रतिष्ठितं श्री बड़कुर मोहनलाल तस्य तनुज नन्नाई हीरालाल जी प्रणमत: भगवत मंगलं श्री रस्तु।

१२१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ८.५" चौ० ४.५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघ मासे शुक्ल पक्षे ८ सोमवासरे को प्रतिष्ठितं छोलामूरी चौधरी सुकण।

१२२. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ६.५ चौ० ४"
सं० १८९३....।

१२३. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६.५" चौ० ४.५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघ मासे शुक्ल पक्षे ८ सोमवासरे को

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रतिष्ठितं परवार नयते गोइल्य गोत्रे वासल्य मूरे वैशाखिया विहारी पूरन कल्याण भवतु।

१२४. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६·५" चौ० ४·५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे ८ सोमवासरे को प्रतिष्ठितं बड़कुर ध्यानदत्त पुत्र गोरेलाल प्रतिष्ठाप्प रीचरस्तु।

१२५. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ५" चौ० ३·५"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे ८ चौधरी नन्ने माथे।

१२६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ७·५" चौ० ४"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे ८ सोमवासरे को प्रतिष्ठितं चौधरी नन्ने तत्पुत्र पूरनलाल।

१२७. श्री शान्ति कुन्थु अरह—धातु कायोत्सर्ग ऊ० ६"
प्रशस्ति—सं० १८९३ माघमासे शुक्लपक्षे. ८ सोमवासरे को प्रतिष्ठितम्।

१२८. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ११" चौ० ७·५"
प्रशस्ति—सं० १८९७ वर्षे फाल्गुनमासे शुभे शुक्लपक्षे बुधवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगण सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये तेरीत्यानुसारे प्रतिष्ठितम् ग्राम सटै मध्ये परवार नयत गोत्रगोइल्ल मूर छोला डेवड़िया विहारी नित्यं प्रणमति।

१२९. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १८९९ माघशुक्ल १४ सोमवासरे प्रतिष्ठितम्।

१३०. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ६·५" चौ० ४" सं० १८९९।

१३१. श्री मेरु जिनालय (दो)—धातु १६ मूर्तियां पद्मासन ऊ० ३१" गोलाई २५"
प्रशस्ति—सं० १८९९ वर्षे चैत्रमासे शुभ शुक्लपक्षे ५, शुक्रवासरे प्रतिष्ठितं श्री मूलसंघे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

छत्रपुरमध्ये परवारनयते वासल्यगोत्रं डेरिया मूरी श्री बड़कुर ढाकन तत्पुत्र मोहनलाल ततलघु भ्राता हीरालाल नित्यं प्रणमत शुभं भवतु तस्य प्रनीतानुसारि प्रतिष्ठितं संघे ।

१३२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १२·७५" चौ० ८" ।
प्रशस्ति—सं० १९०० महोमासे शुक्लपक्षे तिथौ पचम्यां श्री मूलसंघे वलात्कारगणं सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये नग्र छत्रपुर शुभ स्थाने मध्य ममला मूरी भ्रातपुत्र हीरालाल नित्यं प्रणम्य ।

१३३. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२·५" चौ० ९·५" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते सि० रामरतन नन्नू तस्य............सं० १९०३ वैशाखसुदी ३ शुभं भवतु मंगलं ददातु ।

१३४. श्री तीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० ७·५" चौ० ५·२५" ।
प्रशस्ति—सं० १९०७ वर्षे फागुन शुक्ल पक्षे ५ गुरुवासरे को प्रतिष्ठितम् छतरपुर नग्रे डेवड़िया मूरि.........बाबूलाल जी नित्यं प्रणमत ।

१३५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ६·५" ।
प्रशस्ति—सं० १९११ वैशाखमासे शुक्ल पक्षे १३ शुक्रवासरे प्रतिष्ठितम् परवारनयते ममलामूरी गोइल्लगोत्रे डेवड़िया बाजूरा तत लघु भ्राता डेवड़िया विहारी नित्यं प्रणम्य सांदनी मध्ये ।

१३६ श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १२" चौ० ८" ।
प्रशस्ति—सं० १९११ वैशाखमासे शुभे शुक्लपक्षे ११ चन्द्रवासरे को प्रतिष्ठितम् श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सांदनीमध्ये परवारनयते गोइल्लगोत्रे छोलामूरी डेवड़िया बाजूरा डेवड़िया कल्याण सांदनीवारे मोहन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तस्य लघु भ्राता डेवड़िया विह्वारी तत आत्मज परमानन्द नित्यं प्रणमत ।

१३७. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० ११"।
प्रशस्ति—संवत् १९२८ वर्षे फाल्गुन मासे शुभे शुक्लपक्षे दोज सोमवार को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कार-गणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते कौशल्य मूरे गोत्रे भारिल्य मोतीलाल तस्य आत्मज नन्नू हीरा लाल तस्य आत्मज दुली चन्द्र वलराम माणिक लाल नित्यं प्रणमति ।

१३८. श्री मुनिसुव्रतनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० २१" चौ० १७" ।
प्रशस्ति—सं० १९२८ वर्षे फाल्गुनमासे शुभे शुक्लपक्षे २ सोमे को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते कौशल्य मूरे गोत्र भारिल्य मोती लाल तस्य आत्मज रामरतन नन्नू हीरा लाल हजारीलाल सदा प्रणमति मंगलं ददातु ।

१३९. श्री शान्तिनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० २३" चौ० २०"
प्रशस्ति—संवत् १९२८ वर्षे फाल्गुनमासे शुभे शुक्ल पक्षे २ सोम को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते कौशल्य मूरे भारिल्य गोत्रे मोतीलाल तस्य आत्मज रामरतन व हीरालाल हजारी गजाधर तस्य आत्मज दुली चन्द्र तस्य माणिक लाल जी नित्यं प्रणमति शम ।

१४०. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ३०" चौ० २०" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

१४१. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ५" चौ० ३" ।
प्रशस्ति—सं० १९२८ वैशाखसुदी..........मोतीलाल ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१४२. श्री महाबीर—धातु पद्मासन ऊ० ५" चौ० ३"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

१४३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ११·५ चौ० ८"।
प्रशस्ति—श्री शुभ संवत् बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये गोसल मूरी गंगा तस्य माता रजनी प्रतिष्ठितं सं० १९३२।

१४४. श्री ऋषभनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ९" चौ० ६"।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये गोइल्ल गोत्रे वैशाखिया मोहनलाल गणेश गोपाल प्रणमतसं० १९३२ माघ शुक्ल ९ शुक्रवासरे प्रतिष्ठित शुभं भवतु मंगलं ददातु।

१४५. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ६"।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये गोइल्लगोत्रे वैशाखिया वाजूरा छवीले नित्यं प्रणमत सं० १९३२ माघशुक्ल ९ शुक्रवासरे प्रतिष्ठितं छत्रपूर मध्ये शुभं भवतु मंगलं।

१४६. श्री महावीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० ७" चौ० ४"।
प्रशस्ति—सं० १९३२ माघमासे शुक्ल पक्षे ९ शुक्रवासरे मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये छतरपुर मध्ये प्रतिष्ठितम्।

१४७. श्री ऋषभनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ७" चौ० ४·५"।
प्रशस्ति—सं० १९३२ माघमासे शुक्ल पक्षे ९ शुक्रवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये छतरपुर मध्ये प्यारीवाई प्रतिष्ठितं नित्यं प्रणमत।

१४८. श्री चन्दप्रभु—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १६" चौ० ५"।
प्रशस्ति—श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार्याम्नाये वैशाखिया भगवानदास भागचन्द्र प्रतिष्ठितम् सं० १९३२ माघशुक्ल ९ शुक्रवासरे छत्रपुर मध्ये शुभ भवतु मंगलं ददातु ।

१४९. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० २७" चौ० २९" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्याम्नाये गोइल्य गोत्रे वैशाखिया भगवानदास तस्य पुत्रस्य पुत्र भागचन्द्र नित्य प्रणमत सं० १९३२ माघमासे शुक्ल पक्षे ९ शुक्रवासरे छत्रपुर मध्ये प्रतिष्ठितं शुभं मंगलं ददातु ।

१५०. श्री श्रेयांसनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २१" चौ० १६" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

१५१. श्री चन्दप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २१" चौ० १६" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा-चार्याम्नाये गोइल्लगोत्रे वैशाखिया मोहनलाल तस्य पुत्रस्य गणेश गोपाल नित्यं प्रणमत छत्रपुर मध्ये प्रतिष्ठितं सं० १९३२ माघमासे शुक्लपक्षे ९ शुक्रवासरे शुभं भवतु मंगल ददातु ।

१५२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३.५" चौ० ६"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये सिंघई वोदन तस्य भ्रात नन्नू हीरालाल नग्र छतर-पुर तत्रमाथे प्रतिष्ठितं सेंधपा मध्ये चैत्र सुदी ४ सं० १९३९ ।

१५३. श्री सिद्ध भगवान—धातु कायोत्सर्ग ऊ० ८.५" चौ० १३.५"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख सुदी ५ प्रतिष्ठितं नग्र छतरपुर मध्ये सवाई सिंघई रामरतन नन्नू हीरालाल हजारी प्रणमत ।

१५४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ७.५" चौ० ४.५"
प्रशस्ति—सं० १९४३ बैशाख शुक्ल ३ सिंघई रामरतन प्रतिष्ठितम् ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५५. श्री पद्म प्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११.५" चौ० ७.५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार गोत्रे सिंघई रामरतन नन्नू प्रतिष्ठितं वैशाख सुदी ३ सं० १९४३ शुभं भवतु मंगलं ददातु।

१५६. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ९" चौ० ७"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते चौधरी गंगाराम नित्यं प्रणमत मंगलं ददातु प्रतिष्ठाप्य माघ सुदी....सं० १९४३।

१५७. श्री महावीरस्वामी—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३९" चौ० ३२"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये सिंघई रामरतन नन्दलाल जी नित्यं प्रणमत शुभं मंगलं ददातु मिति वैशाख सुदी ३ सं० १९४३।

१५८. श्री महावीरस्वामी—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३४" चौ० २५"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

१५९. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० २३" चौ० १८"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्त्रती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार बंशे सर्वंछोलामूर वासल्य गोत्रे सिंघई रामलाल परमानन्द छत्रपुर व॰रे नित्यं प्रणमतः सं० १९४७ पौष शुक्ला १२ कन्जैं ग्राम मध्ये प्रतिष्ठापितम्।

१६०. श्री पुष्पदन्त—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ४०" चौ० २२"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये सवाई सिंघई हीरालाल गजाधर बृजलाल जानकी प्रसाद मूर वैशाखिया नग्र छतरपुर तत्रमाथे प्रतिष्ठितं नग्र महेवा मध्ये माघ सुदी २ सं० १९४९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१६१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ९" चौ ८.२५"
प्रशस्ति—सवाई सिंघई रामरतन नन्नू सं० १९५१।

१६२. श्री ऋषभनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १८" चौ० १४"
प्रशस्ति—श्री वी० नि० सं० २४४७ वि० सं० १९७८ माघ सुदी १२ चन्द्रे प्रतिष्ठितम् नग्र सटै मध्ये डेवड़िया फेरन तस्य पुत्र शिखर चन्द्र सांदनीवारे पंचो विच जवाहरलाल के माथे मूर ममला।

१६३. श्री शान्तिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६.२५" चौ० ४.५"
प्रशस्ति—वी० नि० सं० २४४७ सं० १९७८ माघ शुक्ल १२ चन्द्रवासरे प्रतिष्ठितम्।

१६४. श्री महावीर स्वामी—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १९७९ माघ मासे शुक्ल पक्षे १५ गुरौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नायेत् सद्दर्शनं प्रतिष्ठापितमिदं बिम्बं माथे बच्चूलाल, जगलाल, मुन्नालाल, सम्नोहनलाल, नग्र छत्रपुर।

१६५. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २२" चौ० १४"
प्रशस्ति—सं० १९८० माहो मासे शुक्ल पक्षें तिथौ ५ पंचम्यां बुधवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये छत्रपुर मध्ये चौ० मोतीलाल ममलामूरी तस्य भ्रात पुत्र हीरालाल प्रणमत।

१६६. श्री आदिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० १२"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

१६७. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४.२५" चौ० ३"
प्रशस्ति—सं० १९९६ फाल्गुनमासे शुभ शुक्ल पक्ष ४ शनिवासरे को प्रतिष्ठितम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी)

१६८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १·२५" सं० १०२५

१६९. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेतपाषाण पद्मासन ऊ० १४·५" चौ० १०·५" प्रशस्ति—सं० ११४७ कलशवर्ष सकसर ३ वायाराज।

१७०. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ५६" चौ० ५२" प्रशस्ति—श्री मद्गोलापूर्वान्वये श्रेष्ठि कूकात्मज श्रेष्ठि श्री वीसल सादनुज साधु श्री सोढस्तत्प्रिया जाहृणिस्तत्सुतः श्रेष्ठि श्री विक्रमादित्यतद्भार्या श्रीमति तत्सुतौ साधु श्री लक्ष्मादित्य कुलादित्यौ नित्यं नेमिनाथं प्रणमतः श्रेयसे भक्त्या सम्बत् १२०२ चैतसुदी १३ बुद्धे श्रीमन्मदनवर्म्म राज्ये।

१७१. श्री आदिनाथ—श्याम पाषाण पदमासन ऊ० ३३" चौ० २७" प्रशस्ति—संवत १२०८ वैशाखवदि ९ बुद्धे धर्मकारी जाल्ह-पुहिला समस्त गोठि पुलक जोगदेवा ॥श्री॥ हरि अवर्णः।

१७२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·५" स० १२११।

१७३. श्री आदिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३०" चौ० २५" प्रशस्ति—सम्वत् १२२५ फागुनसुदी ९ सोमे कीर्तिकान्तेय वासल। नामा कवली पुत्र शक्ति नित्यं प्रणमत।

१७४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० २·५" सम्वत् १२८३।

१७५. श्री चन्द्रप्रभु—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० १०" प्रशस्ति—सम्वत् १३४५ वर्षे वैशाखसुदी ९ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री प्रभाचन्द्र जी सहा विमल कोकित्पुन्यत्त श्री जवाहर सिंह सेहर प्रणम्यते।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१७६. श्री चन्द्रप्रभु—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० १०"
प्रशस्ति—उपरोक्त

१७७. श्री शान्तिकुन्थु अरह—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १·२५"
सम्वत् १४१४

१७८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·७५" चौ० २·७५"
सम्वत् १४१८

१७९. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १०"
प्रशस्ति—१४८० वर्षें वैशाखसुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेव शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमत सरमम श्री राजा जी सघे रावल लसहार मुद्राम।

१८०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४.५" चौ० ३"
सं० १५२०....।

१८१. श्री तीर्थंकर—१६ मूर्तियां धातु एक कायोत्सर्ग १५ पद्मासन ऊ० ७.५" चौ० ४.५"
प्रशस्ति—सं० १५२१ बर्षें माघसुदी २ श्री मूलसंघे श्री भुवन-कीर्तिदेव...आदिनाथं प्रणमति।

१८२. श्री तीर्थंकर—धातु कायोत्सर्ग ऊ० ४" चौ० २.२५"
प्रशस्ति—सं० १५३५ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे श्री भुवन कीर्ति श्री ज्ञानभूषण गुरुपदेशात...प्रणमति।

१८३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० २"
सं० १५४३।

१८४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० २"
सं० १५४४।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१८५. श्री विमलनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १०' चौ० ८.२५"
प्रशस्ति—सं० १५४६ माघसुदी…।

१८६. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १०" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे मूल संघे….।

१८७. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ७" चौ० ५"
प्रशस्ति—सं० १५४८….।

१८८. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १०" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १५४८…।

१८९. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२.५" चौ० ८.२५"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाखसुदी…।

१९०. श्री अरहनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११" चौ० ९"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वैशाखसुदी जीवराज….।

१९१. श्री मुनिसुव्रतनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ८" चौ० ६"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३…।

१९२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १०.५" चौ० ७"
प्रशस्ति—सं० १५४८….।

१९३. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३.७" चौ० ४"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख…।

१९४. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १७" चौ० ११"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वरस मास वैशाखसुदी ३ समधर द्रक-कजन वादरगण जासा साध जसहरण जबरी नमाय रीपाला सरगम सा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१९५. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १०" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री जिनचन्द्रदेव जयश्री भट्टारक राजेसा संघे।

१९६. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १०"।
प्रशस्ति—सं० १५४८ वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक जिन चन्द देव.................।

१९७. श्री तीर्थंकर—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १७" चौ० १३·५"।
प्रशस्ति—सं० १५४८ वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघ भट्टारक जिनचन्द देव शाह जीवराज पापड़ीवाल...........।

१९८. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ९" चौ० ७"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

१९९. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०·२५"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

२००. श्री महाबीर—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२" चौ० ९·५"।
प्रशस्ति—सं० १५४८ वर्षे वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्र देव शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यप्रणमति सदामस्तु।

२०१. श्री अजितनाथ—श्वेतपाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

२०२. श्रीं चन्द प्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२" चौ० ९·५"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

२०३. श्री चन्दप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १२" चौ० ९"।
प्रशस्ति—उपरोक्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२०४. श्री सुपार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११" चौ० ९" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२०५. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० ८" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२०६. श्री आदिनाथ—चौवीसी धातु कायोत्सर्ग पद्मासन ऊ० १०·५" चौ० ७" ।

प्रशस्ति—सं० १५७६ वर्षे वैशाख सुदी सोमे श्री काष्ठासंघे नन्दि तट गच्छे विधागणे भट्टारक श्री विशाल कीर्ति तस्य भट्टारक श्री विश्वसेन प्रतिष्ठितम् । विशेष—प्रशस्ति में कुन्थु-नाथ अंकित है ।

२०७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० २" सं० १६०१ ।

२०८. श्री चन्द प्रभु—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ८·५" चौ० ७" ।
प्रशस्ति—सं० १६१५ वर्षे माघवदी १ श्री मूलसंघे वलात्कार गणे भट्टारक पद्मनन्दि.......... ।

२०९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० २" सं० १६४८ ।

२१०. श्री चन्दप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० २·७५" चौ० २" सं० १६५० ।

२११. श्री चन्दप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ३·७५" चौ० २·७५" सं० १६६० अगहन ।

२१२. श्री आदिनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ७" चौ० ५·२५"
प्रशस्ति—सं० १६६४...... भट्टारक जिनेन्द्र भूषण........ ।

२१३. श्री शान्ति कुन्थु अरह (दो)—धातु पद्मासन ऊ० २·७५" चौ० १·७५" सं० १६६९ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२१४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १·७५" चौ० १" सं० १६६९।

२१५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·७५" चौ० २" सं० १६६९ चैतसुदी १५।

२१६. श्री पार्श्वंताथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·७५" चौ० ३" सं० १६६९ चैतसुदी १५।

२१७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० ३" सं० १६६९ चैतसुदी १५।

२१८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० ३" सं० १६६९ चैतसुदी १५।

२१९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० २·७५" सं० १६६९।

२२०. श्री मेरु (वीसतीर्थंकर)—धातु ऊ० ६·२५" चौ० २·५"। प्रशस्ति—सं० १६८४ श्री धर्मकीर्ति उपदेशात् शांतिनाथ जिनेन्द्र।

२२१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·२५" चौ० २·५" सं० १६८९।

२२२. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·२५" चौ० २·५" सं० १६९०।

२२३. श्री शान्तिकुन्थु अरह—धातु पद्मासन ऊ० ३·४" चौ० ३·२५" सं० १६९१ वर्षे माघसुदी १।

२२४. श्री मेरु (वीसतीर्थंकर)—धातु ऊ० १४" चौ० ४·७५"। प्रशस्ति—सं० १६९४ वर्षे वैशाख सुदी ६ बुधवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री ललित कीर्ति तत्पट्टे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे श्री पद्मकीर्तित्युपदेशात् भानमति मकरन्द······चन्द्रभान·······उग्रसेन भा० चम्पा पुत्र वनवारी हीरामति सं० नेमिदास जगदीश हरि किशन प्रणमति।

२२५. श्री महाबीर—धातु पद्मासन कायोत्सर्ग ऊ० ८·२५" चौ० ६"।
प्रशस्ति—सं० १७२६ वर्षे माघसुदी १३ रवौ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये तत्परम्परा भट्टारक श्री ६ पद्मकीर्ति तत्पट्टे भट्टारक श्री ६ सकलकीर्ति देवोपदेशात् सेठि पिताम्बर भार्या मथुरा तत्पुत्र ४ तेषां मध्ये सि० लक्ष्मन दास भार्या कपूरी पुत्र वाडेर प्रणमति।

२२६. श्री वीसतीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० १" चौ० ·७५ सं० १७२६।

२२७. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ११·५" चौ० ९"।
प्रशस्ति—सं० १७४४ वैशाखसुदी १ गुरुवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री पद्मकीर्तिदेव तत्पट्टे भट्टारक श्री सकलकीर्ति देव तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति उपदेशात् गोलापूर्ववंशे सिं० कमलापति भार्या मथुरा तत्पुत्र सि० सियाराम भार्याद मोती तत्पुत्र सिंघई चन्द्रभान भार्या शशिभामा सिंघई रमान भार्यात् रसामम चन्द्र भान भार्या हरिकुंवरि ते पुत्र पौत्र वा भट इदं विम्बं प्रतिष्ठितम् तस्य नित्यं प्रणमत।

२२८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पदमासन ऊ० २·६५" चौ० १·५" सं० १७४५।

२२९. श्री मेरु (वीसतीर्थंकर)—धातु ऊ० १६·७५" चौ० ५"।
प्रशस्ति—सं० १७४६ वर्षे वैशाखसुदी १२ गुरुवार श्री मूलसंघे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री सुरेन्द्र कीर्ति देवोपदेशात् सं० जामिनी……… ।

२३०. श्री मुनिसुव्रतनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १२" चौ० ९" ।
प्रशस्ति—सं० १७४७ वर्षे वैशाखसुदी ३……… ।

२३१. श्री आदिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ११" चौ० १०"
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२३२. श्री अजितनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६·५" चौ० ४·५" ।
प्रशस्ति—सं० १७७९ जेष्ठसुदी १० श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये विलाला गोत्रे सिंघई मदन जी प्रतिष्ठितम् ।

२३३. श्री विमलनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६·५" चौ० ४ २५" ।
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२३४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १" सं० १७८१ ।

२३५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·७५" चौ० २·५" सं० १७९१ ।

२३६. श्री तीर्थंकर—धातु पद्मासन ऊ० ५" चौ० ३·५" ।
प्रशस्ति—सं० १७९१ माघसुदी ५ भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तदुपदेशात् सिंघई विसाहि करापिता ।

२३७. श्री चौवीसी—धातु ऊ० ३·७५" चौ० २" सं० १७९६ ।

२३८. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० ३" सं० १८०८ चैतसुदी ९ ।

२३९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १·२५" चौ० १·५" सं० १८१४ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२४०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० १·७५ सं० १८१४।

२४१. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०·५" चौ० ६·२५"
प्रशस्ति—सं० १८१८ वर्षंतमे शुभदिने माहमासे शुक्ल पक्षे तिथौ १० भोमवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे श्री कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये श्रीराजा हिन्द पति जू के राज्य मध्ये घटोला (खटोला) परगणे ग्राम छत्रपुर मध्ये श्री सिघै भुवन तत्पुत्र जादोराई।

२४२. श्री पार्श्वनाथ—धातुपद्पासन ऊ० ११" चौ० ९"
प्रशस्ति—स० १८२३ फागुनवदी २········।

२४३. श्री पार्वनाथ—धातुपद्मासन ३·२५" चौ० २·२५ सं १८२६।

२४४. श्री चन्दप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ११" चौ० ८·७५"
प्रशस्ति—सं० १८७२ फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदा श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्यम्नाये श्री महाराजाधिराज श्री महाराज महेन्द्र महाराज नृपत विक्रमाजीत राज्ये नग्रे टेहरा तत्समीपे श्री पपौरा क्षेत्रे श्री श्रावक भारुमूर भारिल्लगोत्रे श्री सिघै वालमन तस्य भार्या कुंवर तस्यात्मज ३ जेष्ठ पुत्र श्री सिंघई सन्तोषराय मध्यपुत्र लल्लू लघुपुत्र पूरनदास सन्तोषात्मज श्री सिंघई मनलख तस्य भार्या वषन्तकुंवर तेनेन्द्र प्रतिष्ठा कारण नित्यं प्रणमति।

२४५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १४" चौ० ८"
प्रशस्ति—सं० १९२२ व्रषे अगहनमासे शुभे शुक्लपक्षे ९ चन्दवासरे को प्रतिष्ठितम्, छतरपुर में श्री मूलसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारनयते वासल्यगोत्रे वीवी कुट्टम मूरी सराफ कल्याणशाह तस्य आत्मज सराफ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुकाशी तस्यात्मज लाला वुद्धेलाल तस्य लघुभ्राता लाला परम-लाल जी नित्यं प्रणमत।

२४६. श्री आदिनाथ—श्यामपाषाण पद्मासन ऊ० २९" चौ० २२"
प्रशस्ति—सं० १९२८ वर्षे फाल्गुनमासे शुभे शुक्ल पक्षे २ सोमे प्रतिष्ठितं छतपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्रीकुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते वीवी कुट्टममूरे वासल्य-गोत्रे सराफ कल्याणदास तस्य भ्राता दुलारे तस्य आत्मज भगवानदास नित्यं प्रणमति कल्याण मस्तु।

२४७. श्री आदिनाथ—श्वेतपाषाण पद्मासन ऊ० २९" चौ० २२"
प्रशस्ति—उपरोक्त

२४८. श्री शान्तिनाथ—श्वेतपाषाण पद्मासन ऊ० ३५" चौ० २९"
प्रशस्ति—उपरोक्त

२४९. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ९·५"
प्रशस्ति—सं० १९२८ फागुनसुदी २ सोम को प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये गागदीभूरी लालचन्द्र अगन प्रणम्यत्।

२५०. श्री चन्दप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० १५" चौ० ९·५"
प्रशस्ति—सं० १९२८ व्रषे फागुनमासे शुभे शुक्ल पक्षे २ सोमे प्रतिष्ठितम् छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कारगण सरस्वती श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते वीवी कुट्टम् मूरी वासल्य गोत्रे सराफ कल्याणदास तस्य भ्राता दुलारे तस्य आत्मज मंजू तस्य भ्राता सुकाशी तस्य भ्रातात्मज भगवनदास नित्यं प्रणमति कल्याणरस्तु।

२५१. श्री मेरु (बीस तीर्थंकर) धातु ऊ० ३६·५" गोलाई ३२"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा-चार्याम्नाये चौ० नत्ते तिनके मन्दिर सम्बन्धी प्रतिष्ठितम् वैशाखसुदी ३ सं०१९३७।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५२. श्री चन्द्रप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ९·५" चौ० ६·७५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये छकौड़ी विहारीलाल नग्र छतरपुर मध्ये प्रतिष्ठितं वैशाखमासे शुक्लपक्षे ३ बुद्धे सं० १९३७।

५५३. श्री महावीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ६·७५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नायें छकौड़ी विहारीलाल देवदा मूरी तस्य माथे नग्र छतरपुर मध्ये प्रतिष्ठितम् वैशाख सुदी ३ बुध को १९३७ सं०।

२५४. श्री पार्श्वनाथ—श्यामपाषाण पद्मासन ऊ० ३९" चौ० २७"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये··हीरालाल देवदा मूरी श्री छतरपुर के वासीता माथे प्रतिष्ठापित वैशाख सुदी ३ बुद्ध को सं० १९३७।

२५५. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १२" चौ० ८.२५"
प्रशस्ति—श्री मूल संघें बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्द-कुन्दाचार्याम्नाये छकौड़ी विहारी लाल देवदा मूरी नग्र छतरपुर मध्ये प्रतिष्ठितम् वैशाख सुदी ३ बुद्धे सं १९३७।

२५६. श्री आदिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३२" चौ० २५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार जाति बुद्धे लाल तस्यभार्या नीमा नित्यं प्रणमति शिरा सं० १२४३ वैशाख शुक्ल ३ स्वद्रव्येन प्रतिष्ठापितं छत्रपुरे शुभं भवतु मंगलं ददातु।

२५७. श्री आदिनाथ—पाषाण मूगावर्ण पद्मासन ऊ० १९" चौ० १५"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

२५८. श्री पद्मप्रभु—पाषाण मूगावर्ण पद्मासन ऊ० १८" चौ० १४"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२५९. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ९·५" चौ० ७"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारवंश बुद्धदलाल तस्य भार्या नीमा नित्यं प्रणमति शिर: सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ३, स्वद्रव्येन प्रतिष्ठापितं शुभं मंगलं ददातु ।

२६०. श्री महावीर—धातु पद्मासन ऊ० ९·५" चौ० ७"
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२६१. श्री चन्दप्रभु—धातु पद्मासन ऊ० ८·५" चौ० ६·५"
प्रशस्ति—उपरोक्त ।

२६२. श्री सिद्ध भगवान—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १३·५" चौ० ९"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ३ प्रतिष्ठापितं चौधरी बुद्धदलाल प्रतिष्ठापितं ।

२६३. श्री सिद्ध भगवान—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १२" चौ० ८·५"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ३ माथे सकल पंचान प्रतिष्ठितम ।

२६४. श्री सिद्ध भगवान—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १३" चौ० ८·२५"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ६ प्रतिष्ठापितं चौधरी मोहन प्रतिष्ठापितम् ।

२६५. श्री सिद्धभगवान—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १३" चौ० ९"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ६ प्रतिष्ठितम् चौधरी कन्हैयालाल ।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (जोधाबाइ)

२६६. श्री तीर्थंकर—देशी पाषाण ऊ० ३·१२" चौ० ७.२५"
प्रशस्ति—सं० १२१३ भरालुसुत देव मथे नित्यं प्रणमतः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६७. श्री ऋषभनाथ—धातु चौबीसी ऊ० १०" चौ० ७"
प्रशस्ति—सं० १२३५ अषाढ़ वदी १० 'शुक्र प्रतिष्ठितं श्री देव सेनसंघे ब्रलगतिभार्या लखमा पुत्री कल्ला पुत्र पाहेल तत्पुत्री वंशो पुत्री भामिनी पुत्र वनली अलिका लखमा तैं मामिनी।

२६८. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३६" चौ० २७"
प्रशस्ति—सं० १२७२ वर्षे माघ सुदी ५ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भट्टारक श्री धर्मचन्द्र शाह वलोवसद चन्द्रवरसहा गमरणर्थं श्री राजराव हमीरदेव वसत।

२६९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १.५"
प्रशस्ति—सं० १५२२ माघ सुदी १३........।

२७०. श्री अनन्तनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४" चौ० ३"
प्रशस्ति—सं० १५२७ पूस सुदी ५ साहिला लाल मा० देवदास मा० सणो पू० नर प्रति जाल पं० भीखन शु० लखन श्री श्री सिद्ध कीर्ति प्रतिष्ठितं।

२७१. श्री पद्मप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३·५" चौ० १०"
प्रशस्ति—सं० १५४२ वर्षे वैशाख सुदी ९ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेवा शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमत सरगम श्री राजात्रास संघ सहलहरं सुहामा।

२७२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० ९·२५"
प्रशस्ति—१५४८ वैशाख सुदी ९ श्री मूलसंघ भट्टारक जी श्री जिनचन्द्रदेवः शाह जीवराज पापड़ीलाल नग्र प्रणमति सरमम श्री राजीजिस सहोमुक्त सहर मुड़ासा।

२७३. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १३·५" चौ० ८·२५"
प्रशस्ति—सं० १५४८ वरष वैशाख सुदी ३ श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे भट्टारक जी श्री जिनचन्द्रदेव.......।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२७४. श्री ऋषभनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० १३"
प्रशस्ति—श्री सं० १५५५ वैशाख सुदी १ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिनचन्द्रदेव शाह जीवराज पापड़ीवाल नित्यं प्रणमति सोहा राम रासागये संघारावल।

२७५. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० १३"
प्रशस्ति—उपरोक्त।

२७६. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·५"
प्रशस्ति—१५५७ वर्षे श्री मूलसंघ........।

२७७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·७५
सं० १६१३।

२७८. श्री संभवनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३·५" चौ० २·५"
प्रशस्ति—गोपालपाद १६३०।

२७९. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० २" सं० १६६३।

२८०. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·२५" सं० १६८९।

२८१. श्री महाबीर—धातु पद्मासन ऊ० १२" चौ० ८"।
प्रशस्ति—सं० १७४४ वर्षे वैशाख सुदो १२ गुरुवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भ० पद्मकीर्तिदेव तत्पट्टे भ० श्री सकलकीर्तिदेव तत्पट्टे भ० श्री सुरेन्द्रकीर्ति देवोपदेशात् गोलापूर्व वंशे सिंधई कमलापति भार्या मधुरान तत्पुत्र सि० मायाराम माधात मातात्पुत्र सि० जामिनी लाल भार्या सतिसोमा सि० चन्द्रभान भार्या हरि कुंवर ते नित्यं प्रणमति।

२८२. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ५" चौ० ३·५"।
प्रशस्ति—सं० १७४६ माघसुदी ६ मूलसंघे श्री नू जनमत गच्छ श्री वास हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२८३. कुन्थुनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० ४" ।
प्रशस्ति—सं० १८१८ वर्षे आषाढ़ सुदी १२ श्री मूलासींग ।

२८४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २·५" चौ० १·५" सं० १८३० ।

२८५. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन (पद्मावतिपर) ५·५" व्यास ८·५" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दा श्री भट्टारक महेन्द्रकीर्ति देव जी तद् रत्ना से सिंघई लोकमन मि० फा० व० १२ सं० १८३५ ।

२८६. मानस्तंभ—पीतल पद्मासन ऊ० ३·७५" व्यास २·२५" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघ ब० ग० श्री भट्टारक महेन्द्र कीर्ति देव जी तदाम्नाये सि० किसन १८३५ ।

२८७. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २१" चौ० १७" ।
प्रशस्ति—सं० १९०७ अघेणमासे शुभे शुक्ल पक्षे ५ भृगुवासरे प्रतिष्ठितम् छत्रपुर नगरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते………… ।

२८८. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० १०" ।
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारवंश बड़कुल मनोरैं तस्य भार्या सुखरानी प्रतिष्ठापितं सं० १९३० वैशाख शुक्ल ३ शुभं भवतु मंगलं ददातु ।

२८९. श्री नेमी नाथ—धातु पद्मासन ऊ० १०" चौ० ७" ।
प्रशस्ति—सं० १९३२ माघ मासे शुक्लपक्षे ९ शुक्रवासरे छत्रपुर मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये वैशाखिया वोदन पूरन विहारी लाल प्रतिष्ठितं नित्यं प्रणमतः ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर छतरपुर

२९०. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ४१" चौ० ३१"। प्रशस्ति—सं० १२०३ माघबदी ८ गुनावाला पण्डित त्रिकाली पण्डित देवकीर्तिनये प्राकृत चक्रवर्ती पण्डित श्री माणिक्यनन्दी देवनिष्ठ नेमि प्रणमति। वलादेव लंदीष अवधीप वर्मचन्द श्री की सत्य श्री पद्म श्री।

२९१. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३३" चौ० २८"। प्रशस्ति—सं० १२७२ माघसुदी १ मूलसंघे सरस्वती गच्छे सिघई श्री धरमचन्द्र शाह थान्स जी सत्यन्त सुलारी जी सहाय करें।

२९२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० १०"। प्रशस्ति—सं० १५२५............।

२९३. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १०"। प्रशस्ति—सं० १५४५............।

२९४. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० १०"। प्रशस्ति—सं० १५४५ वैशाख सुदी ३............।

२९५. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० १६" चौ० ११"। प्रशस्ति—उपरोक्त।

२९६. श्री पार्श्वनाथ—पीतल पद्मासन ऊ० ४·५" चौ० ३"। प्रशस्ति—१७२५ वर्षे अगहनवदी ५ शुक्रवासरे श्री भट्टारक जी सकलकीर्तित्पदे शान्तनाथ प्रणमति।

२९७. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६" चौ० ३"। प्रशस्ति—मिति चैत्रवदी ८ सं० १८६९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२९८. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १९·५" चौ० १२"। प्रशस्ति—सं० १८८३ चैतसुदी १२ गुरौ श्री पार्श्वनाथ जी जी को प्रतिष्ठापयतु।

२९९. श्री आदिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ३०" चौ० २६" प्रशस्ति— सं० १८८३ चैतसुदी १२ गुरौ को श्री श्री ऋषभनाथ जी की प्रतिमा प्रतिष्ठापितम् श्री वजाज मोतीराम हीरालाल मानिकलाल।

३००. श्री महाबीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० १२" चौ० ८"। प्रशस्ति—सं० १८८२ चैतसुदी १३ गुरौ कोश्री जिन प्रतिमा करापितं वजाज दान० साहित्याचार्यानु श्री वालचन्द नाम्ना तस्य पुत्र जेष्ठ मोती द्वितीय हीरालाल तृतीय मानिकचन्द्र चतुर्थं तुलसीराम पंचम पल्टू तैं प्रतिष्ठापितम्।

३०१. श्री महावीर स्वामी—धातु पद्मासन ऊ० १४" चौ० ९" प्रशस्ति—उपरोक्त

३०२. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन ऊ० १२" चौ० ८" प्रशस्ति—उपरोक्त

३०३. श्री नेमीनाथ—श्यामपाषाण पद्मासन ऊ० १३" चौ० १३" प्रशस्ति—सं० १८९६ वैशाख सुदी ११ बुधवार श्री मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये प्रभु श्री नेमीनाथ जी को पधराई श्री दान० राजगढ़ बारेलाल आत्मज श्रीलाला मोतीलाल हीरालाल जी शुभं भवतु।

३०४. श्री आदिनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २२" चौ० ६·२५" प्रशस्ति—सं० १८९९ चैतशुक्ल ५ शुक्रवार श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये नग्र छतरपुर मध्ये मडवैया परवारनयते भ्राता ५ जेष्ठ भ्रात मोतीलाल

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तत्पीछे हीरालाल तत्पीछे मानिकलाल तत्पीछे तुलसीदास तत्पीछे पल्टूलाल तस्यपुत्र मोहन तथा लालदीवान तथा सुखसींग व जवाहिरलाल नित्यं प्रणमतु श्रीराजा परतापसिह राजमध्ये।

३०५. श्री नेमीनाथ—श्यामपाषाण पद्मासन ऊ० २०" चौ० १८"
प्रशस्ति—सं० १९१४ वृषे माघमासे शुभ शुक्लपक्षे ५ शुक्रवासरे को प्रतिष्ठितम् नग्र छतरपुर मध्ये श्री मूलसंघे वलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवार नयते सि० वादीलाल आत्मज कल्याणलाल तत् लघुभ्राता सि० उमराव इति प्रतिष्ठापितम्।

३०६. श्री नेमीनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ९" चौ० ५.५"
प्रशस्ति—सम्वतसरे १९१७ फाल्गुन शुक्ल ५ शुक्र वासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री परवार भासमूर भारिल्ल गोत्रे सि० पल्टूराम जी तस्य पुत्र चुन्ने लालजी प्रणमत।

३०७. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० २१" चौ० १६"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये परवार जाति सि० चुन्ने तत्पुत्र दुलीचन्द तस्य भार्या दरऊ उदलैया प्रतिष्ठितं संवत् १९४३ वैशाख शुक्ल ३ शुभं भवतु मंगलं ददातु।

३०८. श्री महावीरस्वामी—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० ९.५" चौ० ५"
प्रशस्ति—सं० १९४३ वैशाख शुक्ल ३ प्रतिष्ठाप्य चुन्नेलाल।

३०९. श्री नेमीनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ८" चौ० ५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये दुलीचन्द्र तस्य भार्या प्रतिष्ठापितं सं १९४३।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३१०. श्री सिद्धभगवान्—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १०" (दो मूर्ति)
प्रशस्ति—सं० १९४८ फाल्गुनमासे शुभे शुक्ल पक्षे ७ को प्रतिष्ठितम् स० सि० चुन्ने दुलीचन्द्र ।

३११. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ३" चौ० १·५"
प्रशस्ति—अवाच्य ।

श्री दिगम्बर जैन पार्श्वनाथ मन्दिर (हटवारा) छतरपुर

३१२. श्री पार्श्वनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १४" चौ० ८"।
प्रशस्ति—सं० १५४८ वैशाख मासे २ सोमवार मूलसंघे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये............ ।

३१३. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० २" चौ० १" ।
प्रशस्ति—सं० १५००............ ।

३१४. श्री पार्श्वनाथ—धातु पद्मासन ऊ० ६' चौ० ३" ।
प्रशस्ति—सं० १५२२............ ।

३१५. श्री चन्द्रप्रभु—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १५" चौ० १२" ।
प्रशस्ति—सं० १९०७ माघमासे शुक्लपक्षे १२ शुक्रवासरे.... ।

३१६. ऋषभनाथ—धातु कायोत्सर्ग ऊ० १६" चौ० ५"
प्रशस्ति—सम्वत् १९१७ वृषे माघमासे शुक्लपक्षे ५ को प्रतिष्ठितं छतरपुर मध्ये परवार नयते ममलामूरी चौधरी पल्टूराम जी हीरालाल जी नमत् ।

३१७. श्री अजितनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० २२" चौ० १६"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे परवार वंशे ममलामूर गोइल्लगोत्रे हीरालाल चौधरी प्यारे लाल प्रतिष्ठापितं सं० १९२२ ।

३१८. श्री शान्तिनाथ—श्वेत पाषाण पद्मासन ऊ० १९" चौ० १५"
प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतो गच्छे परवार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वंशे ममलामूर गोइल्लगोत्रे चौधरी हीरालाल तस्य पत्नि वहोरी सं० १९२७।

३१९. श्री पार्श्वनाथ—श्याम पाषाण पद्मासन ऊ० ३८" चौ० २४" प्रशस्ति—श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे श्री कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये परवारवंशे ममलामूर गोईल्ल गोत्रे चौधरी हीरालाल अमरसींग प्रतिष्ठापितं वैशाख शुक्ल ३ सं० १९३७ श्री पार्श्वनाथ स्वामी ददातु नित्यं प्रणमति शिरः।

श्री दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र डेरा पहाड़ी छतरपुर

३२०. श्री पार्श्वनाथ—देशी पाषाण कायोत्सर्ग ऊ० ५ फीट। प्रशस्ति—साधु भालू पुत्री सुप्पा रुपा विदे श्री पार्श्वनाथ प्रणमति सदा। सं० ११४९।

३२१. श्री सुपार्श्वनाथ—देशी पाषाण कायोत्सर्ग ऊ० ५ फीट। प्रशस्ति—गोला पूर्वान्वये सोढ़ं भार्याभ्यां २ छुलपुत्र नीने श्री शान्तिनाथ प्रणमति सदा सं० ११४९।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री दिगम्बरजैन बड़ा मन्दिर छतरपुर

१. पीतल गोल-आकार

संवत् १२१९ जेष्ठ सुदी १० सोमे श्री मूलसंघें बलात्कार-गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये खंडेलवाल वंसे विलाला गोत्रे सिघई मल्ल जी प्रतिष्ठित वृन्द्रावती कवने दया-गमस्योपदेशणाम् ।

२. पीतल-गोल-आकार

संवत् १३१० माह सुदी ५ गुरौ मूलकलंकणेरनद्याम्नाये वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नायेन भट्टारक श्री नरेन्द्रकीर्ति तदाम्नाये खंडेलवालानये सादगोत्रे संसक पाटणी गोत्रे सम्पतदास प्रतिष्ठाप्पां अजमेर गोत्रे श्रावक श्री नित्यं प्रणमति ।

३. पीतल-गोल-सिद्ध चक्र यंत्र

संवत् १३४२ वर्षें फागुण सुदी २ शुक्रे श्री मूलसंघे भट्टारक देवेन्द्र कीर्ति तत्पट्टे भ० श्री क्षेमकीर्ति गुरुपदेशात् मिताराजसी सुत रणयदास सिद्ध चक्रयंत्र नित्यं प्रणमति ।

४. पीतल-गोल-दशधर्म यंत्र

संवत् १५०९ फा० व १० मू० सं० भ० धर्मचन्द्रोपदेशात् तत्शिष्य भ० कनक सागर जिननमति ।

५. ताम्बा-चौकोर-ऋषिनन्दि-यंत्र

संवत् १५२१ वर्षे फाल्गुन सुदी ५ गुरौ मूलसंघे भट्टारक श्री सिंह कीर्ति देव नाम्ना दलंपकं कुकान्वये साधुधारि मलद्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सिल्ले ते श्री षोडसवर्षं ऋषनन्दी यंत्र प्रतिष्ठापितं लिखितं पक्ति।

६. पीतल-गोल

संवत् १५४६ माहोसुदी ८........

७. ताम्बा-चौकोर-सिद्ध चक्र यंत्र

संवत् १५८० कार्तिक वदी ११ रलो श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जिन चन्द्र देवा यदुवंशे........

८. ताम्बा-गोल

संवत् १६७८ वर्षं माघवदी ३ शुक्रे श्री मूलसंघे भट्टारक श्री यशकीर्ति स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ललितकीर्ति तत्पट्टे मंडला श्री चार्यं श्रीश्चक्रकीर्ति तत्पट्टे श्री वीर्यं श्री चन्द्रकीर्ति तदुपदेशात् गोलापूर्वान्वये चन्देरिया नाम गोत्र साहु समोखन भार्या लोगसिरि पुत्र वसंयानाथ सा भगन साहिर शीश सहोदर भार्या लालमति।

९. ताम्बा-चौकोर-सम्पग्ज्ञानयंत्र

संवत् १६८२ वर्षें माघवदी १ भ० ललितकीर्ति पट्टे भ० धर्मंकीर्ति गुरुपदेशात् गोलापूर्वान्वये साहरीपुत्र वनवारी जी पुत्र अनन्ते भार्यापुत्र हरिवंसे नमति।

१०. ताम्बा-चौकोर

संवर्त् १६८७ वर्षे वैशाख सुदी ३ मूलसंघे वलात्कार गणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री धर्मंकीर्ति देवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री शीलभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगदभूषणदेवा स्तदाम्नाये गोलारातोन्वय अजयपुहिला गोत्रे साधु जासेव भार्याअसति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आसातत्पुत्र छत मगद मल्लौ तत्र मंगद भार्या गंगा तत्पुत्राद पूरन माधौ खेम करण रामदास राजमल्ल नराहमु ऐतेषां मध्ये मरक देवो नित्यं प्रणमति ।

११. ताम्बा-चौकोर

संवत् १६८९ वर्षे जेष्ठ सुदी ४ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री ज्ञानभूषणदेवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगद् भूषणदेवा............ गोलापूरता पुलहागोत्रे पण्डित श्री घाघव भार्जा सप्तपुत्र ४ तिलोल वत्सुत माऊनवादनुत माईन भा० सहि हो पुत्र......

१२. पीतल-गोल-सम्यग्दर्शन

संवत् १६९३ वर्षे माघवदी १ वासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक सुरेन्द्रकीर्ति श्री तत्पट्टे भ० जितेन्द्रकीर्ति तत् भ० देवेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य पण्डित गुपाल नित्यं प्रणमति ।

१३. पीतल-गोल

संवत् १६९४ वैशाख वदी ६ बुधवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भ० श्री देव कीर्ति देवा शिरा सोही ।

१४. ताम्बा-चौकौर

संवत् १६९७ वर्षे वैशाख सुदी ८ रवौ श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री धर्मकीर्ति देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री शीलभूषण देवा स्तत्पट्टे भट्टारक श्री ज्ञानभूषणोपदेशात्तत्पट्टे भट्टारक श्री जगद भूषण देवा तदाम्नाये गोलाकारामिठौण कुसाडिहागोत्रे संधेन पात भा० रमा तत्पुत्रौ दौल खमली संख भ० सूर्यदेव तत्पुत्र ४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उग्रसेन ताराचन्द हरिख सुनिकन्द भा० राइवदे पुत्र जोगेमल्ल तासहिमती पुत्र जगदेव जा० हि० भा० तीसे वीर दास गाही नादे पु० रति हानि जा० नामक वनि हमीरसेनि जा० इन्द्रावती एतेषां मध्धे ससकरनित्यं प्रणमति।

१५. पीतल-गोल दशलक्षण धर्म यंत्र

संवत् १७३५ वर्षे माघसुदी ५ श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक जगद्भूषण भ० विश्वभूषण भ० श्री देवेन्द्र भूषण तदाम्नाय गोल सिंगारे सा भोज सा जैनपति सागोवल सा जातो संघपते तां मध्य सात्रानुरग जैन यंत्र प्रति प्रकाशोचिता नित्यं प्रणमति।

१६. पीतल-गोल-दशलक्षण यंत्र

संवत् १७६६ माहसुदी ६ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री जगत-कीर्ति स्तदाम्नाये चांदरवेड़ी मध्ये वघेरवालान्वये मडागोत्रे संग श्री किसनदास तेन प्रतिष्ठा कादापिता।

१७. ताम्बा चौकोर

संवत् १७७३ वर्षे फाल्गुनमासे शुक्लपक्षे २ शनिवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक श्री विश्व भूषण देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री देवेन्द्र भूषण देवास्तत्पट्टे भट्टारक श्री सुरेन्द्र भूषण देवास्ततपट्टे भट्टारक श्री लक्ष्मी भूषण देवा स्तदाम्नाये गोला रारान्वये खरौवा वंशे सोहान गोत्रे शाह जगदीश भार्या कल्याण देवा तत्पुत्रौ २ जेष्ठ शाह मकरंद भार्या समापुत्रो ३ जेष्ठ शाह जादे भार्या क्षमावती पुत्र २ कमलापति भा० दरस पुत्रौ द्वौ प्र० भोगराज द्वि० जगवंत राई शाह जादे द्वि० राईमति पुत्र ४ प्र० शाह सवसुख भा० के सरिदे पु० १ अमर सिंह द्वि० शाह जगनाथ भा०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुरुपा चि० सालिगराम भा० जयको च तपा चन्द्र मकरेद छि० पुत्र शाह परसोत्तम भार्या ज्ञानमति पु० मनसुख भा० ऊजो पुत्र १ भवानीदास तत मकरंदसा चि० पु० श्री पति भा० सुवेश कुवंरि पुत्र २ प्र० हीरानन्द शुभकरण जगदीश पुत्र द्वि० कपाराम भार्या मनोहर देव पु० अन्तरुप्प तेषाम् मध्ये शाह जादो तेन यंत्र प्रतिष्ठा कारापिता सनित्यं प्रणमति । श्री पण्डित कृपारामोपदेशेन ।

१८. ताम्बा गोल सम्यक ज्ञान यंत्र

प्रशस्ति-उपरौक्त प्रकार।

१९. ताम्बा-गोल

संवत् १७९‍ः वर्षे फाल्गुनसुदी अष्टमी रविवासरे श्री मूलसंघे भट्टारक देवेन्द्रकीर्ति तत्पटे भ० श्री क्षेमकीर्ति त्पुपदेसाद लिखा श्री लाल मोहन लाल इदमिदं यत्र नित्यं प्रणमति ।

२०. पीतल-गोल-सिद्ध चक्र यंत्र

संवत् १७९६ वर्षे मार्गसुदी १२ माचोरज श्री राजवर्तेन प्रतिष्ठितं करापितमिदं नत्र नय माह वहरामा भरो छत्रपुर नग्रे ।

२१. पीतल-गोल-दशधर्म यंत्र

संवत् १७९८ वर्षे माघवदी १ रविवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भ० सुरेन्द्र कीर्ति जी तत्पट्टे भ० जिनेन्द्र कीर्ति भ० देवेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य उदित गोपाल नित्यं प्रणमति ।

२२. पीतल-गोल सोलह कारण यंत्र

संवत् १७९९ माघवदी १ रविवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे श्रीकुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्रीसुरेन्द्रकीर्ति तत्शिष्य पण्डित भीमसेन नित्यं प्रणमति ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२३. ताम्बा-गोल

संवत् १८३२ मिति मार्गसुदी १३ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये पौरपट्टे चौधरी नंदे दास प्रतिष्ठितम् ।

२४. पीतल-गोल

त्रयामद्य संवत् १८३९ वर्षे नाम जेष्ठवदी २ परवार वंस श्री शाह मंजू तत्पुत्र वच्छरमन तत्पुत्र नय सन्तोष सारा जातमाहि पूरनमल तत जत्रा रननीयत शुत्र भवति मंगल कारकस्तकल्याणण्हम् ।

२५. ताम्बा-गोल-सम्यक ज्ञान यंत्र

श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परिवारवंसे मंजु तत्पुत्र''''वच्छरमति भारुमूर पुत्र सन्तोष राय लल्लू पूरणमल्ल जिन विधानं जिनयत्राणां प्रतिष्ठापितं''''नुसारेण सं० १८३९ वैशाख सुदी १३ गुरुवासरे ।

२६. ताम्बा-गोल दशलक्षण यंत्र

मूलसंघे सरस्वती गच्छे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषण परवार वंसे मंजु श्रावक तत्पुत्र वछरमति भारुमूर भारिल्ल गोत्रे परिवारवंस वछरमति तत्पुत्र सन्तोषराय द्वितीय लल्लू तृतोय पूरनमल्ल परमितात्त जिनमन्दिरस्य प्रतिष्ठायता संवत् १८३९ मिति वैशाखसुदी १३ गुरुवासरे ।

२७. ताम्बा-गोल सम्यक चरित्र

श्री मूलसंघे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक श्री जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् परिवार वंसे मंजु तत्पुत्र वछरमति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भारुमूर तत्पुत्र सन्तोषराय व लल्लू पूरणमलेण जिन तेषाम् यत्रेणां मन्दिराय प्रतिष्ठा कृता न नातारेण स० १८३९ वैशाखमासे १३ गुरुवासरे।

२८. ताम्बा-गोल-सोलह कारण यंत्र

संवत् १८९३ फाल्गुनसुदी २ रविवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भ० श्री सुरेन्द्रकीर्ति जी तत्पट्टे तत्शिष्य पण्डित भीमसेन इदं लिखाममोहन काक जी लिख्यते।

२९. ताम्बा-गोल-दशलक्षण

संवत् १८९३ फागुनसुदी २ रविवासरे श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये इदं यंत्रं लिखा मंत्री वड़कुर ढाकन तत्पुत्र श्री मोहनलाल माथे।

३०. पीतल-गोल-सम्यक ज्ञान यंत्र

इदं ज्ञानयंत्रं प्रतिष्ठापितं सिघै रामरतन नन्नू मिति आश्विन कृष्ण ५ संवत् १९३८।

३१. पीतल-गोल-चरित्र यंत्र

इदं चारित्र यंत्र प्रतिष्ठापितं सिघै रामरतन नन्नू लाल मिति आश्विन कृष्ण ५ संवत् १९३८।

३२. पीतल गोल सम्यकदर्शन यंत्र

इदं यंत्रं प्रतिष्ठापितं सिघै रामरतन नन्नू आश्विन कृष्ण ५ संवत् १९३८।

३३. ताम्बा चौकोर श्रुतस्कन्ध यंत्र

इदं श्रुतस्कन्ध यंत्र माथै सिघै रामरतन नन्नू प्रतिष्ठापितं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३४. पीतल गोल दशलक्षण यंत्र

संवत् १९९८ वर्षे माघवदी १ रविवासरे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक श्री सुरेन्द्र कीर्ति जी तत्शिष्य पण्डित भीमसेन नित्यं प्रणमति।

श्री दिगम्बर जैन मन्दिर (चौधरी)

३६. अचल यंत्र ताम्बा चौकोर

संवत् १५८० वर्षे कार्तिक सुदी १३ श्री मूलसंघे भ० श्री श्रुतचन्द पाटणी गोत्रे............।

३७. ताम्बा गोल

संवत् १६४६ वर्षें चैतवदी २ गुरो श्री मूलसंघे भा० श्री जसकीर्ति तत्पट्टे भ० श्री ललित किर्ति उपदेशात् गोलापूर्वान्वये संघनो पुत्र संरूप भार्या मति तयो पुत्र सुचिरवासे से पु० वदति।

३८. ताम्बा गोल

संवत् १७४२ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे अष्टम्णो शनिवासरे श्री मूलसंघ सरस्वती गच्छे वलात्कार गणे श्री कुन्द-कुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री जगद भूषणदेवा तदाम्नाये खर-वान्वये जनोरिय गोत्रे शाह भीमसेनि भार्यामनो तत्पुत्र सांधू ते इदं यंत्र कारित नित्य प्राणमति। लिखित मिदं यंत्रं श्री हेमरा जैन।

३९. पीतल गोल सम्यक् चारित्र

संवत् १७४४ वर्षें वैशाख सुदी १२ गुरो श्री मूलसंघे बलात्कार गणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भ० सकल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कीर्तिदेवतत्पट्टे भ० सुरेन्द्रकीर्ति देवोपदेशात् गोलापूर्ववंसे सं० जामनि भा० सं० चन्द्रभान नित्यं प्रणमति।

४०. पीतल गोल अचल यंत्र प्रशस्ति उपरोक्त।

४१. पीतल गोल सम्पक ज्ञान प्रशस्ति उपरोक्त।

४२. पीतल गोल सोलह कारण यंत्र

संवत् १७४६ माह सुदी ६ चंखिडी मध्ये श्री मूलसंघ भट्टारक श्री जागत्कीर्ति स्तदाम्नाये वघेरवालान्वये मआ गोत्रे शाह नेतमति तस्यपुत्र............प्रतिष्ठा कारिता शाह नहुवि प्रणमति।

४३. ताम्बा गोल सम्यकज्ञान

संवत् १७४६ श्री मूलसंघे भट्टारक श्री सुरेन्द्रकीर्ति।

४४. पीतल गोल

संवत् १८७२ वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदाम् गुरुवासरे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वती गच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भारु मूर भारिल्ल गोत्रे श्री सिधै सन्तोषराय तस्य भार्या रामकुवंरि तपो पुत्र मन राख प्रनमति नित्यं।

श्री दिगम्बर जैनमन्दिर (जोधाबाई)

४५. पीतल गोल

संवत् १७२५ वर्षे अगहनवदि ५ शुक्रे श्री मूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छें कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये भट्टारक श्री ६ सकलकीर्ति देव प्रणमति नित्य श्रीरस्तु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४६. पीतल गोल

संवत् १७५४ वर्षे वैशाख सुदी १२ गुरौ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये तत्पाये भट्टारक श्री धर्मकीर्ति तत्पट्टे भ० पद्मकीर्ति तत्पटे भ० श्री सकलकीर्ति देवातत्पटे भ० सुरेन्द्रकीर्ति देवोपदेशात् सप्रतितम् भा० सत्यमामा।

४७. पीतल गोल

संवत् १७५५ वैशाखवदी १२ गुरौ श्रीमूलसंघे वलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये भट्टारक सकलकीर्ति देवतत्पटे भ० सुरेन्द्र कीर्ति देवोपदेशात् गोलापूर्वं वंसे स जामनी भानसा चन्द्रभान नित्यं प्रणमति।

४८. ताम्बा गोल दशलक्षण

प्रशस्ति क्रमांक १७ के अनुसार।

४९. ताम्बा गोल

सवत् १९३२ मितिमाघसुदी १३ श्री मूलसंघे वलात्कार गणे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये पौरपट चौधरी नोनेदास प्रतिष्ठतम्।

५०. पीतल गोल-दशलक्षण

इदं यंत्र प्रतिष्ठापितं सिघै रामरतन नन्नू मिति आश्विन कृष्ण ५ संवत् १९३८।

श्री दिगम्बर जैन नया मन्दिर

५१. ताम्बा गोल सोलह कारण

श्री मूलसंघे वलात्कारगणे कुन्दकुन्दा चार्याम्नाये श्री भ० श्री जिनेन्द्र भूषणोपदेशात् ज्ञानस्य भारुमूर भारिल्ल गोत्रे श्री

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंजूदास तस्य पुत्र वछरमन त० सन्तोष मनसुख लल्लू पूरणमलल्ल नित्यं प्रणमति सं० १८३९।

५२. पीतल गोल णमोकार यंत्र

संवत् १८९९ चैतसुदी ५ शुक्रे श्री मूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये श्री मोतीलाल हीरालाल नित्यं प्रणमति।

५३. पीतल गोल दशलक्षण

प्रशस्ति-उपरोक्त

५४. ताम्बा गोल सम्यकज्ञान

श्रीमूलसंघे बलात्कागणे सरस्वतीगच्छे कुन्दकुन्दाचार्याम्नाये फतेपुर मध्ये परवार गोत्रे श्री अजधैस्तत्पुत्र चुरामनि प्रणमति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३८९४

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi